यहेजकेल

प्रस्तावना

1 1-3मैं बूजी का पुत्र याजक यहेजकेल हूँ। मैं देश
निष्कासित था। मैं उस समय बाबुल में कबार नदी
पर था जब मेरे लिए स्वर्ग खुला और मैंने परमेश्वर का
दर्शन किया। यह तीसवें वर्ष के चौथे महीने जुलाई का
पाँचवां दिन था।

राजा यहोयाकीम के देश–निष्कासन के पाँचवें वर्ष
और महीने के पाँचवें दिन यहेजकेल को यहोवा कासन्देश
मिला। उस स्थान पर उसके ऊपर यहोवा कीशक्ति
आई।

यहोवा का रथ और उसका सिंहासन

4मैंने (यहेजकेल) एक धूल भरी आंधी उत्तर से आती
देखी। यह एक विशाल बादल था और उसमें से आग
चमक रही थी। इसके चारों ओर प्रकाश जगमगा रहा
था। यह आग में चमकते तप्त धातु सा दिखता था।
5बादल के भीतर चार प्राणी थे। वे मनुष्यों की तरह
दिखते थे। 6किन्तु हर एक प्राणी के चार मुख और चार
पंख थे। 7उनके पैर सीधे थे। उनके पैर बछड़े के पैर
जैसे दिखते थे और वे झलकाये हुए पीतल की तरह
चमकते थे। 8उनके पंखों के नीचे मानवी हाथ थे। वहाँ
चार प्राणी थे और हर एक प्राणी के चार मुख और
चार पंख थे। 9उनके पंख एक दूसरे को छूते थे। जब वे
चलते थे, मुड़ते नहीं थे। वे उसी दिशा में चलते थे जिसे
देख रहे थे।

10हर एक प्राणी के चार मुख थे। सामने की ओर
उनका चेहरा मनुष्य का था। दायीं ओर सिंह का चेहरा
था। बांयी ओर बैल का चेहरा था और पीछे की ओर
उकाब का चेहरा था। 11प्राणियों के पंख उनके ऊपर
फैले हुये थे। वे दो पंखों से अपने पास के प्राणी के दो
पंखों को स्पर्श किये थे तथा दो को अपने शरीर को
ढकने के लिये उपयोग में लिया था। 12वे प्राणी जब
चलते थे तो मुड़ते नहीं थे। वे उसी दिशा में चलते थे
जिसे वे देख रहे थे। वे वहीं जाते थे जहाँ आत्मा उन्हें ले
जाती थी।

13हर एक प्रणी इस प्रकार दिखता था। उन प्राणियों
के बीच के स्थान में जलती हुई कोयले की आग सी
दिख रही थी। यह आग छोटे–छोटे मशालों की तरह
उन प्राणियों के बीच चल रही थी। आग बड़े प्रकाश के
साथ चमक रही थी और बिजली की तरह कौंध रही
थी! 14वे प्राणी बिजली की तरह तेजी से पीछे को और
आगे को दौड़ते थे!

15-16जब मैंने प्राणियों को देखा तो चार चक्र देखे!
हर एक प्राणी के लिये एक चक्र था। चक्र भूमि को छू
रहे थे और एक समान थे। चक्र ऐसे दिख रहे थे मानों
पीली शुद्ध मणि के बने हों। वे ऐसे दिखते थे मानों एक
चक्र के भीतर दूसरा चक्र हो। 17वे चक्र किसी भी
दिशा में घूम सकते थे। किन्तु वे प्राणी जब चलते थे तो
घूम नहीं सकते थे। 18उन चक्रों के घेरे ऊँचे और
डरावने थे! उन चारों चक्रों के घेरे में आँखें ही आँखें
थी।

19चक्र सदा प्राणियों के साथ चलते थे। यदि प्राणी
ऊपर हवा में जाते तो चक्र भी उनके साथ जाते। 20वे
वहीं जाते, जहाँ "आत्मा" उन्हें ले जाना चाहती और
चक्र उनके साथ जाते थे। क्यों? क्योंकि प्राणियों की
"आत्मा" (शक्ति) चक्र में थी। 21इसलिये यदि प्राणी
चलते थे तो चक्र भी चलते थे। यदि प्राणी रूक जाते थे
तो चक्र भी रूक जाते थे। यदि चक्र हवा में ऊपर जाते
तो प्राणी उनके साथ जाते थे। क्यों? क्योंकि आत्मा
चक्र में थी।

22प्राणियों के सिर के ऊपर एक आश्चर्यजनक चीज
थी। यह एक उल्टे कटोरे की सी थी। कटोरा बर्फ की
तरह स्वच्छ था! 23इस कटोरे के नीचे हर एक प्राणी के
सीधे पंख थे जो दूसरे प्राणी तक पहुँच रहे थे। दो पंख
उसके शरीर के एक भाग को ढकते थे और अन्य दो
दूसरे भाग को।

24जब कभी वे प्राणी चलते थे, उनके पंख बड़ी तेज
ध्वनि करते थे। वह ध्वनि समुद्र के गर्जन जैसी उत्पन्न
होती थी। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के समीप से
निकलने के वाणी के समान थी। वह किसी सेना के
जन–समूह के शोर की तरह थी। जब वे प्राणी चलना
बन्द करते थे तो वे अपने पंखों को अपनी बगल में
समेट लेते थे।

25उन प्राणियों ने चलना बन्द किया और अपने पंखों
को समेटा और वहाँ फिर भीषण आवाज हुआ। वह
आवाज उस कटोरे से हुआ जो उनके सिर के ऊपर

था। 26उस कटोरे के ऊपर वहाँ कुछ था जो एक सिंहासन की तरह दिखता था। यह नीलमणि की तरह नीला था। वहाँ कोई था जो उस सिंहासन पर बैठा एक मनुष्य की तरह दिख रहा था! 27मैंने उसे उसकी कमर से ऊपर देखा। वह तप्त–धातु की तरह दिखा। उसके चारों ओर ज्वाला सी फूट रही थी! मैंने उसे उसकी कमर के नीचे देखा। यह आग की तरह दिखा जो उसके चारों ओर जगमगा रही थी। 28उसके चारों ओर चमकता प्रकाश बादलों में मेघ धनुष सा था। यह यहोवा की महिमा सा दिख रहा था। जैसे ही मैंने वह देखा, मैं धरती पर गिर गया। मैंने धरती पर अपना माथा टेका। तब मैंने एक आवाज़ सम्बोधित करते हुए सुनी।

2 उस वाणी ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, खड़े हो जाओ और मैं तुमसे बातें करूँगा।"

2तब आत्मा मुझे मेरे पैरों पर सीधे खड़ा कर दिया और मैंने उस को सुना जो मुझसे बातें कर रहा था। 3उसने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, मैं तुम्हें इस्राएल के परिवार से कुछ कहने के लिये भेज रहा हूँ।" वे लोग कई बार मेरे विरुद्ध हुए। उनके पूर्वज भी मेरे विरुद्ध हुए। उन्होंने मेरे विरुद्ध अनेक बार पाप किये और वे आज तक मेरे विरुद्ध अब भी पाप कर रहे हैं। 4मैं तुम्हें उन लोगों से कुछ कहने के लिये भेज रहा हूँ। किन्तु वे बहुत हठी हैं। वे बड़े कठोर चित्त वाले हैं। किन्तु तुम्हें उन लोगों से बातें करनी हैं। तुम्हें कहना चाहिए, "हमारा स्वामी यहोवा ये बातें बताता है।" 5किन्तु वे लोग तुम्हारी सुनेंगे नहीं। वे मेरे विरुद्ध पाप करना बन्द नहीं करेंगे। क्यों? क्योंकि वे बहुत विद्रोही लोग हैं, वे सदा मेरे विरुद्ध हो जाते हैं! किन्तु तुम्हें वे बातें उनसे कहनी चाहिये जिससे वे समझ सकें कि उनके बीच में कोई नबी रह रहा है।

6"मनुष्य के पुत्र उन लोगों से डरो नहीं। जो वे कहें उससे डरो मत। यह सत्य है कि वे तुम्हारे विरुद्ध हो जायेंगे और तुमको चोट पहुँचाना चाहेंगे। वे काँटे के समान होंगे। तुम ऐसा सोचोगे कि तुम बिच्छुओं के बीच रह रहे हो। किन्तु वे जो कुछ कहें उनसे डरो नहीं। वे विद्रोही लोग हैं। किन्तु उनसे डरो नहीं। 7तुम्हें उनसे वे बातें कहनी चाहिए जो मैं कह रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि वे तुम्हारी नहीं सुनेंगे और वे मेरे विरुद्ध पाप करना बन्द नहीं करेंगे! क्यों? क्योंकि वे विद्रोही लोग हैं।

8"मनुष्य के पुत्र, तुम्हें उन बातों को सुनना चाहिये जिन्हें मैं तुमसे कहता हूँ। उन विद्रोही लोगों की तरह मेरे विरुद्ध न जाओ। अपना मुँह खोलो जो बात मैं तुमसे कहता हूँ, स्वीकार करो और उन वचनों को लोगों से कहो। इन वचनों को खा लो।"

9तब मैंने (यहेजकेल) एक भुजा को अपनी ओर बढ़ते देखा। वह एक गोल किया हुआ लम्बा पत्र जिस पर वचन लिखे थे, पकड़े हुए था। 10मैंने उस गोल किये हुए पत्र को खोला और उस पर सामने और पीछे वचन लिखे थे। उसमें सभी प्रकार के करूण गीत, कथायें और चेतावनियाँ थीं।

3 परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, जो तुम देखते हो उसे खा जाओ। इस गोल किये पत्र कोखा जाओ और तब जाकर इस्राएल के लोगों से ये बातेंकहो।"

2इसलिये मैंने अपना मुँह खोला और उसने गोल किये पत्र को मेरे मुँह में रखा। 3तब परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, मैं तुम्हें इस गोल किये पत्र को दे रहा हूँ। इसे निगल जाओ! इस गोल किये पत्र को अपने शरीर में भर जाने दो।"

इसलिये मैं गोल किये पत्र को खा गया। यह मेरे मुँह में शहद की तरह मीठा था।

4तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के परिवार में जाओ। मेरे कहे हुए वचन उनसे कहो। 5मैं तुम्हें किन्हीं विदेशियों में नहीं भेज रहा हूँ जिनकी बातें तुम समझ न सको। तुम्हें दूसरी भाषा सीखनी नहीं पड़ेगी। मैं तुम्हें इस्राएल के परिवार में भेज रहा हूँ। 6मैं तुम्हें कई भिन्न देशों में नहीं भेज रहा हूँ जहाँ लोग ऐसी भाषा बोलते हैं कि तुम समझ नहीं सकते। यदि तुम उन लोगों के पास जाओगे और उनसे बातें करोगे तो वे तुम्हारी सुनेंगे। किन्तु तुम्हें उन कठिन भाषाओं को नहीं समझना है। 7नहीं! मैं तो तुम्हें इस्राएल के परिवार में भेज रहा हूँ। केवल वे लोग ही कठोर चित्त वाले हैं–वे बहुत ही हठी हैं और इस्राएल के लोग तुम्हारी सुनने से इन्कार कर देंगे। वे मेरी सुनना नहीं चाहते! 8किन्तु मैं तुमको उतना ही हठी बनाऊँगा जितने वे हैं। तुम्हारा चित्त ठीक उतना ही कठोर होगा जितना उनका! 9हीरा अग्नि–चट्टान से भी अधिक कठोर होता है। उसी प्रकार तुम्हारा चित्त उनके चित्त से अधिक कठोर होगा। तुम उनसे अधिक हठी होगे अत: तुम उन लोगों से नहीं डरोगे । तुम उन लोगों से नहीं डरोगे जो सदा मेरे विरुद्ध जाते हैं।"

10तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, तुम्हें मेरी हर एक बात, जो मैं तुमसे कहता हूँ, सुनना होगा और तुम्हें उन बातों को याद रखना होगा। 11तब तुम अपने उन सभी लोगों के बीच जाओ जो देश–निष्कासित हैं। उनके पास जाओ और कहो, 'हमारा स्वामी यहोवा ये बातें कहता है', वे मेरी नहीं सुनेंगे और वे पाप करना बन्द नहीं करेंगे। किन्तु तुम्हें ये बातें कहनी हैं।"

12तब आत्मा ने मुझे ऊपर उठाया। तब मैंने अपने पीछे एक आवाज सुनी। यह बिजली की कड़क की तरह बहुत तेज थी। उसने कहा, "यहोवा की महिमा धन्य है!" 13तब प्राणियों के पंख हिलने आरम्भ हुए। पंखों ने, जब एक दूसरे को छुआ, तो उन्होंने बड़ी तेज आवाज की और उनके सामने के चक्र बिजली की कड़क की तरह प्रचण्ड घोष करने लगे! 14आत्मा ने

मुझे उठाया और दूर ले गई। मैंने वह स्थान छोड़ा। मैं बहुत दुःखी था और मेरी आत्मा बहुत अशान्त थी किन्तु यहोवा की शक्ति मेरे भीतर बहुत प्रबल थी! 15मैं इस्राएल के उन लोगों के पास गया जो तेलाबीब में रहने को विवश किये गए थे। ये लोग कबार नदी के सहारे रहते थे। मैंने वहाँ के निवासियों को अभिवादन किया। मैं वहाँ सात दिन ठहरा और उन्हें यहोवा की कही गई बातों को बताया।

16सात दिन बाद यहोवा का सन्देश मुझे मिला। उसने कहा, 17"मनुष्य के पुत्र, मैं तुम्हें इस्राएल का सन्तरी बना रहा हूँ। मैं उन बुरी घटनाओं को बताऊँगा जो उनके साथ घटित होंगी और तुम्हें इस्राएल को उन घटनाओं के बारे में चेतावनी देनी चाहिए। 18यदि मैं कहता हूँ, 'यह बुरा व्यक्ति मरेगा!' तो तुम्हें यह चेतावनी उसे देनी चाहिए! तुम्हें उससे कहना चाहिये कि वह अपनी जिन्दगी बदले और बुरे काम करना बन्द करे। यदि तुम उस व्यक्ति को चेतावनी नहीं दोगे तो वह मर जायेगा। वह मरेगा क्योंकि उसने पाप किया। किन्तु मैं तुमको भी उसकी मृत्यु के लिये उत्तरदायी बनाऊँगा! क्यों? क्योंकि तुम उसके पास नहीं गए और उसके जीवन को नहीं बचाया।

19"यह हो सकता है कि तुम किसी व्यक्ति को चेतावनी दोगे, उसे उसके जीवन को बदलने के लिये समझाओगे और बुरा काम न करने को कहोगे। यदि वह व्यक्ति तुम्हारी अनसुनी करता है तो मर जायेगा। वह मरेगा क्योंकि उसने पाप किया था। किन्तु तुमने उसे चेतावनी दी, अतः तुमने अपना जीवन बचा लिया।

20"या यह हो सकता है कि कोई अच्छा व्यक्ति अच्छा बने रहना छोड़ दे। मैं उसके सामने कुछ ऐसा लाकर रख दूँ कि वह उसका पतन (पाप) करे। वह बुरे काम करना आरम्भ करेगा। इसलिये वह मरेगा। वह मरेगा, क्योंकि वह पाप कर रहा है और तुमने उसे चेतावनी नहीं दी। मैं तुम्हें उसकी मृत्यु के लिये उत्तरदायी बनाऊँगा, और लोग उसके द्वारा किये गए सभी अच्छे कार्यों को याद नहीं करेंगे।

21"किन्तु यदि तुम उस अच्छे व्यक्ति को चेतावनी देते हो और उससे पाप करना बन्द करने को कहते हो, और यदि वह पाप करना बन्द कर देता है, तब वह नहीं मरेगा। क्यों? क्योंकि तुमने उसे चेतावनी दी और उसने तुम्हारी सुनी। इस प्रकार तुमने अपना जीवन बचाया।"

22तब यहोवा की शक्ति मेरे ऊपर आई। उसने मुझसे कहा, "उठो, और घाटी में जाओ। मैं तुमसे उस स्थान पर बात करूँगा।"

23इसलिये मैं खड़ा हुआ और बाहर घाटी में गया। यहोवा की महिमा वहाँ प्रकट हुआ ठीक वैसा ही, जैसा मैंने उसे कबार नदी के सहारे देखा था। इसलिए मैंने धरती पर अपना सिर झुकाया। 24किन्तु "आत्मा" आयी और उसने मुझे उठाकर मेरे पैरों पर खड़ा कर दिया। उसने मुझसे कहा, "घर जाओ और अपने को अपने घर में ताले के भीतर बंद कर लो। 25मनुष्य के पुत्र, लोग रस्सी के साथ आएंगे और तुमको बांध देंगे। वे तुमको लोगों के बीच बाहर जाने नहीं देंगे। 26मैं तुम्हारी जीभ को तुम्हारे तालू से चिपका दूँगा, तुम बात करने योग्य नहीं रहोगे। इसलिये कोई भी व्यक्ति उन लोगों को ऐसा नहीं मिलेगा जो उन्हें शिक्षा दे सके कि वे पाप कर रहे हैं। क्यों? क्योंकि वे लोग सदा मेरे विरुद्ध जा रहे हैं। 27किन्तु मैं तुमसे बातचीत करुँगा तब मैं तुम्हें बोलने दूँगा। किन्तु तुम्हें उनसे कहना चाहिए, 'हमारा स्वामी यहोवा ये बातें कहता है।' यदि कोई व्यक्ति सुनना चाहता है तो यह बहुत अच्छा है। यदि कोई व्यक्ति इसे नहीं सुनना चाहता, तो न सुने। किन्तु वे लोग सदा मेरे विरुद्ध जाते रहे।

4 "मनुष्य के पुत्र, एक ईंट लो। इस पर एक चित्र खींचो। एक नगर का, अर्थात यरूशलेम का एक चित्र बनाओ 2और तब उस प्रकार कार्य करो मानो तुम उस नगर का घेरा डाले हुए सेना हो। नगर के चारों ओर एक मिट्टी की दीवार इस पर आक्रमण करने में सहायता के लिये बनाओ। नगर की दीवार तक पहुँचने वाली एक कच्ची सड़क बनाओ। तोड़ फोड़ करने वाले लट्ठे लाओ और नगर के चारों ओर सैनिक डेरे खड़े करो 3और तब तुम एक लोहे की कड़ाही लो और इसे अपने और नगर के बीच रखो। यह एक लोहे की दीवार की तरह होगी, जो तुम्हें और नगर को अलग करेगी। इस प्रकार तुम यह प्रदर्शित करोगे कि तुम उस नगर के विरुद्ध हो। तुम उस नगर को घेरोगे और उस पर आक्रमण करोगे। क्यों? क्योंकि यह इस्राएल के परिवार के लिये एक उदाहरण होगा। यह प्रदर्शित करेगा कि मैं (परमेश्वर) यरूशलेम को नष्ट करुँगा।

4"तब तुम्हें अपने बायीं करवट लेटना चाहिए। तुम्हें वह करना चाहिए जो प्रदर्शित करे कि तुम इस्राएल के लोगों के पापों को अपने ऊपर ले रहे हो। तुम उस पाप को उतने ही दिनों तक ढोओगे जितने दिन तक तुम अपनी बायीं करवट लेटोगे। 5तुम इस तरह इस्राएल के पाप को तीन सौ नब्बे दिनों तक सहोगे। इस प्रकार मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि इस्राएल, एक दिन एक वर्ष के बराबर के, कितने लम्बे समय तक दण्डित होगा।

6"उस समय के बाद तुम अपनी दायीं करवट चालीस दिन तक लेटोगे। इस समय यहूदा के पापों को चालीस दिन तक सहन करोगे। एक दिन एक वर्ष का होगा। मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि यहूदा कितने लम्बे समय के लिये दण्डित होगा।"

7परमेश्वर फिर बोला। उसने कहा, "अब, अपनी आस्तीनों को मोड़ लो और अपने हाथों को ईंट के ऊपर उठाओ। ऐसा दिखाओ मानो तुम यरूशलेम नगर

पर आक्रमण कर रहे हो। इसे यह दिखाने के लिये करो कि तुम मेरे नबी के रूप में लोगों से बातें कर रहे हो। 8इस पर ध्यान रखो, मैं तुम्हें रस्सियों से बाँध रहा हूँ। तुम तब तक एक बगल से दूसरी बगल करवट नहीं ले सकते जब तक तुम्हारा नगर पर आक्रमण समाप्त नहीं होता।"*

9परमेश्वर ने यह भी कहा, "तुम्हें रोटी बनाने के लिये कुछ अन्न लाना चाहिए। कुछ गेहूँ, जौ, सेम, मसूर, तिल, बाजरा और कठिया गेहूँ लाओ। इस सभी को एक कटोरे में मिलाओ और उन्हें पीसकर आटा बनाओ। तुम्हें इस आटे का उपयोग रोटी बनाने के लिये करना होगा। तुम केवल इसी रोटी को तीन सौ नब्बे दिनों तक अपनी बगल के सहारे लेटे हुये खाओगे। 10तुम्हें केवल एक प्याला वह आटा रोटी बनाने के लिये प्रतिदिन उपयोग करना होगा। तुम उस रोटी को पूरे दिन में समय समय पर खाओगे। 11और तुम केवल तीन प्याले पानी प्रतिदिन पी सकते हो। 12तुम्हें प्रतिदिन अपनी रोटी बनानी चाहिए। तुम्हें आदमी का सूखा मल लाकर उसे जलाना चाहिए। तब तुम्हें उस जलते मल पर अपनी रोटी पकानी चाहिए। तुम्हें इस रोटी को लोगों के सामने खाना चाहिए।"

13तब यहोवा ने कहा, "यह प्रदर्शित करेगा कि इस्राएल का परिवार विदेशों में अपवित्र रोटियाँ खाएगा और मैंने उन्हें इस्राएल को छोड़ने और उन देशों में जाने को विवश किया था!"

14तब मैंने (यहेजकेल) आश्चर्य से कहा, "किन्तु मेरे स्वामी यहोवा, मैंने अपवित्र भोजन कभी नहीं खाया। मैंने कभी उस जानवर का माँस नहीं खाया, जो किसी रोग से मरा हो या जिसे जंगली जानवर ने मार डाला हो। मैंने बाल्यावस्था से लेकर अब तक कभी अपवित्र माँस नहीं खाया है। मेरे मुँह में कोई भी वैसा बुरा माँस कभी नहींगया है।"

15तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "ठीक है! मैं तुम्हें रोटी पकाने के लिये गाय का सूखा गोबर उपयोग में लाने दूँगा। तुम्हें आदमी के सूखे मल का उपयोग नहीं करना होगा।"

16तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, मैं यरूशलेम की रोटी की आपूर्ति को नष्ट कर रहा हूँ। लोगों के पास खाने के लिये रोटियाँ नहीं के बराबर होंगी। वे अपनी भोजन–आपूर्ति के लिये बहुत परेशान होंगे और उनके लिये पीने का पानी नहीं के बराबर है। वे उस पानी को पीते समय बहुत भयभीत रहेंगे। 17क्यों? क्योंकि लोगों के लिये पर्याप्त भोजन और पानी नहीं होगा। लोग एक दूसरे को देखकर भयभीत होंगे क्योंकि वे अपने पापों के कारण एक दूसरे को नष्ट होता हुआ देखेंगे।"

5 1-2"मनुष्य के पुत्र अपने उपवास के समय* के बाद तुम्हें ये काम करने चाहिए। तुम्हें एक तेज तलवार लेनी चाहिए। उस तलवार का उपयोग नाई के उस्तरे की तरह करो। तुम अपने बाल और दाढ़ी उससे काट लो। बालों को तराजू में रखो और तौलो। अपने बालों को तीन बराबर भागों में बाँटो। अपने बालों का एक तिहाई भाग उस ईंट पर रखो जिस पर नगर का चित्र बना है। उस नगर में उन बालों को जलाओ। यह प्रदर्शित करता है कि कुछ लोग नगर के अन्दर मरेंगे। तब तलवार का उपयोग करो और अपने बालों के एक तिहाई को छोटे–छोटे टुकड़ों में काट डालो। उन बालों को उस नगर (ईंट) के चारों ओर रखो। यह प्रदर्शित करेगा कि कुछ लोग नगर के बाहर मरेंगे। तब अपने बालों के एक तिहाई को हवा में उड़ा दो। इन्हें हवा को दूर उड़ा ले जाने दो। यह प्रदर्शित करेगा कि मैं अपनी तलवार निकालूँगा और कुछ लोगों का पीछा करके उन्हें दूर देशों में भगा दूँगा। 3किन्तु तब तुम्हें जाना चाहिए और उन बालों में से कुछ को लाना चाहिए। उन बालों को लाओ, उन्हें ढको और उनकी रक्षा करो। यह प्रदर्शित करेगा कि मैं अपने लोगों में से कुछ को बचाऊँगा 4और तब उन उड़े हुए बालों में से कुछ और अधिक बालों को लाओ। उन बालों को आग में फेंक दो। यह प्रदर्शित करता है कि आग वहाँ शुरु होगी और इस्राएल के पूरे खानदानको जलाकर नष्ट कर देगी।"

5तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा "वह ईंट यरूशलेम है, मैंने इस यरूशलेम नगर को अन्य राष्ट्रों के बीच रखा है, इस समय इस्राएल के चारों ओर अन्य देश हैं। 6यरूशलेम के लोगों ने मेरे आदेशों के प्रति विद्रोह किया। वे अन्य किसी भी राष्ट्र से अधिक बुरे थे! उन्होंने मेरे नियमों को उससे भी अधिक तोड़ा जितना उनके चारों ओर के किसी भी देश के लोगों ने तोड़ा। उन्होंने मेरे आदेशों को सुनने से इनकार कर दिया। उन्होंने मेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया!"

7इसलिये मेरे स्वामी यहोवा, ने कहा, "मैं तुम लोगों पर भयंकर विपत्ति लाऊँगा। क्यों? क्योंकि तुमने मेरे आदेशों का पालन नहीं किया। तुम लोगों ने मेरे नियमों को अपने चारों ओर रहने वाले लोगों से भी अधिक तोड़ा! तुम लोगों ने वे काम भी किये जिन्हें वे लोग भी गलत कहते हैं!" 8इसलिये मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "इसलिए मैं भी तुम्हारे विरुद्ध हूँ, मैं तुम्हें इस प्रकार दण्ड दूँगा जिससे दूसरे लोग भी देख सकें। 9मैं तुम लोगों के साथ वह करूँगा जिसे मैंने पहले कभी नहीं किया। मैं उन भयानक कामों को फिर कभी नहीं करूँगा।

नगर ... नहीं होता हिब्रू में श्लेष है। हिब्रू शब्द का अर्थ "भूखों मरने का समय" "आपत्तिकाल" या "किसी नगर पर उसके विरुद्ध आक्रमण" हो सकता है।

अपने उपवास के समय "नगर पर तुम्हारा आक्रमण।"

क्यों? क्योंकि तुमने इतने अधिक भयंकर काम किये।
10यरूशलेम में लोग भूख से इतने तड़पेंगे कि माता-पिता
अपने बच्चों को खा जाएंगें और बच्चे अपने माता-पिता
को खा जाएंगे। मैं तुम्हें कई प्रकार से दण्ड दूँगा और जो
लोग जीवित बचे हैं, उन्हें मैं हवा में बिखेर दूँगा।"

11मेरे स्वामी यहोवा कहता है, "यरूशलेम, मैं अपने
जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं तुम्हें दण्ड
दूँगा! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। क्यों?
क्योंकि तुमने मेरे 'पवित्र स्थान' के विरुद्ध भयंकर पाप
किया! तुमने वे भयानक काम किये जिन्होंने इसे गन्दा
बना दिया! मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम पर दया नहीं
करुँगा! मैं तुम्हारे लिए दुःख का अनुभव नहीं करुँगा!
12तुम्हारे एक तिहाई लोग नगर के भीतर रोग और
भूख से मरेंगे। तुम्हारे एक तिहाई लोग युद्ध में नगर के
बाहर मरेंगे और तुम्हारे लोगों के एक तिहाई को मैं
अपनी तलवार निकाल कर उन का पीछा कर के
उन्हें दूर देशों में खदेड़ दूँगा। 13केवल तब मैं तुम्हारे
लोगों पर क्रोधित होना बन्द करूँगा। मैं समझ लूँगा कि
वे उन बुरे कामों के लिए दण्डित हुए हैं जो उन्होंने मेरे
साथ किये थे और वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ और मैंने
उनसे बातें उनके प्रति गहरा प्रेम होने के कारण की!"

14परमेश्वर ने कहा, "यरूशलेम मैं तुझे नष्ट करुँगा
तुम पत्थरों के ढेर के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं रह
जाओगे। तुम्हारे चारों ओर के लोग तुम्हारी हँसी उड़ाएंगे।
हर एक व्यक्ति जो तुम्हारे पास से गुजरेगा, तुम्हारी हँसी
उड़ाएगा। 15तुम्हारे चारों ओर के लोग तुम्हारी हँसी
उड़ाएंगे, किन्तु उनके लिए तुम एक सबक भी बनोगे।
वे देखेंगे कि मैं क्रोधित था और मैंने तुमको दण्ड दिया।
मैं बहुत क्रोधित था। मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी। मुझ,
यहोवा ने तुमसे कहा था कि मैं क्या करूँगा! 16मैंने
कहा था कि मैं तुम्हारे पास भयंकर भुखमरी का समय
भेजूँगा। मैंने तुमसे कहा था, मैं उन चीजों को भेजूँगा जो
तुमको नष्ट करेंगी और तुमसे कहा था कि मैं तुम्हारी
भोजन की आपूर्ति छीन लूँगा, और वह भूखमरी का
वह समय बार-बार आया। 17मैंने तुमसे कहा था कि मैं
तुझ पर भूख तथा जंगली पशु भेजूँगा, जो तुम्हारे बच्चों
को मार डालेंगे। मैंने तुमसे कहा था कि पूरे नगर में
रोग और मृत्यु का राज्य होगा और मैं उन शत्रु-सैनिकों
को तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिये लाऊँगा। मुझ यहोवा
ने यह कहा था, ये सभी बातें घटित होंगी और सभी
घटित हुई!"

6 तब यहोवा का वचन मेरे पास फिर आया। 2उसने
कहा, "मनुष्य के पुत्र' इस्राएल के पर्वतों की ओर
मुड़ो। उनके विरुद्ध मेरे पक्ष में कहो। 3उन पर्वतों से यह
कहो:

"'इस्राएल के पर्वतों, मेरे स्वामी यहोवा की ओर से
यह सन्देश सुनो! मेरे स्वामी यहोवा पहाड़ियों, पर्वतों,
घाटियों और खार-खड्डों से यह कहता है। ध्यान दो!
मैं (परमेश्वर) शत्रु को तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिये
ला रहा हूँ। मैं तुम्हारे उच्च-स्थानों को नष्ट कर दूँगा।
4तुम्हारी वेदियों को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया
जायेगा तुम्हारी सुगन्धि चढ़ाने की वेदियाँ ध्वस्त कर दी
जाएंगी! और मैं तुम्हारे शवों को तुम्हारी गन्दी मूर्तियों
के सामने फेकूँगा। 5मैं इस्राएल के लोगों के शवों को
उनके देवताओं की गन्दी मूर्तियों के सामने फेंकूँगा। मैं
तुम्हारी हड्डियों को तुम्हारी वेदियों के चारों ओर
बिखेरूँगा। 6जहाँ कहीं तुम्हारे लोग रहेंगे उन पर विपत्तियाँ
आएंगी। उनके नगर पत्थरों के ढेर बनेंगे। उनके उच्च
स्थान नष्ट किये जाएंगे। क्यों? इसलिये कि उन पूजा-
स्थानों का उपयोग दुबारा न हो सके। वे सभी वेदियाँ
नष्ट कर दी जायेंगी। लोग फिर कभी उन गन्दी मूर्तियों
को नहीं पूजेंगे। उन सुगन्धि-वेदियों को ध्वस्त किया
जाएगा। जो चीजें तुम बनाते हो वे पूरी तरह नष्ट की
जाएंगी। 7तुम्हारे लोग मारे जाएंगे और तब तुम जानोगे
कि मैं यहोवा हूँ!'"

8परमेश्वर ने कहा, "किन्तु मैं तुम्हारे कुछ लोगों को
बच निकलने दूँगा। वे थोड़े समय तक विदेशों में रहेंगे।
मैं उन्हें बिखेरूँगा और अन्य देशों में रहने के लिये
विवश करुँगा। 9तब वे बचे हुए लोग बन्दी बनाए जाएंगे।
वे विदेशों में रहने को विवश किये जाएंगे। किन्तु वे बचे
हुए लोग मुझे याद रखेंगे। मैंने उनकी आत्मा (हृदय)
को खण्डित किया। जिन पापों को उन्होंने किया, उसके
लिये वे स्वयं ही घृणा करेंगे। बीते समय में वे मुझसे
विमुख हुए थे और दूर हो गए थे। वे अपनी गन्दी मूर्तियों
के पीछे लगे हुए थे। वे उस स्त्री के समान थे जो अपने
पति को छोड़कर, किसी दूसरे पुरुष के पीछे दौड़ने लगी।
उन्होंने बड़े भंयकर पाप किये। 10किन्तु वे समझ जाएंगे
कि मैं यहोवा हूँ और वे यह जानेंगे कि यदि मैं कुछ
करने के लिये कहूँगा तो मैं उसे करूँगा। वे समझ जायेंगे
कि वे सब विपत्तियाँ जो उन पर आई हैं, मैंने डाली हैं।"

11तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "हाथों से
ताली बजाओं और अपने पैर पीटो। उन सभी भयंकर
चीजों के विरुद्ध कहो जिन्हें इस्राएल के लोगों ने किया
है। उन्हें चेतावनी दो कि वे रोग और भूख से मारे
जाएंगे। उन्हें बताओ कि वे युद्ध में मारे जाएंगे। 12दूर के
लोग रोग से मरेंगे। समीप के लोग तलवार से मारे
जाएंगे। जो लोग नगर में बचे रहेंगे, वे भूख से मरेंगे। मैं
तभी क्रोध करना छोड़ूँगा, 13और केवल तभी तुम
जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। तुम यह तब समझोगे जब तुम
अपने शवों को गन्दी मूर्तियों के सामने और वेदियों के
चारों ओर देखोगे। तुम्हारे पूजा के उन हर स्थानों के
निकट, हर एक ऊँची पहाड़ी, पर्वत तथा हर एक हरे
वृक्ष और पत्ते वाले हर एक बांज वृक्ष के नीचे, वे शव
होंगे। उन सभी स्थानों पर तुमने अपनी बलि-भेंट की

है। वे तुम्हारी गन्दी मूर्तियों के लिए मधुर गन्ध थी।
14किन्तु मैं अपना हाथ तुम लोगों पर उठाऊँगा और
तुम्हें और तुम्हारे लोगों को जहाँ कही वे रहे, दण्ड दूँगा!
मैं तुम्हारे देश को नष्ट करूँगा! यह दिबला मरूभूमि से
भी अधिक सूनी होगी। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!"

7 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। 2उसने कहा,
"मनुष्य के पुत्र, अब मेरे स्वामी यहोवा का यह
सन्देश है। यह सन्देश इस्राएल देश के लिये है: अन्त!
अन्त आ गया है। पूरा देश नष्ट हो जायेगा।
3अब तुम्हारा अन्त आ गया है! मैं दिखाऊँगा कि मैं
तुम पर कितना क्रोधित हूँ। मैं तुम्हें उन बुरे कामों के
लिये दण्ड दूँगा जो तुमने किये। जो भंयकर काम तुमने
किये उनके लिए मैं तुमसे भुगतान कराऊँगा।
4मैं तुम्हारे ऊपर तनिक भी दया नहीं करूँगा। मैं
तुम्हारे लिये अफसोस नहीं करूँगा। मैं तुम्हें तुम्हारे बुरे
कामों के लिये दण्ड दे रहा हूँ। तुमने भयानक काम
किये हैं। अब तुम समझ जाओगे कि मैं यहोवा हूँ।"
5मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं। "एक के बाद
एक विपत्तियाँ आयेंगी! 6अन्त आ रहा है और यह बहुत
जल्दी आयेगा! 7इस्राएल के तुम लोगों, क्या तुमने सीटी
सुनी है? शत्रु आ रहा है। वह दण्ड का समय शीघ्र आ
रहा है! शत्रुओं का शोरगुल पर्वतों पर अधिकाधिक
बढ़ता जा रहा है। 8मैं शीघ्र ही दिखा दूँगा कि मैं कितना
क्रोधित हूँ। मैं तुम्हारे विरुद्ध अपने पूरे क्रोध को प्रकट
करुँगा। मैं उन बुरे कामों के लिये दण्ड दूँगा जो तुमने
किये। मैं उन सभी भयानक कामों के लिए तुमसे
भुगतान कराऊँगा जो तुमने किये। 9मैं तुम पर तनिक
भी दया नहीं करुँगा मैं तुम्हारे लिये अफसोस नहीं
करुँगा। मैं तुम्हें तुम्हारे बुरे कामों के लिये दण्ड दे रहा
हूँ। तुमने जो भयानक काम किये हैं, अब तुम जानोगे
कि मैं यहोवा हूँ और मैं दण्ड भी देता हूँ।
10"दण्ड का वह समय आ गया। क्या तुम सीटी सुन
रहे हो? परमेश्वर ने संकेत दिया है। दण्ड आरम्भ हो
रहा है। डाली अंकुरित होने लगी है। घमण्डी राजा
(नबूकदनेस्सर) पहले से ही अधिक शक्तिशाली होता
जा रहा था। 11वह हिसंक व्यक्ति उन बुरे लोगों को दण्ड
देने के लिये तैयार है। इस्राएल में लोगों की संख्या बहुत
है, किन्तु वह उनमें से नहीं है। वह उस भीड़ का व्यक्ति
नहीं है। वह उन लोगों में से कोई महत्वपूर्ण प्रमुख नहीं
है।
12"वह दण्ड का समय आ गया है। वह दिन आ
पहुँचा। जो लोग चीजें खरीदते हैं, प्रसन्न नहीं होंगे और
जो लोग चीजें बेचते हैं, वे उन्हें बेचने में बुरा नहीं
मानेंगे। क्यों? क्योंकि वह भंयकर दण्ड हर एक व्यक्ति
के लिये होगा। 13जो लोग अपनी स्थायी सम्पत्ति बेचेंगे वे
उसे कभी नहीं पाएंगे। यदि कोई व्यक्ति जीवित भी बचा
रहेगा तो भी वह अपनी स्थायी सम्पत्ति वापस नहीं पा
सकता। क्यों? क्योंकि यह दर्शन लोगों के पूरे समूह के
लिये है। इसलिए यदि कोई व्यक्ति जीवित भी बच निकलता
है, तो भी लोग इससे अधिक संतुष्ट नहीं होंगे।
14"वे लोगों को चेतावनी देने के लिये तुरही बजाएंगे।
लोग युद्ध के लिये तैयार होंगे। किन्तु वे युद्ध करने के
लिये नहीं निकलेंगे। क्यों? क्योंकि मैं पूरे जन-समूह
को दिखाऊँगा कि मैं कितना क्रोधित हूँ। 15तलवार
लिये हुए शत्रु नगर के बाहर हैं। रोग और भूख नगर
के भीतर हैं। यदि कोई युद्ध के मैदान में जाएगा तो शत्रु
के सैनिक उसे मार डालेंगे। यदि वह नगर में रहता है
तो भूख और रोग उसे नष्ट करेंगे।
16"किन्तु कुछ लोग बच निकलेंगे। वे बचे लोग भाग
कर पहाड़ों में चले जाएंगे। किन्तु वे लोग सुखी नहीं
होंगे। वे अपने पापों के कारण दुःखी होंगे। वे चिल्लायेंगे
और कबूतरों की तरह दुःख-भरी आवाज़ निकालेंगे।
17लोग इतने थके और खिन्न होंगे कि बाहें भी नहीं
उठा पाएंगे। उनके पैर पानी की तरह ढीले होंगे। 18वे
शोक-वस्त्र पहनेंगे और भयभीत रहेंगे। तुम हर मुख
पर ग्लानि पाओगे। वे (शोक प्रदर्शन के लिये) अपने
बाल मुड़वा लेंगे। 19वे अपनी चाँदी की देव मूर्तियों को
सड़कों पर फेक देंगे। वे अपने सोने की देवमूर्तियों को
गन्दे चीथड़ो की तरह समझेंगे! क्यों? क्योंकि जब यहोवा
ने अपना क्रोध प्रकट किया वे मूर्तियाँ उन्हें बचा न
सकीं। वे मूर्तियाँ लोगों के लिये पतन (पाप) के जाल के
अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं थीं। वे मूर्तियाँ लोगों को
भोजन नहीं देंगी वे मूर्तियाँ उनके पेट में अन्न नहीं
पहुँचायेंगी।
20"उन लोगों ने अपने सुन्दर आभूषण का उपयोग
किया और मूर्ति बनाई। उन्हें अपनी मूर्ति पर गर्व था।
उन्होंने अपनी भयानक मूर्तियाँ बनाई। उन लोगों ने उन
गन्दी चीजों को बनाया। इसलिये मैं (परमेश्वर) उन्हें
गन्दें चिथड़े की तरह फेंक दूँगा। 21मैं उन्हें अजनबियों
को लेने दूँगा। वे अजनबी उनका मजाक उड़ाएंगे। वे
अजनबी, उन लोगों में से कुछ को मारेंगे और कुछ को
बन्दी बनाकर ले जाएंगे। 22मैं उनसे अपना मुँह फेर
लूँगा, मैं उनकी ओर नहीं देखूँगा। वे अजनबी मेरे
मन्दिर को नष्ट करेंगे, वे उस पवित्र भवन के गोपनीय
भागों में जाएंगे और उसे अपवित्र करेंगे।
23"बन्दियों के लिये जंजीरें बनाओ! क्यों? क्योंकि
बहुत से लोग दूसरे लोगों को मारने के कारण दण्डित
होंगे। नगर के हर स्थान पर हिंसा भड़केगी। 24मैं अन्य
राष्ट्रों से बुरे लोगों को लाऊँगा और वे लोग इस्राएल के
लोगों के सभी घरों को ले लेंगे। मैं तुम शक्तिशाली लोगों
को गर्वीला होने से रोक दूँगा। दूसरे राष्ट्रों के वे लोग
तुम्हारे पूजा-स्थानों को ले लेंगे।
25"तुम लोग भय से काँप उठोगे। तुम लोग शान्ति
चाहोगे, किन्तु शान्ति नहीं मिलेगी। 26तुम एक के बाद

दूसरी दुःख-कथा सुनोगे। तुम बुरी खबरों के अलावा कुछ नहीं सुनोगे। तुम नबी की खोज करोगे और उससे दर्शन पूछोगे। किन्तु कोई मिलेगा नहीं। याजक के पास तुम्हें शिक्षा देने को कुछ भी नहीं होगा और अग्रजों (प्रमुखों) के पास तुम्हें देने को कोई अच्छी सलाह नहीं होगी। 27तुम्हारा राजा उन लोगों के लिये रोएगा, जो मर गए। प्रमुख शोक-वस्त्र पहनेंगे। साधारण लोग बहुत डर जाएंगे। क्यों? क्योंकि मैं उसका बदला दूँगा जो उन्होंने किया। मैं उनका दण्ड निश्चित करूँगा। और मैं उन्हें दण्ड दूँगा। तब वे लोग समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

8 एक दिन मैं (यहेजकेल) अपने घर में बैठा था और यहूदा के अग्रज (प्रमुख) वहाँ मेरे सामने बैठे थे। यह देश-निकाले के छठे वर्ष के छठे महीने (सितम्बर) के पाँचवें दिन हुआ। अचानक मेरे स्वामी यहोवा की शक्ति मुझमें उतरी। 2मैंने कुछ देखा जो आग की तरह था। यह एक मनुष्य शरीर जैसा दिखाई पड़ता था। कमर से नीचे वह आग-सा था। कमर से ऊपर वह आग में तप्त-धातु की तरह चमकीला और कान्तिवाला था। 3तब मैंने कुछ ऐसा देखा जो बाहु की तरह था। वह बाहु बाहर बढ़ी और उसने मेरे सिर के बालों से मुझे पकड़ लिया। तब आत्मा ने मुझे हवा में उठा लिया और परमेश्वर के दर्शन में वह मुझे यरूशलेम को ले गई। वह मुझे उत्तर की ओर के भीतर फाटक पर ले गई। वह देवमूर्ति, जिससे परमेश्वर को ईर्ष्या होती है, उस फाटक के सहारे है। 4किन्तु इस्राएल के परमेश्वर का तेज वहाँ था। वह तेज वैसा ही दिखता था जैसा दर्शन मैंने घाटी के किनारे कबार नहर के पास देखा था।

5परमेश्वर ने मुझसे कहा। उसने कहा, "मनुष्य के पुत्र, उत्तर की ओर देखो!" इसलिये मैंने उत्तर की ओर देखा। और वहाँ प्रवेश मार्ग के सहारे वेदी-द्वार के उत्तर में वह देवमूर्ति थी जिसके प्रति परमेश्वर को ईर्ष्या होतीथी।

6तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम देखते हो कि इस्राएल के लोग कैसा भंयकर काम कर रहे हैं? यहाँ उन्होंने उस चीज को मेरे मन्दिर के ठीक बगल में बनाया है। यदि तुम मेरे साथ आओगे तो तुम और भी अधिक भंयकर चीजें देखोगे!"

7इसलिये मैं आंगन के प्रवेश-द्वार पर गया और मैंने दीवार में एक छेद देखा। 8परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र! उस दीवार के छेद में से घुसो।" इसलिये मैं दीवार के उस छेद में से होकर गया और वहाँ मैंने एक दरवाजा देखा।

9तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "अन्दर जाओ, और उन भयानक दुष्ट चीजों को देखो जिन्हें लोग यहाँ कर रहे हैं।" 10इसलिये मैं अन्दर गया और मैंने देखा। मैंने हर एक प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु और जानवरों की देवमूर्तियों को देखा जिनके बारे में सोचने से तुम्हें घृणा होती है। वे देवमूर्तियाँ गन्दी मूर्तियाँ थीं जिन्हें इस्राएल के लोग पूजते थे। वहाँ उन जानवरों के चित्र हर दीवार पर चारों ओर खुदे हुए थे!

11तब मैंने इस पर ध्यान दिया कि शापान का पुत्र याजन्याह और इस्राएल के सत्तर अग्रज (प्रमुख) उस स्थान पर पूजा करने वालों के साथ थे। वहाँ पर वे, लोगों के ठीक सामने थे, और हर एक प्रमुख के हाथ में अपनी सुगन्धि का थाल था। जलती सुगन्धि का धुँआ हवा में उठ रहा था। 12तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम देखते हो कि इस्राएल के प्रमुख अंधेरे में क्या करते हैं? हर एक व्यक्ति के पास अपने असत्य देवता के लिये एक विशेष कमरा है! वे लोग आपस में बातें करते हैं, 'यहोवा हमें देख नहीं सकता। यहोवा ने इस देश को छोड़ दिया है।'" 13तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "यदि तुम मेरे साथ आओगे तो तुम उन लोगों को और भी अधिक भयानक काम करते देखोगे!"

14तब वह मुझे यहोवा के मन्दिर के प्रवेशद्वार पर ले गया। यह द्वार उत्तर की ओर था। वहाँ मैंने स्त्रियों को बैठे और रोते देखा। वे असत्य देवता तम्मूज के विषय में शोक मना रहीं थीं!

15परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम इन भंयकर चीजों को देखते हो? मेरे साथ आओ और तुम इनसे भी बुरे काम देखोगे!" 16तब वह मुझे मन्दिर के भीतरी आँगन में ले गया। उस स्थान पर मैंने पच्चीस व्यक्तियों को नीचे झुके हुए और पूजा करते देखा। वे बरामदे और वेदी के बीच थे, किन्तु वे गलत दिशा में मुँह किये खड़े थे! उनकी पीठ पवित्र स्थान की ओर थी! वे सूर्य की पूजा करने के लिये नीचे झुके थे!

17तब परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम इसे देखते हो? यहूदा के लोग मेरे मन्दिर को इतना महत्वहीन समझते हैं कि वे मेरे मन्दिर में यह भंयकर काम करते हैं। यह देश हिंसा से भरा हुआ है। वे लगातार मुझको पागल करने वाला काम करते हैं! देखो, उन्होंने अपने नाकों में असत्य देवता की तरह चन्द्रमा का सम्मान करने के लिये बालियाँ पहन रखी हैं। 18मैं उन पर अपना क्रोध प्रकट करुँगा। मैं उन पर कोई दया नहीं करुँगा। मैं उनके लिये दुःख का अनुभव नहीं करुँगा। वे मुझे जोर से पुकारेंगे, किन्तु मैं उनको सुनने से इन्कार कर दूँगा!"

9 तब परमेश्वर ने नगर को दण्ड देने के लिये उत्तरदायी प्रमुखों को जोर से पुकारा। हर एक प्रमुख के हाथ में उसका अपना विध्वंसक शस्त्र था। 2तब मैंने ऊपरी द्वार से छः व्यक्तियों को सड़क पर आते देखा। यह द्वार उत्तर की ओर है। हर एक व्यक्ति अपने घातक शस्त्र को अपने हाथ में लिये था। उन व्यक्तियों में से एक ने

सूती वस्त्र पहन रखा था। उसके पास कमर में लिपिक की एक कलम और स्याही थी। वे लोग मन्दिर से काँसे की वेदी के पास गए और वहाँ खड़े हुए। 3तब इस्राएल के परमेश्वर का तेज करुब (स्वर्गदूतों) के ऊपर से, जहाँ वह था, उठा। तब वह तेज मन्दिर के द्वार पर गया। जब वह डयोढ़ी पर पहुँचा तो वह रूक गया। तब उस तेज ने उस व्यक्ति को बुलाया जो सूती वस्त्र, कलम और स्याही धारण किये हुए था।

4तब यहोवा ने उससे कहा, "यरूशलेम नगर से होकर निकलो। जो लोग उस नगर में लोगों द्वारा की गई भंयकर चीजों के विषय में दुःखी हैं और घबरायें हुए हैं, उन हर एक के ललाट पर एक चिन्ह अंकित करो।"

5-6तब मैंने परमेश्वर को अन्य लोगों से कहते सुना, "मैं चाहता हूँ कि तुम लोग प्रथम व्यक्ति का अनुसरण करो। तुम उन सभी व्यक्तियों को मार डालो। जिनके ललाट पर चिन्ह नहीं है। तुम इस पर ध्यान नहीं देना कि वे अग्रज (प्रमुख) युवक, युवतियाँ, बच्चे, या मातायें हैं। तुम्हें अपने शस्त्रों का उपयोग करना है, उन हर एक को मार डालना है जिनके ललाट पर चिन्ह नहीं है। कोई दया न दिखाओ। किसी व्यक्ति के लिये अफसोस न करो। यहाँ मेरे मन्दिर से आरम्भ करो।" इसलिये उन्होंने मन्दिर के सामने के अग्रजों (प्रमुखों) से आरम्भ किया।

7परमेश्वर ने उनसे कहा, "इस स्थान को अपवित्र बना दो! इस आंगन को शवों से भर दो!" इसलिए वे गए और उन्होंने नगर में लोगों को मार डाला।

8जब वे लोग, लोगों को मारने गए, तो मैं वहीं रूका रहा। मैंने भूमि पर अपना माथा टेकते हुए कहा, "हे मेरे स्वामी यहोवा, यरूशलेम के विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट करने के लिये, क्या तू इस्राएल में बचे हुये सभी लोगों को मार रहा है?"

9परमेश्वर ने कहा, "इस्राएल और यहूदा के परिवार ने अत्याधिक बुरे पाप किये हैं। इस देश में सर्वत्र लोगों की हत्यायें हो रही हैं और यह नगर अपराध से भरा पड़ा है। क्यों? क्योंकि लोग स्वयं कहते हैं, 'यहोवा ने इस देश को छोड़ दिया। वे उन कामों को नहीं देख सकता जिन्हें हम कर रहे हैं।' 10और मैं दया नहीं दिखाऊँगा। मैं उन लोगों के लिये अफसोस अनुभव नहीं करूँगा। उन्होंने स्वयं इसे बुलाया है, मैं इन लोगों को केवल दण्ड दे रहा हूँ जिसके ये पात्र हैं!"

11तब सूती वस्त्र, लिपिक की कलम और स्याही धारण करने वाला व्यक्ति बोला। उसने कहा, "मैंने वह कर दिया जो तेरा आदेश था।"

10 तब मैंने उस कटोरे को देखा जो करुब (स्वर्गदूत) के सिरों के ऊपर था। कटोरा नीलमणि की तरह स्वच्छ नीला दिख रहा था। वहाँ कटोरे के ऊपर कुछ सिंहासन की तरह दिख रहा था। 2तब उस व्यक्ति ने जो सिंहासन पर बैठा था, सन के वस्त्र पहने हुए व्यक्ति से कहा, "तुफानी-बादल" में आओ। करुब (स्वर्गदूत) के क्षेत्र में आओ। करुब (स्वर्गदूतों) के बीच से कुछ अंगारे अपने हाथ में लो। अपने हाथ में उन कोयलों को ले जाओ और जाकर उन्हें यरूशलेम नगर पर फेंक दो।"

वह व्यक्ति मेरे पीछे चला। 3करुब (स्वर्गदूत) उस समय मन्दिर के दक्षिण के क्षेत्र में खड़े थे, जब वह व्यक्ति बादल में घुसा। बादल भीतरी आँगन में भर गया। 4तब यहोवा का तेज करुब (स्वर्गदूत) से अलग होकर मन्दिर के द्वार पर चला गया। तब बादल मन्दिर में भर गया और यहोवा के तेज़ की प्रखर ज्योति पूरे आँगन में भर गई। 5तब मैंने करुब (स्वर्गदूतों) के पंखों की फड़फड़ाहट पूरे बाहरी आँगन में सुनी जा सकती थी। बाहरी आँगन में फड़फड़ाहट बड़ी प्रचण्ड थी, वैसी ही जैसी सर्वशक्तिमान परमेश्वर की गरजती वाणी होती है, जब वह बातें करता है।

6परमेश्वर ने सन के वस्त्र पहने हुए व्यक्ति को आदेश दिया था। परमेश्वर ने उसे "तुफानी-बादल" में घुसने के लिये कहा और करुब (स्वर्गदूतों) के बीच से कुछ अंगारे लेने को कहा। इसलिये वह व्यक्ति तूफानी-बादल में घुस गया और गोल चक्रों में से एक के सहारे खड़ा हो गया। 7करुब (स्वर्गदूतों) में से एक ने अपना हाथ बढ़ाया और करुब (स्वर्गदूतों) के क्षेत्र के बीच से कुछ अंगारे लिये। उसने अंगारों को उस व्यक्ति के हाथों में रख दिया और वह व्यक्ति वहाँ से चला गया। (8करुब (स्वर्गदूतों) के पंखों के नीचे कुछ ऐसा था जो मनुष्य की भुजाओं की तरह दिखता था।)

9तब मैंने देखा कि वहाँ चार गोल चक्र थे। हर एक करुब (स्वर्गदूत) की बगल में एक चक्र था, और चक्र स्वच्छ पीले रत्न की तरह दिखते थे। 10वे चार चक्र थे और सब चक्र एक से प्रतीत होते थे। वे ऐसे दिखते थे मानों एक चक्र दूसरे चक्र में हो। 11जब वे चलते थे तो किसी भी दिशा में जा सकते थे। जब कभी वे चलते थे वे चारों एक साथ चलते थे। किन्तु उनके चलने के साथ करुब (स्वर्गदूत) साथ-साथ चक्कर नहीं लगाते थे। वे उस दिशा में चलते थे, जिधर उनका मुख होता था। जब वे चलते थे तो वे इधर-उधर नहीं मुड़ते थे। 12उनके पूरे शरीर पर आँखे थीं। उनकी पीठ, उनकी भुजा, उनके पंख और उनके चक्र में आँखे थीं। हाँ, चारों चक्रों में आँखे थीं! 13मेरे सुनते हुए इन पहियों को चक्कर कहा गया, अर्थात् घूमने वाले पहिए।

14-15हर एक करुब (स्वर्गदूत) चार मुखों वाला था। पहला मुख करुब का था। दूसरा मुख मनुष्य का था। तीसरा सिंह का मुख था और चौथा उकाब का मुख था। तब मैंने जाना कि ये करुब (स्वर्गदूत) वे जानवर थे जिन्हें मैंने कबार नदी के दर्शन में देखा था!

तब करुब (स्वर्गदूत) हवा में उठे। 16उनके साथ चक्र उठे। चक्रों ने अपनी दिशा उस समय नहीं बदली जब करुब (स्वर्गदूत) ने पंख खोले और वे हवा में उड़े। 17यदि करुब (स्वर्गदूत) हवा में उड़ते थे तो चक्र उनके साथ जाते थे। यदि करुब (स्वर्गदूत) शान्त खड़े रहते थे तो चक्र भी वैसा ही करते थे। क्यों? क्योंकि उनमें प्राणियों की आत्मा की शक्ति थी।

18तब यहोवा का तेज मन्दिर की देहली से उठा, करुब (स्वर्गदूतों) के स्थान के ऊपर गया और वहाँ ठहर गया। 19तब करुब (स्वर्गदूतों) ने अपने पंख खोले और हवा में उड़ गए। मैंने उन्हें मन्दिर को छोड़ते देखा! चक्र उनके साथ चले। तब वे यहोवा के मन्दिर के पूर्वी द्वार पर ठहरे। इस्राएल के परमेश्वर का तेज हवा में उनके ऊपर था।

20तब मैंने इस्राएल के परमेश्वर के तेज के नीचे प्राणियों को कबार नदी के दर्शन में याद किया और मैंने अनुभव किया कि वे प्राणी करुब (स्वर्गदूत) थे। 21हर एक प्राणी के चार मुख थे, चार पंख थे और पंखों के नीचे कुछ ऐसा था जो मनुष्य की भुजाओं की तरह दिखता था। 22करुब (स्वर्गदूतों) के वही चार मुख थे जो कबार नदी के दर्शन के प्राणियों के थे और वे सीधे आगे उस दिशा में देखते थे, जिधर वे जा रहे थे।

11 तब आत्मा मुझे यहोवा के मन्दिर के पूर्वी द्वार पर ले गया। इस द्वार का मुख पूर्व को है जहाँ सूरज निकलता है। मैंने इस फाटक के प्रवेश द्वार पर पच्चीस व्यक्ति देखे। अज्जूर का पुत्र याजन्याह उन लोगों के साथ था और बनायाह का पुत्र पलत्याह वहाँ था। पलत्याह लोगों का प्रमुख था।

2तब परमेश्वर ने मुझसे कहा। उसने बताया, "मनुष्य के पुत्र, ये वे व्यक्ति हैं जो इस नगर में बुरी योजना बनाते हैं। ये सदा लोगों को बुरे काम करने को कहते हैं। 3वे लोग कहते हैं, 'हम लोग शीघ्र ही फिर से अपने मकान बनाने लगेंगे। हम लोग पात्र में रखे माँस की तरह इस नगर में सुरक्षित हैं।' 4वे यह झूठ फैला रहे हैं। इसलिये तुम्हें मेरे लिये लोगों से बात करनी चाहिए। मनुष्य के पुत्र! जाओ और लोगों के बीच भविष्यवाणी करो।"

5तब यहोवा की आत्मा मुझमें आई। उसने मुझसे कहा, "उनसे कहो कि यहोवा ने यह सब कहा है: इस्राएल के परिवार, तुम बड़ी योजना बना रहे हो। किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम क्या सोच रहे हो! 6तुमने इस नगर में बहुत से लोगों को मार डाला है। तुमने सड़कों को शवों से पाट दिया है। 7अब हमारा स्वामी यहोवा, यह कहता है, 'वे शव माँस हैं और यह नगर पात्र है। किन्तु वह (नबूकदनेस्सर) आएगा और तुम्हें इस सुरक्षित पात्र से निकाल ले जाएगा! 8तुम तलवार से भयभीत हो। किन्तु मैं तुम्हारे विरुद्ध तलवार ला रहा हूँ।'" हमारे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा है। इसलिये ये घटित होंगी! 9परमेश्वर ने यह भी कहा, "मैं तुम लोगों को इस नगर से बाहर ले जाऊँगा और मैं तुम्हें अजनबियों को सौप दूँगा। मैं तुम लोगों को दण्ड दूँगा! 10तुम तलवार के घाट उतरोगे। मैं तुम्हें यहाँ इस्राएल में दण्ड दूँगा जिससे तुम समझोगे कि वह मैं हूँ जो तुम्हें दण्ड दे रहा हूँ। मैं यहोवा हूँ। 11हाँ, यह स्थान खौलती कड़ाही बनेगा और तुम इसमें के माँस होंगे, जो भूना जाता है! मैं तुम्हें यहाँ इस्राएल में दण्ड दूँगा। 12तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। वह मेरा नियम था जिसे तुमने तोड़ा है! तुमने मेरे आदेशों का पालन नहीं किया। तुमने अपने चारों ओर के राष्ट्रों की तरह रहने का निर्णय किया।"

13जैसे ही मैंने परमेश्वर के लिये बोलना समाप्त किया, बनायाह का पुत्र पलत्याह मर गया! मैं धरती पर गिर पड़ा। मैंने धरती पर माथा टेका और कहा, "हे मेरे स्वामी यहोवा, तू क्या इस्राएल के सभी बचे हुओं को पूरी तरह नष्ट करने पर तुला हुआ है!"

14किन्तु तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 15"मनुष्य के पुत्र, तुम इस्राएल के परिवार के अपने उन भाईयों को याद करो जिन्हें अपने देश को छोड़ने के लिये विवश किया गया था। लेकिन मैं उन्हें वापस लाऊँगा। किन्तु यहाँ यरूशलेम में रहने वाले लोग कह रहे हैं, यहोवा हम से दूर रह। यह भूमि हमें दी गई–यह हमारीहै!"

16इसलिये उन लोगों से यह सब कहो: हमारा स्वामी यहोवा, कहता है, "यह सत्य है कि मैंने अपने लोगों को बहुत दूर के देशों में जाने को विवश किया। मैंने ही उनको बहुत से देशों में बिखेरा और मैं अन्य देशों में उन के लिये थोड़े समय का पवित्र स्थान ठहरुँगा। 17इसलिये तुम्हें उन लोगों से कहना चाहिए कि उनका स्वामी यहोवा, उन्हें वापस लाएगा। मैंने तुम्हें, बहुत से देशों में बिखेर दिया है। किन्तु मैं तुम लोगों को एक साथ इकट्ठा करुँगा और उन राष्ट्रों से तुम्हें वापस लाऊँगा। मैं इस्राएल का प्रदेश तुम्हें वापस दूँगा 18और जब हमारे लोग लौटेंगे तो वे उन सभी भंयकर गन्दी देवमूर्तियों को, जो अब यहाँ है, नष्ट कर देंगे। 19मैं उन्हें एक साथ लाऊँगा और उन्हें एक व्यक्ति सा बनाऊँगा। मैं उनमें नयी आत्मा भरूँगा। मैं उनके पत्थर के हृदय को दूर करुँगा और उसके स्थान पर सच्चा हृदय दूँगा। 20तब वे मेरे नियमों का पालन करेंगे। वे मेरे आदेशों का पालन करेंगे, वे वह कार्य करेंगे जिन्हें मैं करने को कहूँगा। वे सचमुच मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।"

21तब परमेश्वर ने कहा, "किन्तु इस समय उनका हृदय भयंकर गन्दी देवमूर्तियों का हो चुका है। मुझे उन लोगों को उन बुरे कर्मों के लिये दण्ड देना चाहिए जो उन्होंने किया है।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा है।

22तब करुब (स्वर्गदूत) ने अपने पंख खोले और हवा में
उड़ गये। चक्र उनके साथ गए। इस्राएल के परमेश्वर
का तेज उनके ऊपर था। 23यहोवा का तेज ऊपर हवा
में उठा और उसने यरूशलेम को छोड़ दिया। वह क्षण
भर के लिये यरूशलेम के पूर्व की पहाड़ी पर ठहरा।
24तब आत्मा ने मुझे हवा में उठाया और वापस बाबुल
में पहुँचा दिया। उसने मुझे उन लोगों के पास लौटाया,
जो इस्राएल छोड़ने के लिये विवश किये गये थे। तब
दर्शन में परमेश्वर की आत्मा हवा में उठी और मुझे
छोड़ दिया। मैंने उन सभी चीजों को परमेश्वर के दर्शन
में देखा। 25तब मैंने निर्वासित लोगों से बातें की। मैंने वे
सभी बातें बताई जो यहोवा ने मुझे दिखाई थीं।

12 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, तुम विद्रोही लोगों के साथ
रहते हो। वे सदैव मेरे विरुद्ध गये हैं। देखने के लिये
उनकी आँखें हैं जो कुछ मैंने उनके लिये किया है।
किन्तु वे उन चीजों को नहीं देखते। सुनने के लिये
उनके कान हैं, उन चीजों को जो मैंने उन्हें करने को
कहा है। किन्तु वे मेरे आदेश नहीं सुनते। क्यों? क्योंकि
वे विद्रोही लोग हैं। 3इसलिए, मनुष्य के पुत्र अपना
सामान बांध लो। ऐसा व्यवहार करो मानों तुम किसी
दूर देश को जा रहे हो। यह इस प्रकार करो कि लोग
तुम्हें देखते रहें। संभव है, कि वे लोग तुम पर ध्यान दें,
किन्तु वे लोग बड़े विद्रोही लोग हैं।

4"दिन के समय तुम अपना सामान इस प्रकार बाहर
ले जाओ कि लोग तुम्हें देखते रहें। तब शाम को ऐसा
दिखावा करो, कि तुम दूर देश में एक बन्दी की तरह
जा रहे हो। 5लोगों की आँखों के सामने दीवार में एक
छेद बनाओ और उस दीवार के छेद से बाहर जाओ।
6रात को अपना सामान कन्धे पर रखो और उस स्थान
को छोड़ दो। अपने मुँह को ढक लो जिससे तुम यह न
देख सको कि तुम कहाँ जा रहे हो। इन कामों को तुम्हें
इस प्रकार करना चाहिये, कि लोग तुम्हें देख सकें।
क्यों? क्योंकि मैं तुम्हें इस्राएल के परिवार के लिये एक
उदाहरण के रूप में उपयोग कर रहा हूँ।"

7इसलिये मैंने (यहेजकेल ने) आदेश के अनुसार
किया। दिन के समय मैंने अपना सामान उठाया और
ऐसा दिखावा किया मानों मैं किसी दूर देश को जा रहा
हूँ। उस शाम मैंने अपने हाथों का उपयोग किया और
दीवार में एक छेद बनाया। रात को मैंने अपना सामान
कन्धे पर रखा और चल पड़ा। मैंने यह सब इस प्रकार
किया कि सभी लोग मुझे देख सकें।

8अगली सुबह मुझे यहोवा का वचन मिला। उसने
कहा, 9"मनुष्य के पुत्र, क्या इस्राएल के उन विद्रोही
लोगों ने तुमसे पूछा कि तुम क्या कर रहे हो? 10उनसे
कहो कि उनके स्वामी यहोवा ने ये बातें बताई है। यह
दुःखद वचन यरूशलेम के प्रमुखों और वहाँ रहने वाले
इस्राएल के सभी लोगों के बारे में है। 11उनसे कहो, 'मैं
(यहेजकेल) तुम सभी लोगों के लिये एक उदाहरण हूँ।
जो कुछ मैंने किया है वह तुम लोगों के लिये सत्य
होगा।' तुम सचमुच बन्दी के रूप में दूर देश में जाने के
लिये विवश किये जाओगे। 12तुम्हारा प्रमुख दीवार में
छेद करेगा और रात को गुप्त रूप से निकल भागेगा।
वह अपने मुख को ढक लेगा जिससे लोग उसे पहचानेंगे
नहीं। उसकी आँखें, यह देखने के लायक नहीं होंगी कि
वह कहाँ जा रहा है। 13वह भाग निकलने का प्रयत्न
करेगा। किन्तु मैं (परमेश्वर) उसे पकड़ लूँगा! वह मेरे
जाल में फँस जाएगा और मैं उसे बाबुल लाऊँगा जो
कसदियों के लोगों का देश है। किन्तु वह देख नहीं
पाएगा कि वह कहाँ जा रहा है। शत्रु उसकी आँखे
निकाल लेगा और उसे अन्धा कर देगा। 14मैं राजा के
लोगों को विवश करुँगा कि वे इस्राएल के चारों ओर
विदेशों में रहें। मैं उसकी सेना को तितर-बितर कर
दूँगा और शत्रु के सैनिक उनका पीछा करेंगे। 15तब वे
लोग समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ। वे समझेगें कि मैंने उन्हें
राष्ट्रों में बिखेरा। वे समझ जाएंगे कि मैंने उन्हें अन्य
देशों में जाने के लिये विवश किया।

16"किन्तु मैं कुछ लोगों को जीवित रखूँगा। वे रोग,
भूख और युद्ध से नहीं मरेंगे। मैं उन लोगों को इसलिए
जीवित रहने दूँगा, कि वे अन्य लोगों से उन भंयकर
कामों के बारे में कह सकेंगे, जो उन्होंने मेरे विरुद्ध
किये। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

17तब यहोवा का वचन मेरे पास आया। उसने कहा,
18"मनुष्य के पुत्र! तुम्हें ऐसा करना चाहिये मानों तुम
बहुत भयभीत हो। जब तुम खाना खाओ तब तुम्हें काँपना
चाहिए। तुम्हें पानी पीते समय चिन्तित और भयभीत
होने का दिखावा करना चाहिये। 19तुम्हें यह साधारण
जनता से कहना चाहिए। तुम्हें कहना चाहिये, "हमारा
स्वामी यहोवा यरूशलेम के निवासियों और इस्राएल के
अन्य भागों के लोगों से यह कहता है। लोगों, तुम भोजन
करते समय बहुत परेशान होगे। तुम पानी पीते समय
भयभीत होगे। क्यों? क्योंकि तुम्हारे देश में सभी कुछ
नष्ट हो जाएगा। वहाँ रहने वाले सभी लोगों के प्रति शत्रु
बहुत क्रूर होगा। 20तुम्हारे नगरों में इस समय बहुत लोग
रहते हैं, किन्तु वे नगर नष्ट हो जाएंगे। तुम्हारा पूरा देश
नष्ट हो जाएगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

21तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
22"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के प्रदेश के बारे में लोग यह
कहावत क्यों सुनाते हैं: विपत्ति शीघ्र न आएगी, दर्शन
कभी न होंगे।

23"उन लोगों से कहो कि तुम्हारा स्वामी यहोवा
तुम्हारी इस कहावत का पढ़ना बन्द कर देगा। वे इस्राएल
के बारे में वे बातें कभी भी नहीं कहेंगे। अब वे यह
कहावत सुनाएंगे: विपत्ति शीघ्र आएगी। दर्शन घटित होंगे।

24"यह सत्य है कि इस्राएल में कभी भी झूठे दर्शन
घटित नहीं होंगे। अब ऐसे जादूगर भविष्य में नहीं होंगे
जो ऐसी भविष्यवाणी करेंगे जो सच्ची नहीं होगी। 25क्यों?
क्योंकि मैं यहोवा हूँ। मैं वही कहूँगा, जो मैं कहना
चाहूँगा और वह चीज घटित होगी और मैं घटना–काल
को लम्बा खींचने नहीं दूँगा। वे विपत्तियाँ शीघ्र आ रही
हैं। तुम्हारे अपने जीवनकाल में ही। विद्रोही लोगों! जब
मैं कुछ कहता हूँ तो मैं उसे घटित करता हूँ।" मेरे
स्वामी यहोवा ने उन बातों को कहा।

26तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
27"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के लोग समझते हैं कि जो
दर्शन मैं तुझे देता हूँ, वे बहुत दूर के भविष्य में घटित
होंगे। वे समझते हैं, कि जिन विपत्तियों के बारे में तुम
बातें करते हो, वे आज से बहुत वर्षों बाद घटित होंगी।
28अत: तुम्हें उनसे यह कहना चाहिये, 'मेरा स्वामी
यहोवा कहता है: मैं और अधिक विलम्ब नहीं कर
सकता। यदि मैं कहता हूँ, कि कुछ घटित होगा तो वह
घटित होगा।'" मेरे स्वामी यहोवा ने उन बातों को कहा।

13 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। 2"मनुष्य के
पुत्र, तुम्हें इस्राएल के नबियों से मेरे लिये बातें
करनी चाहिये। वे नबी वास्तव में मेरे लिये बातें नहीं
कर रहे हैं। वे नबी वही कुछ कह रहे हैं जो वे कहना
चाहतें हैं।" इसलिये तुम्हें उनसे बातें करनी चाहियें।
उनसे ये बातें कहो, 'यहोवा के यहाँ से मिले इस वचन
को सुनो! 3मेरा स्वामी यहोवा यह वचन देता है। मूर्ख
नबियों! तुम लोगों पर विपत्तियाँ आएंगी। तुम लोग अपनी
आत्मा का अनुसरण कर रहे हो। तुम लोगों से वह नहीं
कह रहे हो जो तुम सचमुच दर्शन में देखते हो।

4"'इस्राएलियों, तुम्हारे नबी शून्य खण्डहरों में दौड़
लगाने वाली लोमड़ियों जैसे होंगे। 5तुमने नगर की टूटी
दीवारों के निकट सैनिक को नहीं रखा है। तुमने
इस्राएल के परिवार की रक्षा के लिये दीवारें नहीं बनाई
हैं। इसलिये यहोवा के लिये, जब तुम्हें दण्ड देने का
समय आएगा तो तुम युद्ध में हार जाओगे!

6"'झूठे नबियों ने कहा, कि उन्होंने दर्शन देखा है।
उन्होंने अपना जादू किया और कहा कि घटनाएँ होंगी,
किन्तु उन्होंने झूठ बोला। उन्होंने कहा कि यहोवा ने
उन्हें भेजा किन्तु उन्होंने झूठ बोला। वे अपने झूठ के
सत्य होने की प्रतीक्षा अब तक कर रहे हैं।

7"'झूठे नबियों, जो दर्शन तुमने देखे, वे सत्य नहीं थे।
तुमने अपने जादू किये और कहा कि कुछ घटित होगा,
किन्तु तुम लोगों ने झूठ बोला। तुम कहते हो कि यह
यहोवा का कथन है, किन्तु मैंने तुम लोगों से बातें
नहींकीं!'"

8अत: मेरा स्वामी यहोवा अब सचमुच कुछ कहेगा,
वह कहता है, "तुमने झूठ बोला। तुमने वे दर्शन देखे जो
सच्चे नहीं थे। इसलिये मैं (परमेश्वर) अब तुम्हारे विरुद्ध
हूँ!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं। 9यहोवा ने
कहा, "मैं उन नबियों को दण्ड दूँगा जिन्होंने असत्य
दर्शन देखे और जिन्होंने झूठ बोला। मैं उन्हें अपने लोगों
से अलग करूँगा। उनके नाम इस्राएल के परिवार की
सूची में नहीं रहेंगे। वे फिर इस्राएल प्रदेश में कभी नहीं
आएंगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा और स्वामी हूँ!

10"उन झूठे नबियों ने बार–बार मेरे लोगों से झूठ
बोला। नबियों ने कहा कि शान्ति रहेगी और वहाँ कोई
शान्ति नहीं है। लोगों को दीवारें दृढ़ करनी हैं और युद्ध
की तैयारी करनी हैं। किन्तु वे टूटी दीवारों पर लेप की
एक पतली तह चढ़ा रहे हैं। 11उन लोगों से कहो कि मैं
ओले और मूसलाधार वर्षा (शत्रु–सेना) भेजूँगा। प्रचण्ड
आँधी चलेगी और चक्रवात आएगा। तब दीवार गिर
जाएगी। 12दीवार नीचे गिर जाएगी। लोग नबियों से पूछेंगे,
'उस लेप का क्या हुआ, जिसे तुमने दीवार पर चढ़ाया
था?'" 13मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं क्रोधित हूँ
और मैं तुम लोगों के विरुद्ध एक तूफान भेजूँगा। मैं
क्रोधित हूँ और मैं घनघोर वर्षा भेजूँगा। मैं क्रोधित हूँ
और मैं आकाश से ओले बरसाऊँगा और तुम्हें पूरी
तरह से नष्ट करूँगा! 14तुम लेप दीवार पर चढ़ाते हो।
किन्तु मैं पूरी दीवार को नष्ट कर दूँगा। मैं इसे धाराशायी
कर दूँगा। दीवार तुम पर गिरेगी और तुम जानोगे कि मैं
यहोवा हूँ। 15मैं, दीवार और उस पर लेप चढ़ाने वालों
के विरुद्ध अपना क्रोध दिखाना समाप्त कर दूँगा। तब
मैं कहूँगा, 'अब कोई दीवार नहीं है और अब कोई
मज़दूर इस पर लेप चढ़ाने वाला नहीं है।'

16"ये सब कुछ इस्राएल के झूठे नबियों के लिये होगा।
वे नबी यरूशलेम के लोगों से बातचीत करते हैं। वे नबी
कहते हैं कि शान्ति होगी, किन्तु कोई शान्ति नहीं है।"
मेरे स्वामी यहोवा ने उन बातों को कहा।

17परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, इस्राएल में स्त्री
नबियों को ढूँढो। वे स्त्री नबी मेरे लिये नहीं बोलतीं। वे
वही कहती हैं जो वे कहना चाहती हैं। अत: तुम्हें मेरे
लिये उनके विरुद्ध कहना चाहिए। तुम्हें उनसे यह कहना
चाहिये। 18'मेरा स्वामी यहोवा कहता है: स्त्रियों, तुम पर
विपत्ति आएगी। तुम लोगों की भुजाओं पर पहनने के
लिये कपड़े का बाजूबन्द सीती हो। तुम लोगों के सिर पर
बांधने के लिये विशेष "दुपट्टा" बनाती हो। तुम कहती
हो कि वे चीजें लोगों के जीवन को नियन्त्रित करने की
जादूई शक्ति रखती हैं। तुम केवल अपने को जीवित
रखने के लिये उन लोगों को जाल में फँसाती हो! 19तुम
लोगों को ऐसा समझाती हो कि मैं महत्वपूर्ण नहीं हूँ।
तुम उन्हें मुट्ठी भर जौ और रोटी के कुछ टुकड़ों के
लिये मेरे विरुद्ध करती हो। तुम मेरे लोगों से झूठ बोलती
हो। वे लोग झूठ सुनना पसन्द करते हैं। तुम उन व्यक्तियों
को मार डालती हो जिन्हें जीवित रहना चाहिये और तुम
ऐसे लोगों को जीवित रहने देना चाहती हो जिन्हें मर

जाना चाहिये! 20इसलिये यहोवा और स्वामी तुमसे यह
कहता है: तुम उन कपड़े के "बाजूबन्दों" को लोगों को
जाल में फँसाने के लिये बनाती हो–किन्तु मैं उन लोगों
को स्वतन्त्र करूँगा। मैं तुम्हारी भुजाओं से उन "बाजूबन्दों"
को फाड़ फेंकूँगा और लोग तुमसे स्वतन्त्र हो जाएंगे। वे
जाल से मुक्त पक्षियों की तरह होंगे! 21मैं उन "बाजूबन्दों"
को फाड़ डालूँगा और अपने लोगों को तुम्हारी शक्ति से
बचाऊँगा। वे लोग तुम्हारे जाल से भाग निकलेंगे और
तुम समझ जाओगी कि मैं यहोवा हूँ।

22"'स्त्री नबियों तुम झूठ बोलती हो। तुम्हारा झूठ
अच्छे लोगों को कष्ट पहुँचाता है, मैं उन अच्छे लोगों
को कष्ट पहुँचाना नहीं चाहता। तुम बुरे लोगों की
सहायता करती हो और उन्हें उत्साहित करती हो। तुम
उन्हें अपना जीवन बदलने के लिये नहीं कहतीं। तुम
उनके जीवन की रक्षा नहीं करना चाहती! 23तुम अब
भविष्य में व्यर्थ दर्शन नहीं देखोगी। तुम भविष्य में जादू
नहीं करोगी। मैं अपने लोगों को तुम्हारी शक्ति से बचाऊँगा
और तुम जान जाओगी कि मैं यहोवा हूँ।'"

14 इस्राएल के कुछ अग्रज (प्रमुख) मेरे पास आए।
वे मुझसे बात करने के लिये बैठ गये। 2यहोवा
का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 3"मनुष्य के पुत्र, ये
व्यक्ति तुमसे बातें करने आए हैं। वे चाहते थे कि तुम
मुझसे राय लो। किन्तु वे व्यक्ति अब तक अपनी गन्दी
देवमूर्तियों को रखे हैं। वे उन चीजों को रखते हैं जो
उनसे पाप कराती हैं। वे अब तक उन मूर्तियों की पूजा
करते हैं। इसलिये वे मेरे पास राय लेने क्यों आते हैं?
क्या मुझे उनके प्रश्नों के उत्तर देने चाहिए? नहीं!
4किन्तु मैं उन्हें उत्तर दूँगा। मैं उन्हें दण्ड दूँगा! तुम्हें उन
लोगों से यह कह देना चाहिये, 'मेरा स्वामी यहोवा कहता
है: यदि कोई इस्राएली व्यक्ति नबी के पास आता है और
मुझसे राय पाने के लिये कहता है तो वह नबी उस
व्यक्ति को उत्तर नहीं देगा। उस व्यक्ति के प्रश्न का
उत्तर मैं स्वयं दूँगा। मैं उसे तब भी उत्तर दूँगा यदि उसने
गन्दी देवमूर्तियाँ रखी हैं, यदि वह उन चीजों को रखता
है जो उससे पाप कराती हैं और यदि वह तब तक उन
मूर्तियों की पूजा करता है। उसकी सारी गन्दी देवमूर्तियों
के होते हुए भी मैं उससे बात करूँगा। 5क्यों? क्योंकि मैं
उनके हृदय को छूना चाहता हूँ। मैं दिखाना चाहता हूँ
कि मैं उनसे प्रेम करता हूँ, यद्यपि उन्होंने मुझे अपनी
गन्दी देवमूर्तियों के लिये छोड़ा।'

6"इसलिये इस्राएल के परिवार से यह सब कहो।
उनसे कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा कहता है। मेरे पास
वापस आओ और अपनी गन्दी देवमूर्तियों को छोड़ दो।
उन भयंकर असत्य देवताओं से मुख मोड़ लो। 7यदि
कोई इस्राएली या इस्राएल में रहने वाला विदेशी मेरे पास
राय के लिये आता है, तो मैं उसे उत्तर दूँगा। मैं उसे तब
भी उत्तर दूँगा यदि उसने गन्दी देवमूर्तियाँ रखी हैं, यदि
वह उन चीजों को रखता है जो उससे पाप कराती हैं
और यदि वह तब तक उन मूर्तियों की पूजा करता है
और यह उत्तर है जिसे मैं उसे दूँगा। 8मैं उस व्यक्ति के
विरुद्ध होऊँगा। मैं उसे नष्ट करूँगा। वह अन्य लोगों के
लिये एक उदाहरण बनेगा। लोग उसकी हँसी उड़ाएंगे। मैं
उसे अपने लोगों से निकाल बाहर करूँगा। तब तुम
जानोगे कि मैं यहोवा हूँ! 9यदि नबी इतना अधिक मूर्ख
है कि वह अपना उत्तर देता है तो मैं उसे दिखा दूँगा कि
वह कितना बड़ा मूर्ख है, मैं उसके विरुद्ध अपनी शक्ति
का उपयोग करूँगा। मैं उसे नष्ट करूँगा और अपने
लोगों, इस्राएल से उसे निकाल बाहर करूँगा। 10इस
प्रकार वह व्यक्ति जो राय के लिए आया और नबी
जिसने उत्तर दिया दोनों एक ही दण्ड पाएंगे। 11क्यों?
क्योंकि इस प्रकार वे नबी मेरे लोगों को मुझसे दूर ले
जाना बन्द कर देंगे। इस प्रकार मेरे लोग अपने पापों से
गन्दा होना बन्द कर देंगे। तब वे मेरे विशेष लोग होंगे
और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।'" मेरे स्वामी यहोवा
ने वह सब बातें कहीं।

12तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
13"मनुष्य के पुत्र, मैं अपने उस राष्ट्र को दण्ड दूँगा जो
मुझे छोड़ता है और मेरे विरुद्ध पाप करता है। मैं उनकी
भोजन आपूर्ति बन्द कर दूँगा। मैं अकाल का समय
उत्पन्न कर सकता हूँ और उस देश से मनुष्यों और
पशुओं को बाहर कर सकता हूँ। 14मैं उस देश को दण्ड
दूँगा चाहे वहाँ नूह, दानिय्येल और अय्यूब रहते हों। वे
लोग अपना जीवन अपनी अच्छाईयों से बचा सकते हैं,
किन्तु वे पूरे देश को नहीं बचा सकते।" मेरे स्वामी
यहोवा ने यह सब कहा।

15परमेश्वर ने कहा, "या, मैं उस पूरे प्रदेश में जंगली
जानवरों को भेज सकता हूँ और वे जानवर सभी लोगों
को मार सकते हैं। जंगली जानवरों के कारण उस देश
से होकर कोई व्यक्ति यात्रा नहीं करेगा। 16यदि नूह,
दानिय्येल और अय्यूब वहाँ रहे होते तो मैं उन तीनों
अच्छे व्यक्तियों को बचा लेता। वे तीनों व्यक्ति स्वयं
अपना जीवन बचा सकते हैं। किन्तु मैं अपने जीवन की
शपथ खाकर कहता हूँ कि वे अन्य लोगों का जीवन
नहीं बचा सकते यहाँ तक कि अपने पुत्र–पुत्रियों का
जीवन भी नहीं। वह बुरा देश नष्ट कर दिया जाएगा!"
मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा।

17परमेश्वर ने कहा, "या, उस देश के विरुद्ध लड़ने
के लिये मैं शत्रु की सेना को भेज सकता हूँ। वे सैनिक
उस देश को नष्ट कर देंगे। मैं उस देश से सभी लोगों
और जानवरों को निकाल बाहर करूँगा। 18यदि नूह,
दानिय्येल और अय्यूब वहाँ रहते तो मैं उन तीनों अच्छे
लोगों को बचा लेता। वे तीनों व्यक्ति स्वयं अपना जीवन
बचा सकते हैं। किन्तु मैं अपने जीवन की शपथ खाकर
कहता हूँ कि अन्य लोगों का जीवन वे नहीं बचा सकते

यहाँ तक कि अपने पुत्र-पुत्रियों का जीवन भी नहीं। वह बुरा देश नष्ट कर दिया जाएगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा।

19परमेश्वर ने कहा, "या, मैं उस देश के विरुद्ध महामारी भेज सकता हूँ। मैं उन लोगों पर अपने क्रोध की वर्षा करूँगा। मैं सभी मनुष्यों और जानवरों को उस देश से हटा दूँगा। 20यदि नूह, दानिय्येल और अय्यूब वहाँ रहते तो मैं उन तीन अच्छे लोगों को बचा लेता क्योंकि वे अच्छे व्यक्ति हैं, वे तीनों व्यक्ति स्वयं अपना जीवन बचा सकते हैं। किन्तु मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ कि अन्य लोगों का जीवन वे नहीं बचा सकते थे यहाँ तक कि अपने पुत्र-पुत्रियों का जीवन भी नहीं!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा।

21तब मेरे स्वामी यहोवा ने कहा, "इसलिये सोचो कि यरूशलेम के लिये यह कितना बुरा होगा, मैं उस नगर के विरुद्ध उन चारों दण्डों को भेजूँगा! मैं शत्रु-सेना, भूखमरी, महामारी, और जंगली जानवर उस नगर के विरुद्ध भेजूँगा। मैं उस देश से सभी लोगों और जानवरों को निकाल बाहर करूँगा! 22उस देश से कुछ लोग बच निकलेंगे। वे अपने पुत्र-पुत्रियों को लाएंगे और तुम्हारे पास सहायता के लिये आएंगे। तब तुम जानोगे कि वे लोग सचमुच कितने बुरे हैं। तुम उन विपत्तियों के सम्बन्ध में उचित होने की धारणा बनाओगे जिन्हें मैं यरूशलेम पर लाऊँगा। 23तुम उनके रहने के ढंग और जो बुरे कार्य वे करते हैं, उन्हें देखोगे। तब तुम समझोगे कि उन लोगों को दण्ड देने का उचित कारण मेरे लिए था।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

15 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, क्या अंगूर की बेल की लकड़ी जंगल के किसी पेड़ की कटी छोटी शाखा से अधिक अच्छी होती है? नहीं! 3क्या तुम अंगूर की बेल की लकड़ी को किसी उपयोग में ला सकते हो? नहीं! क्या तुम उससे तश्तरियाँ लटकाने के लिये खूंटियाँ बना सकते हो? नहीं! 4लोग उस लकड़ी को केवल आग में डालते हैं। कुछ सूखी लकड़ियाँ सिरों से जलना आरम्भ करती है, बीच का भाग आग से काला पड़ जाता है। किन्तु लकड़ी पूरी तरह नहीं जलती। क्या तुम उस जली लकड़ी से कोई चीज बना सकते हो? 5यदि जलने के पहले तुम उस लकड़ी से कोई चीज नहीं बना सकते हो, तो निश्चय ही, उसके जल जाने के बाद उससे कोई चीज नहीं बना सकते! 6इसलिये अंगूर की बेल की लकड़ी के टुकड़े जंगल के किसी पेड़ की लकड़ी के टुकड़ों के समान ही है। लोग उन लकड़ी के टुकड़ों को आग में डालते हैं, और आग उन्हें जलाती है। उसी प्रकार, मैं यरूशलेम के निवासियों को आग में फेंकूँगा!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कही। 7"मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा। किन्तु कुछ लोग उन लकड़ियों की तरह होंगे जो पूरी तरह नहीं जलतीं, उन्हें दण्ड दिया जाएगा, किन्तु वे पूरी तरह नष्ट नहीं किये जाएंगे। तुम देखोगे कि मैं इन लोगों को दण्ड दूँगा और तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ! 8मैं उस देश को नष्ट करूँगा क्योंकि लोगों ने मुझको असत्य देवताओं की पूजा के लिये छोड़ा।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

16 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, यरूशलेम के लोगों को उन भंयकर बुरे कामों को समझाओ जिन्हें उन्होंने किया है। 3तुम्हें कहना चाहिए, 'मेरा स्वामी यहोवा यरूशलेम के लोगों को यह सन्देश देता है: अपना इतिहास देखो। तुम कनान में उत्पन्न हुए थे। तुम्हारा पिता एमोरी था। तुम्हारी माँ हित्ती थी। 4यरूशलेम, जिस दिन तुम उत्पन्न हुए थे, तुम्हारे नाभि-नाल को काटने वाला कोई नहीं था। किसी ने तुम पर नमक नहीं डाला और तुम्हें स्वच्छ करने के लिये नहलाया नहीं। किसी ने तुम्हें वस्त्र में नहीं लपेटा। 5यरूशलेम, तुम सब तरह से अकेले थे। कोई न तुम्हारे प्रति खेद प्रकट करता था, न ही ध्यान देता था। यरूशलेम, जिस दिन तुम उत्पन्न हुए, तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हें मैदान में डाल दिया। तुम तब तक रक्त और झिल्ली में लिपटे थे।

6"'तब मैं (परमेश्वर) उधर से गुजरा। मैंने तुम्हें वहाँ खून से लथपथ पड़ा पाया। तुम खून में सनी थीं, किन्तु मैंने कहा, "जीवित रहो!" हाँ, तुम रक्त में सनी थीं, किन्तु मैंने कहा, "जीवित रहो!" 7मैंने तुम्हारी सहायता खेत में पौधे की तरह बढ़ने में की। तुम बढ़ती ही गई। तुम एक युवती बनी, तुम्हारा ऋतु-धर्म आरम्भ हुआ, तुम्हारे वक्ष-स्थल बढ़े, तुम्हारे केश बढ़ने आरम्भ हुए। किन्तु तुम तब तक वस्त्रहीन और नंगी थीं। 8मैंने तुम पर दृष्टि डाली। मैंने देखा कि तुम प्रेम के लिये तैयार थीं। इसलिये मैंने तुम्हारे ऊपर अपने वस्त्र डाले और तुम्हारी नग्नता को ढका। मैंने तुमसे विवाह करने का वचन दिया। मैंने तुम्हारे साथ वाचा की और तुम मेरी बनीं।'" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

9"मैंने तुम्हें पानी से नहलाया। मैंने तुम्हारे रक्त को धोया और मैंने तुम्हारी त्वचा पर तेल मला। 10मैंने तुम्हें एक सुन्दर पहनावा और कोमल चमड़े के जूते दिये। मैंने तुम्हें एक महीन मलमल और एक रेशमी वस्त्र दिया। 11तब मैंने तुम्हें कुछ आभूषण दिये। मैंने तुम्हारी भुजाओं में बाजूबन्द पहनाए और तुम्हारे गले में हार पहनाया। 12मैंने तुम्हें एक नथ, कुछ कान की बालियाँ और सुन्दर मुकुट पहनने के लिये दिया। 13तुम अपने सोने चाँदी के आभूषणों, अपने मलमल और रेशमी वस्त्रों और कढ़ाई किये पहनावे में सुन्दर दिखती थीं! तुमने उत्तम भोजन किया। तुम अत्याधिक सुन्दर थी और तुम रानी बनीं! 14तुम अपनी सुन्दरता के लिये विख्यात हुई। यह सब कुछ इसलिये हुआ क्योंकि मैंने

तुम्हें इतना अधिक सुन्दर बनाया!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

15परमेश्वर ने कहा, "किन्तु तुमने अपनी सुन्दरता पर विश्वास करना आरम्भ किया। तुमने अपने यश का उपयोग किया और मुझसे विश्वासघात किया। तुमने एक वेश्या की तरह काम किया जो हर गुजरने वाले की हो। तुमने उन सभी को अपने को अर्पित किया! 16तुमने अपने सुन्दर वस्त्र लिये और उनका उपयोग अपनी पूजा के स्थानों को सजाने के लिये किया। तुमने उन स्थानों पर एक वेश्या की तरह काम किया। तुमने अपने को उस हर व्यक्ति को अर्पित किया जो वहाँ आया! 17तब मेरा दिया हुआ सुन्दर आभूषण तुमने लिया और तुमने उस सोने-चाँदी का उपयोग मनुष्यों की मूर्तियाँ बनाने के लिये किया। तुमने उनके साथ भी यौन-सम्बन्ध किया! 18तब तुमने सुन्दर वस्त्र लिये और उन मूर्तियों के लिये पहनावा बनाया। तुमने यह सुगन्धि और धूप-बत्ती को लिया जो मैंने तुम्हें दी थी तथा उसे उन देवमूर्तियों के सामने चढ़ाया! 19मैंने तुम्हें रोटी, मधु और तेल दिये। किन्तु तुमने वह भोजन अपनी देवमूर्तियों को दिया। तुमने उसे अपने असत्य देवताओं को प्रसन्न करने के लिये सुगन्धि के रूप में भेंट किया। तुमने उन असत्य देवताओं के साथ वेश्या जैसा व्यवहार किया!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

20परमेश्वर ने कहा, "तुमने अपने पुत्र-पुत्रियाँ लेकर जिन्हें तूने मेरे लिए जन्म दिया, उन मूर्तियों को बलि चढ़ायी। किन्तु ये वे पाप हैं जो तुमने तब किये जब मुझे धोखा दिया और उन असत्य देवताओं के पास चली गई। 21तुमने मेरे पुत्रों की हत्या की और उन्हें आग के द्वारा उन असत्य देवताओं पर चढ़ाया। 22तुमने मुझे छोड़ा और वे भयानक काम किये और तुमने अपना वह समय कभी याद नहीं किया जब तुम बच्ची थीं। तुमने याद नहीं किया कि जब मैंने तुम्हें पाया तब तुम नंगी थीं और रक्त में छटपटा रही थीं।

23"उन सभी बुरी चीजों के बाद, ओह यरूशलेम, यह तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब बातें कहीं। 24'उन सब बातों के बाद तुमने उस असत्य देवता की पूजा के लिये वह टीला बनाया। तुमने हर एक सड़क के मोड़ पर असत्य देवताओं की पूजा के लिये उन स्थानों को बनाया। 25तुमने अपने टीले हर एक सड़क की छोर पर बनाए। तब तुमने अपने सौन्दर्य का मान घटाया। तुमने इसका उपयोग हर पास से गुजरने वाले को फँसाने के लिये किया। तुमने अपने अधोवस्त्र को ऊपर उठाया जिससे वे तुम्हारी टांगे देख सकें और तब तुम उन लोगों के साथ एक वेश्या के समान हो गई। 26तब तुम उस पड़ोसी मिस्र के पास गई जिसका यौन अंग विशाल था। तुमने मुझे क्रोधित करने के लिये उसके साथ कई बार यौन-सम्बन्ध स्थापित किया। 27इसलिये मैंने तुम्हें दण्ड दिया। मैंने तुम्हें अनुमोदित की गई भूमि का एक भाग ले लिया। मैंने तुम्हारे शत्रु पलिश्तियों की पुत्रियों (नगरों) को वह करने दिया जो वे तुम्हारा करना चाहती थीं। जो पाप तुमने किये उससे उनके भी मर्म पर चोट पहुँची। 28तब तुम अश्शूर के साथ शारीरिक सम्बंध करने गई। किन्तु तुम्हें पर्याप्त न मिल सका। तुम कभी तृप्त न हुई। 29इसलिए तुम कनान की ओर मुड़ी और उसके बाद बाबुल की ओर और तब भी तुम तृप्त न हुई। 30तुम इतनी कमजोर हो। तुमने उन सभी व्यक्तियों (देशों) को पाप करने में लगने दिया। तुमने ठीक एक वेश्या की तरह काम किया।" वे बातें मेरे स्वामी यहोवा ने कहीं।

31"तुमने अपने टीले हर एक सड़क के छोर पर बनाए और तुमने अपनी पूजा के स्थान हर सड़क की मोड़ पर बनाए। और कमाई को तुच्छ जाना। इसलिए तू वेश्या भी न रही। 32तुम व्यभिचारिणी स्त्री। तुमने अपने पति की तुलना में अजनबियों के साथ शारीरिक सम्बंध करना अधिक अच्छा माना। 33अधिकांश वेश्यायें शारीरिक सम्बंध के लिये व्यक्ति को भुगतान करने के लिये विवश करती हैं। किन्तु तुम अपने प्रेमियों को लुभाने के लिये स्वयं भेंट देती हो और उन्हें शारीरिक सम्बन्ध के लिये आमंत्रित करती हो। तुमने अपने चारों ओर के सभी लोगों को अपने साथ शारीरिक सम्बंध के लिये आमन्त्रित किया। 34तुम अधिकांश वेश्याओं के ठीक विपरीत हो। अधिकांश वेश्यायें पुरुषों को अपने भुगतान के लिये विवश करती हैं। किन्तु तुम पुरूषों को अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध का भुगतान करती हो।"

35हे वेश्या, यहोवा से आये वचन को सुनो। 36मेरा स्वामी यहोवा ये बातें कहता है: "तुमने अपनी मुद्रा व्यय कर दी है और अपने प्रेमियों तथा गन्दें देवताओं को अपना नंगा शरीर देखने दिया है तथा अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध करने दिया है। तुमने अपने बच्चों को मारा है और उनका खून बहाया है। वह उन असत्य देवताओं को तुम्हारी भेंट थीं। 37इसलिये मैं तुम्हारे सभी प्रेमियों को एक साथ इकट्ठा कर रहा हूँ। मैं उन सभी को लाऊँगा जिनसे तुमने प्रेम किया तथा जिन मनुष्यों से घृणा की। मैं सभी को एक साथ ले आऊँगा और उन्हें तुम्हें नग्न देखने दूँगा। वे तुम्हें पूरी तरह नग्न देखेंगे। 38तब मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हें किसी हत्यारिन और उस स्त्री की तरह दण्ड दूँगा जिसने व्यभिचार का पाप किया हो। तुम वैसे ही दण्डित होगी मानों कोई क्रोधित और ईर्ष्यालु पति दण्ड दे रहा हो। 39मैं उन सभी प्रेमियों को तुम्हें प्राप्त कर लेने दूँगा। वे तुम्हारे टीलों को नष्ट कर देंगे। वे तुम्हारे पूजा-स्थानों को जला डालेंगे। वे तुम्हारे वस्त्र फाड़ डालेंगे तथा तुम्हारे सुन्दर आभूषण ले लेंगे। वे तुम्हें वैसे वस्त्रहीन और नंगी छोड़ देंगे जैसी तुम

तब थीं जब मैंने तुम्हें पाया था। 40वे अपने साथ विशाल जन–समूह लाएंगे और तुमको मार डालने के लिये तुम्हारे ऊपर पत्थर फेकेंगे। तब अपनी तलवार से वे तुम्हें टुकड़े–टुकड़े कर डालेंगे। 41वे तुम्हारा घर (मन्दिर) जला देंगे। वे तुम्हें इस तरह दण्ड देंगे कि सभी अन्य स्त्रियाँ देख सकें। मैं तुम्हारा वेश्या की तरह रहना बन्द कर दूँगा। मैं तुम्हें अपने प्रेमियों को धन देने से रोक दूँगा। 42तब मैं क्रोधित और ईष्यालु होना छोड़ दूँगा। मैं शान्त हो जाऊँगा। मैं फिर कभी क्रोधित नहीं होऊँगा। 43ये सारी बातें क्यों होंगी? क्योंकि तुमने वह याद नहीं रखा कि तुम्हारे साथ बचपन में क्या घटित हुआ था। तुमने वे सभी बुरे पाप किये और मुझे क्रोधित किया। इसलिये उन बुरे पापों के लिये मुझे तुमको दण्ड देना पड़ा। किन्तु तुमने और भी अधिक भंयकर योजनाएँ बनाई।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

44"तुम्हारे बारे में बात करने वाले सब लोगों के पास एक और बात भी कहने के लिये होगी। वे कहेंगे, 'माँ की तरह ही पुत्री भी है।' 45तुम अपनी माँ की पुत्री हो। तुम अपने पति या बच्चों का ध्यान नहीं रखती हो। तुम ठीक अपनी बहन के समान हो। तुम दोनों ने अपने पतियों तथा बच्चों से घृणा की। तुम ठीक अपने माता–पिता की तरह हो। तुम्हारी माँ हित्ती थी और तुम्हारा पिता एमोरी था। 46तुम्हारी बड़ी बहन शोमरोन थी। वह तुम्हारे उत्तर में अपने पुत्रियों (नगरों) के साथ रहती थी और तुम्हारी छोटी बहन सदोम की थी। वह अपनी पुत्रियों (नगरों) के साथ तुम्हारे दक्षिण में रहती थी! 47तुमने वे सभी भंयकर पाप किये जो उन्होंने किये। किन्तु तुमने वे काम भी किये जो उनसे भी बुरे थे! 48मैं यहोवा और स्वामी हूँ। मैं सदा जीवित हूँ और अपनी जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ कि तुम्हारी बहन सदोम और उसकी पुत्रियों ने कभी उतने बुरे काम नहीं किये जितने तुमने और तुम्हारी पुत्रियों ने किये।"

49परमेश्वर ने कहा, "तुम्हारी बहन सदोम और उसकी पुत्रियाँ घमण्डी थीं। उनके पास आवश्यकता से अधिक खाने को था और उनके पास बहुत अधिक समय था। वे दीन–असहाय लोगों की सहायता नहीं करती थीं। 50सदोम और उसकी पुत्रियाँ बहुत अधिक घमण्डी हो गई और मेरे सामने भंयकर पाप करने लगीं। जब मैंने उन्हें उन कामों को करते देखा तो मैंने दण्ड दिया।"

51परमेश्वर ने कहा, "शोमरोन ने उन पापों का आधा किया जो तुमने किये। तुमने शोमरोन की अपेक्षा बहुत अधिक भंयकर पाप किये! तुमने अपनी बहनों की अपेक्षा अत्याधिक भंयकर पाप किये हैं! सदोम और शोमरोन की तुलना करने पर, वे तुमसे अच्छी लगती हैं। 52इसलिए तुम्हें लज्जित होना चाहिए। तुमने अपनी बहनों की, तुलना में, अपने से अच्छी लगनेवाली बनाया है। तुमने भयंकर पाप किये हैं अत: तुम्हें लज्जित होना चाहिए। 53परमेश्वर ने कहा, "मैंने सदोम और उसके चारों ओर के नगरों को नष्ट किया। मैंने शोमरोन और इसके चारों ओर के नगरों को नष्ट किया। यरूशलेम, मैं तुम्हें नष्ट करूँगा। किन्तु मैं उन नगरों को फिर से बनाऊँगा। यरूशलेम, मैं तुमको भी फिर से बनाऊँगा 54मैं तुम्हें आराम दूँगा। तब तुम उन भंयकर पापों को याद करोगे जो तुमने किये तथा तुम लज्जित होगे। 55इस प्रकार तुम और तुम्हारी बहनें फिर से बनाई जाएंगी। सदोम और उसके चारों ओर के नगर, शोमरोन और उसके चारों ओर के नगर तथा तुम और तुम्हारे चारों ओर के नगर फिर से बनाए जाएंगे।"

56परमेश्वर ने कहा, "अतीत काल में तुम घमण्डी थीं और अपनी बहन सदोम की हँसी उड़ाती थीं। किन्तु तुम वैसा फिर नहीं कर सकोगी। 57तुमने यह दण्डित होने से पहले अपने पड़ोसियों द्वारा हँसी उड़ाना आरम्भ किये जाने के पहले, किया था। एदोम की पुत्रियाँ (नगर) तथा पलिश्ती अब तुम्हारी हँसी उड़ा रही हैं। 58अब तुम्हें उन भंयकर पापों के लिये कष्ट उठाना पड़ेगा जो तुमने किये।" यहोवा ने ये बातें कहीं।

59मेरे स्वामी यहोवा, ने ये सब चीजें कहीं, "तुमने अपने विवाह की प्रतिज्ञा भंग की। तुमने हमारी वाचा का आदर नहीं किया। 60किन्तु मुझे वह वाचा याद है जो उस समय की गई थी जब तुम बच्ची थीं। मैंने तुम्हारे साथ वाचा की थी जो सदैव चलती रहने वाली थी। 61मैं तुम्हारी बहनों को तुम्हारे पास लाऊँगा और मैं उन्हें तुम्हारी पुत्रियाँ बनाऊँगा। यह हमारी वाचा में नहीं था, किन्तु मैं यह तुम्हारे लिये करुँगा। तब तुम उन भंयकर पापों को याद करोगी, जिन्हें तुमने किया और तुम लज्जित होगी। 62अत: मैं तुम्हारे साथ वाचा करुँगा, और तुम जानोगी कि मैं यहोवा हूँ। 63मैं तुम्हारे प्रति अच्छा रहूँगा जिससे तुम मुझे याद करोगी और उन पापों के लिये लज्जित होगी जो तुमने किये। मैं तुम्हें शुद्ध करुँगा और तुम्हें फिर कभी लज्जित नहीं होना पड़ेगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

17 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के परिवार को यह कहानी सुनाओ। उनसे पूछो कि इसका तात्पर्य क्या है? 3उनसे कहो: एक विशाल उकाब (नबूकदनेस्सर) विशाल पंख सहित लबानोन में आया। उकाब के चितकबरे लम्बे पंख थे।

4उस उकाब ने उस विशाल देवदार वृक्ष (लबानोन) के माथे को तोड़ डाला और उसे कनान ले गया। उकाब ने व्यापारियों के नगर में उस शाखा को रखा।

5तब उकाब ने बीजों (लोगों) में से कुछ को कनान से लिया। उसने उन्हें अच्छी भूमि में बोया। उसने एक अच्छी नदी के सहारे उन्हें बोया।

6बीज उगे और वे अंगूर की बेल बने। यह बेल अच्छी थी। बेल ऊँची नहीं थी। किन्तु यह एक बड़े क्षेत्र को ढकने के लिये फैल गई। बेल के तने बने और छोटी बेलें बहुत लम्बी हो गई।

7तब दूसरे बड़े पंखों वाले उकाब ने अंगूर की बेल को देखा। उकाब के लम्बे पंख थे। अंगूर की बेल चाहती थी कि यह नया उकाब उसकी देख–भाल करे। इसलिये इसने अपनी जड़ों को इस उकाब की ओर फैलाया। इसकी शाखायें इस उकाब की ओर फैलीं। इसकी शाखायें उस खेत से दूर फैली जहाँ यह बोई गई थी। अंगूर की बेल चाहती थी कि नया उकाब इसे पानी दे।

8अंगूर की बेल अच्छे खेत में बोई गई थी। यह प्रभूत जल के पास बोई गई थी। यह शाखायें और फल उत्पन्न कर सकती थी। यह एक बहुत अच्छी अंगूर की बेल हो सकती थी।"

9मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं, "क्या तुम समझते हो कि बेल सफल होगी? नहीं! नया उकाब बेल को जमीन से उखाड़ देगा। और पक्षी बेल की जड़ों को तोड़ देगा। वह सारे अंगूर खा जाएगा। तब नयी पत्तियाँ सूखेंगी और मर जाएंगी। वह बेल बहुत कमजोर होगी। इस बेल को जड़ से उखाड़ने के लिए शक्तिशाली अस्त्र–शस्त्र या शक्तिशाली राष्ट्र की जरूरत नहीं होगी।

10क्या यह बेल वहाँ बढ़ेगी जहाँ बोई गई हैं? नहीं, गर्म पुरवाई चलेगी और बेल सूखेगी और मर जाएगी। यह वहीं मरेगी जहाँ यह बोई गई थी।"

11यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 12"इस कहानी की व्याख्या इस्राएल के लोगों के बीच करो, वे सदा मेरे विरुद्ध जाते हैं। उनसे यह कहो: पहला उकाब (नबूकदनेस्सर) बाबुल का राजा है। वह यरूशलेम आया और राजा तथा अन्य प्रमुखों को ले गया। वह उन्हें बाबुल लाया। 13तब नबूकदनेस्सर ने राजा के परिवार के एक व्यक्ति के साथ सन्धि की। नबूकदनेस्सर ने उस व्यक्ति को प्रतिज्ञा करने के लिये विवश किया। इस प्रकार इस व्यक्ति ने नबूकदनेस्सर के प्रति राजभक्त रहने की प्रतिज्ञा की। नबूकदनेस्सर ने इस व्यक्ति को यहूदा का नया राजा बनाया। तब उसने सभी शक्तिशाली व्यक्तियों को यहूदा से बाहर निकाला। 14इस प्रकार यहूदा एक दुर्बल राज्य बन गया, जो राजा नबूकदनेस्सर के विरुद्ध नहीं उठ सकता था। यहूदा के नये राजा के साथ नबूकदनेस्सर ने जो सन्धि की थी उसका पालन करने के लिये लोग विवश किये गये। 15किन्तु इस नये राजा ने किसी भी प्रकार नबूकदनेस्सर के विरुद्ध विद्रोह करने का प्रयत्न किया। उसने सहायता मांगने के लिये मिस्र को दूत भेजे। नये राजा ने बहुत से घोड़े और सैनिक मांगे। इस दशा में, क्या तुम समझते हो कि यहूदा का राजा सफल होगा? क्या तुम समझते हो कि नये राजा के पास पर्याप्त शक्ति होगी कि वह सन्धि को तोड़कर दण्ड से बच सकेगा?"

16मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं अपने जीवन की शपथ खाकर वचन देता हूँ कि यह नया राजा बाबुल में मरेगा! नबूकदनेस्सर ने इस व्यक्ति को यहूदा का नया राजा बनाया। किन्तु इस व्यक्ति ने नबूकदनेस्सर के साथ की हुई अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी। इस नये राजा ने सन्धि की उपेक्षा की। 17मिस्र का राजा यहूदा के राजा की रक्षा करने में समर्थ नहीं होगा। वह बड़ी संख्या में सैनिक भेज सकता है किन्तु मिस्र की महान शक्ति यहूदा की रक्षा नहीं कर सकेगी। नबूकदनेस्सर की सेनायें नगर पर अधिकार के लिये कच्ची सड़कें और मिट्टी की दीवारें बनाएंगी। बड़ी संख्या में लोग मरेंगे। 18किन्तु यहूदा का राजा बचकर निकल नहीं सकेगा। क्यों? क्योंकि उसने अपने सन्धि की उपेक्षा की। उसने नबूकदनेस्सर को दिये अपने वचन को तोड़ा।"

19मेरा स्वामी यहोवा यह वचन देता है, "मैं अपने जीवन की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं यहूदा के राजा को दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि उसने मेरी चेतावनियों की उपेक्षा की। उसने हमारी सन्धि को तोड़ा। 20मैं अपना जाल फैलाऊँगा और वह इसमें फंसेगा। मैं उसे बाबुल लाऊँगा तथा मैं उसे उस स्थान में दण्ड दूँगा। मैं उसे दण्ड दूँगा क्योंकि वह मेरे विरुद्ध उठा। 21मैं उसकी सेना को नष्ट करूँगा। मैं उसके सर्वोत्तम सैनिकों को नष्ट करूँगा और बचे हुए लोगों को हवा में उड़ा दूँगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ और मैंने ये बातें तुमसे कही थीं।"

22मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कही थीं:

"मैं लम्बे देवदार के वृक्ष से एक शाखा लूँगा। मैं वृक्ष की चोटी से एक छोटी शाखा लूँगा। और मैं स्वयं उसे बहुत ऊँचे पर्वत पर बोऊँगा।

23मैं स्वयं इसे इस्राएल में ऊँचे पर्वत पर लगाऊँगा। यह शाखा एक वृक्ष बन जाएगी। इसकी शाखायें निकलेंगी और इसमें फल लगेंगे। यह एक सुन्दर देवदार का वृक्ष बन जाएगा। अनेक पक्षी इसकी शाखाओं पर बैठा करेंगे। अनेक पक्षी इसकी शाखाओं के नीचे छाया में रहेंगे। 24तब अन्य वृक्ष उसे जानेंगे कि मैं ऊँचे वृक्षों को भूमि पर गिराता हूँ। और मैं छोटे वृक्षों को बढ़ाता और उन्हें लम्बा बनाता हूँ। मैं हरे वृक्षों को सुखा देता हूँ। और मैं सूखे वृक्षों को हरा करता हूँ। मैं यहोवा हूँ। यदि मैं कहूँगा कि मैं कुछ करुँगा तो मैं उसे अवश्य करूँगा!"

18 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"तुम लोग इस कहावत को दुहराते रहते हो। क्यों? तुम कहते हो: पूर्वजों ने खट्टे अंगूर खाये, किन्तु बच्चों को खट्टा स्वाद मिला। तुम सोचते हो कि तुम पाप कर सकते हो और भविष्य में कुछ व्यक्ति इसके लिये दण्डित होंगे।"

3किन्तु मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं अपने जीवन
की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि इस्राएल में लोग
अब भविष्य में इस कहावत को कभी सत्य नहीं समझेंगे!
4मैं सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करूँगा। यह
महत्वपूर्ण नहीं होगा कि वह व्यक्ति माता–पिता है अथवा
सन्तान। जो व्यक्ति पाप करेगा वह व्यक्ति मरेगा!

5"यदि कोई व्यक्ति भला है, तो वह जीवित रहेगा। वह
भला व्यक्ति लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करता है।
6वह भला व्यक्ति पहाड़ों पर नहीं जाता और असत्य
देवताओं को चढ़ाए गए भोजन में कोई हिस्सा नहीं
बंटाता। वह इस्राएल में उन गन्दें देवताओं की मूर्तियों
की स्तुति नहीं करता। वह अपने पड़ोसी की पत्नी के
साथ व्यभिचार का पाप नहीं करता। वह अपनी पत्नी
के साथ, उसके मासिक धर्म के समय, शारीरिक सम्बंध
नहीं करता। 7वह भला व्यक्ति लोगों से अनुचित लाभ
नहीं उठाता। यदि कोई व्यक्ति उससे मुद्रा ऋण लेता है
तो वह भला व्यक्ति गिरवी रखकर दूसरे व्यक्ति को मुद्रा
देता है और जब वह व्यक्ति उसे भुगतान कर देता है तो
भला व्यक्ति उसे गिरवी वस्तु वापिस कर देता है। भला
व्यक्ति भूखे लोगों को भोजन देता है और वह उन लोगों
को वस्त्र देता है जिन्हें उनकी आवश्यकता है। 8यदि
कोई मुद्रा ऋण लेना चाहता है तो भला व्यक्ति उसे
ऋण देता है। वह उस ऋण का ब्याज नहीं लेता। भला
व्यक्ति कुटिल होने से इन्कार करता है। वह हर व्यक्ति
के प्रति सदा भला रहता है। लोग उस पर विश्वास कर
सकते हैं। 9वह मेरे नियमों का पालन करता है। वह
मेरे निर्णयों को समझता है और भला एवं विश्वसनीय
होना सीखता है। क्योंकि वह भला व्यक्ति है, अत: वह
जीवित रहेगा।

10"किन्तु उस व्यक्ति का कोई ऐसा पुत्र हो सकता है,
जो उन अच्छे कामों में से कुछ भी न करता हो। पुत्र
चीजें चुरा सकता है तथा लोगों की हत्या कर सकता
है। 11पुत्र इन बुरे कामों में से कोई भी काम कर
सकता है। वह पहाड़ों पर जा सकता है और असत्य
देवताओं को चढ़ाए गए भोजन में हिस्सा बटा सकता है।
वह पापी पुत्र अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ व्यभिचार
करने का पाप कर सकता है। 12वह गरीब और असहाय
लोगों के साथ बुरा व्यवहार कर सकता है। वह लोगों से
अनुचित लाभ उठा सकता है। वह गिरवी चीज को तब
भी न लौटाये जब कोई व्यक्ति अपने ऋण का भुगतान
कर चुका हो। वह पापी पुत्र उन गन्दी देवमूर्तियों की
प्रार्थना कर सकता है एवं अन्य भयंकर पाप भी कर
सकता है। 13किसी व्यक्ति को उस पापी पुत्र से ऋण
लेने की आवश्यकता हो सकती है। वह पुत्र उसे मुद्रा
ऋण दे सकता है, किन्तु वह उस व्यक्ति को उस ऋण
पर ब्याज देने के लिये विवश करेगा। अत: वह पापी
पुत्र जीवित नहीं रहेगा। उसने भंयकर पाप किये अत:
मार दिया जाएगा और अपनी मृत्यु के लिये वह स्वयं ही
उत्तरदायी है।

14"संभवत: उस पापी पुत्र का भी एक पुत्र हो। किन्तु
यह पुत्र अपने पिता द्वारा किये गए पाप–कर्मों को देख
सकता है और वह अपने पिता की तरह रहने से
इन्कार कर सकता है। वह भला व्यक्ति लोगों के साथ
भला व्यवहार करता है। 15वह व्यक्ति पहाड़ों पर नहीं
जाता, न ही असत्य देवताओं को चढ़ाए गए भोजन में
हिस्सा बटाता है। वह इस्राएल में उन गन्दी देवमूर्तियों की
प्रार्थना नहीं करता। वह अपने पड़ोसी की पत्नी के
साथ व्यभिचार का पाप नहीं करता। 16वह भला पुत्र
लोगों से अनुचित लाभ नहीं उठाता। यदि कोई व्यक्ति
उससे ऋण लेता है तब भला पुत्र चीज गिरवी रखता है
और उस व्यक्ति को मुद्रा दे देता है और जब वह व्यक्ति
वापस भुगतान करता है तो भला व्यक्ति गिरवी चीज
वापस कर देता है। भला व्यक्ति भूखों को भोजन देता है
और वह उन लोगों को वस्त्र देता है जिन्हें उसकी
आवश्यकता है। 17वह गरीबों की सहायता करता है
यदि कोई व्यक्ति ऋण लेना चाहता है तो भला पुत्र उसे
मुद्रा उधार दे देता है और वह उस ऋण पर ब्याज नहीं
लेता। भला पुत्र मेरे नियमों का पालन करता है और
मेरे नियम के अनुसार चलता है! वह भला पुत्र अपने
पिता के पापों के कारण मारा नहीं जायेगा! वह भला
पुत्र जीवित रहेगा। 18पिता लोगों को चोट पहुँचा सकता
है और चीजें चुरा सकता है! वह मेरे लोगों के लिये
कभी कुछ अच्छा कार्य नहीं कर सकता। वह पिता
अपने पापों के कारण मरेगा। किन्तु पुत्र अपने पिता के
पापों के लिये दण्डित नहीं होगा।

19"तुम पूछ सकते हो, 'पिता के पाप के लिये पुत्र
दण्डित क्यों नहीं होगा?' इसका कारण यह है कि पुत्र
भला रहा और उसने अच्छे काम किये! उसने बहुत
सावधानी से मेरे नियमों का पालन किया! अत: वह
जीवित रहेगा। 20जो व्यक्ति पाप करता है वही व्यक्ति
मार डाला जाता है। एक पुत्र अपने पिता के पापों के
लिये दण्डित नहीं होगा और एक पिता अपने पुत्र के
पापों के लिये दण्डित नहीं होगा। एक भले व्यक्ति की
भलाई केवल उसकी निजी होती है और बुरे व्यक्ति की
बुराई केवल उसी की होती है।

21"इस स्थिति में यदि कोई बुरा व्यक्ति अपना
जीवन–क्रम परिवर्तित करता है तो वह जीवित रहेगा,
मरेगा नहीं वह व्यक्ति अपने किये पापों को फिर करना
छोड़ सकता है। वह बहुत सावधानी से मेरे सभी नियमों
का पालन करना आरम्भ कर सकता है। वह न्यायशील
और भला हो सकता है। 22परमेश्वर उसके उन सभी
पापों को याद नहीं रखेगा जिन्हें उसने किये। परमेश्वर
केवल उसकी भलाई को याद करेगा, अत: वह व्यक्ति
जीवित रहेगा।"

23मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं बुरे लोगों को मरने देना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि वे अपने जीवन को बदलें, जिससे वे जीवित रह सकें!

24"ऐसा भी हो सकता है, कि भला व्यक्ति भला न रह जाय। वह अपने जीवन को बदल सकता है और उन भयंकर पापों का करना आरम्भ कर सकता है जिन्हें बुरे लोगों ने भूतकाल में किया था। (वह बुरा व्यक्ति बदल गया अत: वह जीवित रह सकता है।) अत: यदि वह भला व्यक्ति बदलता है और बुरा बन जाता है तो परमेश्वर उस व्यक्ति के किये अच्छे कामों को याद नहीं रखेगा। परमेश्वर यही याद रखेगा कि वह व्यक्ति उसके विरुद्ध हो गया और उसने पाप करना आरम्भ किया। इसलिये वह व्यक्ति अपने पापों के कारण मरेगा।"

25परमेश्वर ने कहा, "तुम लोग कह सकते हो, 'परमेश्वर हमारा स्वामी न्यायपूर्ण नहीं है।' किन्तु इस्राएल के परिवारों, सुनों! मैं उसी प्रकार का हूँ। तुम लोग ऐसे हो कि जरुर बदलोगे! 26यदि एक भला व्यक्ति बदलता है और पापी बनता है तो उसे अपने किये गये बुरे कामों के कारण मरना ही चाहिए। 27यदि कोई पापी व्यक्ति बदलता है और भला तथा न्याय प्रिय बनता है तो वह अपने जीवन को बचाएगा। वह जीवित रहेगा! 28उस व्यक्ति ने देखा कि वह कितना बुरा था और मेरे पास लौटा। उसने उन बुरे पापों को करना छोड़ दिया जो उसने भूतकाल में किये थे। अत: वह जीवित रहेगा! वह मरेगा नहीं!"

29इस्राएल के लोगों ने कहा, "यह न्यायपूर्ण नहीं है! मेरा स्वामी यहोवा न्यायपूर्ण नहीं है!"

परमेश्वर ने कहा, "मैं उसी प्रकार का हूँ। तुम ऐसे लोग हो जो बदलोगे ही! 30क्यों? क्योंकि इस्राएल के परिवार, मैं हर एक व्यक्ति के साथ न्याय केवल उसके उन कर्मो के लिये करुँगा जिन्हें वह व्यक्ति करता है!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं: "इसलिये मेरे पास लौटो! पाप करना छोड़ो! उन भयंकर चीजों (मूर्तियों) को अपने द्वारा पाप मत करने दो! 31उन सभी भयंकर चीजों (मूर्तियों) को फेंक दो जिन्हें तुमने बनाया, वे तुमसे केवल पाप करवाते हैं! अपने हृदय और आत्मा को बदलो! इस्राएल के लोगों, तुम अपने को क्यों मर जाने देना चाहते हो? 32मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता! तुम हमारे पास आओ और रहो!" वे बातें मेरे स्वामी यहोवा ने कहीं।

19 यहोवा ने मुझसे कहा, "तुम्हें इस्राएल के प्रमुखों के विषय में इस करुण-गीत को गाना चाहिये।

2'कैसी सिंहनी है तुम्हारी माँ? वह सिहों के बीच एक सिंहनी थी। वह जवान सिंहों से घिरी रहती थी और अपने बच्चों का लालन पालन करती थी।

3उन सिंह-शावकों में से एक उठता है वह एक शक्तिशाली युवा सिंह हो गया है। उसने अपना भोजन पाना सीख लिया है। उसने एक व्यक्ति को मारा और खा गया।

4लोगों ने उसे गरजते सुना और उन्होंने उसे अपने जाल में फँसा लिया! उन्होंने उसके मुँह में नकेल डालीं और युवा सिंह को मिस्र ले गये।

5सिंह माता को आशा थी कि सिंह-शावक प्रमुख बनेगा। किन्तु अब उसकी सारी आशायें लुप्त हो गई। इसलिये अपने शावकों में से उसने एक अन्य को लिया। उसे उसने सिंह होने का प्रशिक्षण दिया।

6वह युवा सिंहों के साथ शिकार को निकला। वह एक बलवान युवा सिंह बना। उसने अपने भोजन को पकड़ना सीखा। उसने एक आदमी को मारा और उसे खाया। 7उसने महलों पर आक्रमण किया। उसने नगरों को नष्ट किया। उस देश का हर एक व्यक्ति तब भय से अवाक होता था। जब वह उसका गरजना सुनता था।

8तब उसके चारों ओर रहने वाले लोगों ने उसके लिये जाल बिछाया और उन्होंने उसे अपने जाल में फँसा लिया।

9उन्होंने उस पर नकेल लगाई और उसे बन्द कर दिया। उन्होंने उसे अपने जाल में बन्द रखा। इस प्रकार उसे वे बाबुल के राजा के पास ले गए। अब, तुम इस्राएल के पर्वतों पर उसकी गर्जना सुन नहीं सकते।

10तुम्हारी माँ एक अंगूर की बेल जैसी थी, जिसे पानी के पास बोया गया था। उसके पास काफी जल था, इसलिये उसने अनेक शक्तिशाली बेलें उत्पन्न कीं।

11तब उसने एक बड़ी शाखा उत्पन्न की, वह शाखा टहलने की छड़ी जैसी थी। वह शाखा राजा के राजदण्ड जैसी थी। बेल ऊँची, और ऊँची होती गई। इसकी अनेक शाखायें थीं और वह बादलों को छूने लगी।

12किन्तु बेल को जड़ से उखाड़ दिया गया, और उसे भूमि पर फेंक दिया गया। गर्म पुरवाई हवा चली और उसके फलों को सुखा दिया शक्तिशाली शाखायें टूट गई, और उन्हें आग में फेंक दिया गया।

13 किन्तु वह अंगूर की बेल अब मरूभूमि में बोयी गई है। यह बहुत सूखी और प्यासी धरती है।

14विशाल शाखा से आग फैली। आग ने उसकी सारी टहनियों और फलों को जला दिया। अत: कोई सहारे की शक्तिशाली छड़ी नहीं रही। कोई राजा का राजदण्ड न रहा।'

यह मृत्यु के बारे में करुण-गीत था और यह मृत्यु के बारे में करुणगीत के रूप में गाया गया था।"

20 एक दिन इस्राएल के अग्रजों (प्रमुखों) में से कुछ मेरे पास यहोवा की राय पूछने आए। यह पाँचवें महीने (अगस्त) का दसवाँ दिन और देश-निकाले का सातवाँ वर्ष था। अग्रज (प्रमुख) मेरे सामने बैठे।

2तब यहोवा का वचन मेरे पास आया। उसने कहा, 3"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के अग्रजों (प्रमुखों) से बात

करो। उनसे कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा, ये बातें बताता है: क्या तुम लोग मेरी सलाह मांगने आये हो? यदि तुम लोग आए हो तो मैं तुम्हें यह नहीं दूँगा। मेरे स्वामी यहोवा ने यह बात कही।' 4"क्या तुम्हें उनका निर्णय करना चाहिए? मनुष्य के पुत्र क्या तुम उनका निर्णय करोगे? तुम्हें उन्हें उन भंयकर पापों के बारे में बताना चाहिए जो उनके पूर्वजों ने किये थे। 5तुम्हें उनसे कहना चाहिए, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: जिस दिन मैंने इस्राएल को चुना, मैंने अपना हाथ याकूब के परिवार के ऊपर उठाया और मैने मिस्र देश में उनसे एक प्रतिज्ञा की। मैंने अपना हाथ उठाया और कहा: मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 6उस दिन मैंने तुम्हें मिस्र से बाहर लाने का वचन दिया था और मैं तुमको उस प्रदेश में लाया जिसे मैं तुम्हें दे रहा था। वह एक अच्छा देश था जो अनेक अच्छी चीजों से भरा था। यह सभी देशों से अधिक सुन्दर था!

7"मैंने इस्राएल के परिवार से उनकी भंयकर देवमूर्तियों को फेंकने के लिये कहा। मैंने, उन मिस्र की गन्दी देवमूर्तियों के साथ उन्हें गन्दा न होने के लिये कहा। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 8किन्तु वे मेरे विरुद्ध हो गये और उन्होंने मेरी एक न सुनी। उन्होंने अपनी भंयकर देवमूर्तियों को नहीं फेंका। उन्होंने अपनी गन्दी देवमूर्तियों को मिस्र में नहीं छोड़ा। इसलिये मैंने (परमेश्वर ने) उन्हें मिस्र में नष्ट करने का निर्णय किया अर्थात् अपने क्रोध की पूरी शक्ति का अनुभव कराना चाहा। 9किन्तु मैंने उन्हें नष्ट नहीं किया। मैं लोगों से जहाँ वे रह रहे थे पहले ही कह चुका था कि मैं अपने लोगों को मिस्र से बाहर ले जाऊँगा। मैं अपने अच्छे नाम को समाप्त नहीं करना चाहता, इसलिये मैंने उन लोगों के सामने इस्राएलियों को नष्ट नहीं किया। 10मैं इस्राएल के परिवार को मिस्र से बाहर लाया। मैं उन्हें मरूभूमि में ले गया। 11तब मैंने उनको अपने नियम दिये। मैंने उनको सारे नियम बताये। यदि कोई व्यक्ति उन नियमों का पालन करेगा तो वह जीवित रहेगा। 12मैंने उनको विश्राम के सभी विशेष दिनों के बारे में भी बताया। वे पवित्र दिन उनके और मेरे बीच विशेष प्रतीक थे। वे यह संकेत करते थे कि मैं यहोवा हूँ और मैं उन्हें अपने विशेष लोग बना रहा हूँ।

13"किन्तु इस्राएल का परिवार मरूभूमि में मेरे विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। उन्होंने मेरे नियमों का अनुसरण नहीं किया। उन्होंने मेरे नियमों का पालन करने से इनकार किया और वे नियम अच्छे हैं। यदि कोई व्यक्ति उनका पालन करेगा तो वह जीवित रहेगा। उन्होंने मेरे विशेष विश्राम के दिनों के प्रति ऐसा व्यवहार किया मानो उनका कोई महत्व न हो। वे उन दिनों में अनेकों बार काम करते रहे। मैंने मरूभूमि में उन्हें नष्ट करने का निश्चय किया अर्थात अपने क्रोध की पूरी शक्ति का अनुभव उन्हें कराना चाहा। 14किन्तु मैंने उन्हें नष्ट नहीं किया। अन्य राष्ट्रों ने मुझे इस्राएल को मिस्र से बाहर लाते देखा। मैं अपने अच्छे नाम को समाप्त नहीं करना चाहता था, इसलिये मैंने उन राष्ट्रों के सामने इस्राएल को नष्ट नहीं किया। 15मैंने मरूभूमि में उन लोगों को एक और वचन दिया। मैंने वचन दिया कि मैं उन्हें उस प्रदेश में नहीं लाऊँगा जिसे मैं उन्हें दे रहा हूँ। वह अनेक चीजों से भरा एक अच्छा प्रदेश था। यह सभी देशों से अधिक सुन्दर था।

16"इस्राएल के लोगों ने मेरे नियमों का पालन करने से इन्कार किया। उन्होंने मेरे नियमों का अनुसरण नहीं किया। उन्होंने मेरे विश्राम के दिनों को ऐसे लिया मानो वे महत्व नहीं रखते। उन्होंने ये सभी काम इसलिये किये कि उनका हृदय उन गन्दी देवमूर्तियों का हो चुका था। 17किन्तु मुझे उन पर करूणा आई, अत: मैंने उन्हें नष्ट नहीं किया। मैंने उन्हें मरूभूमि में पूरी तरह नष्ट नहीं किया। 18मैंने उनके बच्चों से बातें कीं। मैंने उनसे कहा, 'अपने माता पिता जैसे न बनो। उनकी गन्दी देवमूर्तियों से अपने को गन्दा न बनाओ। उनके नियमों का अनुसरण न करो। उनके आदेशों का पालन न करो। 19मैं यहोवा हूँ। मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मेरे नियमों का पालन करो। मेरे आदेशों को मानो। वह काम करो जो मैं कहूँ। 20यह प्रदर्शित करो कि मेरे विश्राम के दिन तुम्हारे लिये महत्वपूर्ण हैं। याद रखो कि वे तुम्हारे और हमारे बीच विशेष प्रतीक हैं। मैं यहोवा हूँ और वे पवित्र दिन यह संकेत करते हैं कि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ।

21"'किन्तु वे बच्चे मेरे विरुद्ध हो गये। उन्होंने मेरे नियमों का पालन नहीं किया। उन्होंने मेरे आदेश नहीं माने। उन्होंने वे काम नहीं किये जो मैंने उनसे कहा वे अच्छे नियम थे। यदि कोई उनका पालन करेगा तो वह जीवित रहेगा। उन्होंने मेरे विश्राम के दिनों को ऐसे लिया मानों वे महत्व न रखते हों। इसलिये मैंने उन्हें मरूभूमि में पूरी तरह नष्ट करने का निश्चय किया जिससे वे मेरे क्रोध की पूरी शक्ति का अनुभव कर सकें। 22लेकिन मैंने अपने को रोक लिया। अन्य राष्ट्रों ने मुझे इस्राएल को मिस्र से बाहर लाते देखा। जिससे मेरा नाम अपवित्र न हो। इसलिये मैंने उन अन्य देशों के सामने इस्राएल को नष्ट नहीं किया। 23इसलिये मैंने मरुभूमि में उन्हें एक और वचन दिया। मैंने उन्हें विभिन्न राष्ट्रों में बिखेरने और दूसरे अनेकों देशों में भेजने की प्रतीज्ञा की।

24"'इस्राएल के लोगों ने मेरे आदेश का पालन नहीं किया। उन्होंने मेरे नियमों को मानने से इन्कार कर दिया। उन्होंने मेरे विशेष विश्राम के दिनों को ऐसे लिया मानो वे महत्व न रखते हों। उन्होंने अपने पूर्वजों की गन्दी देवमूर्तियों को पूजा। 25इसलिये मैंने उन्हें वे नियम

दिये जो अच्छे नहीं थे। मैंने उन्हें वे आदेश दिये जो उन्हें सजीव नहीं कर सकते थे। 26मैंने उन्हें अपनी भेंटों से अपने आप को गन्दा बनाने दिया। उन्होंने अपने प्रथम उत्पन्न बच्चों तक की बलि चढ़ानी आरम्भ कर दी। इस प्रकार मैंने उन लोगों को नष्ट करना चाहा। तब वे समझे कि मैं यहोवा हूँ।' 27अत: मनुष्य के पुत्र, अब इस्राएल के परिवार से कहो। उनसे कहो कि मेरा स्वामी यहोवा ये बातें कहता है: इस्राएल के लोगों ने मेरे विरुद्ध बुरी बातें कहीं और मेरे विरुद्ध बुरी योजनायें बनाई। 28किन्तु मैं इसके होते हुए भी, उन्हें उस प्रदेश में लाया जिसे देने का वचन मैंने दिया था। उन्होंने उन पहाड़ियों और हरे वृक्षों को देखा अत: वे उन सभी स्थानों पर पूजा करने गये। वे अपनी बलियाँ तथा क्रोध-भेंटें उन सभी स्थानों को ले गए। उन्होंने अपनी वे बलियाँ चढ़ाई जो मधुर गन्ध वाली थी और उन्होंने अपनी पेय-भेंटे उन स्थानों पर चढ़ाई। 29मैंने इस्राएल के लोगों से पूछा कि वे उन ऊँचे स्थान पर क्यों जा रहे हैं। लेकिन वे ऊँचे स्थान आज भी वहाँ हैं।'"

30परमेश्वर ने कहा, "इस्राएल के लोगों ने उन सभी बुरे कामों को किया। अत: इस्राएल के लोगों से बात करो। उनसे कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: तुम लोगों ने उन कामों को करके अपने को गन्दा बना लिया है जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने किया। तुमने एक वेश्या की तरह काम किया है। तुमने उन भयंकर देवताओं के साथ मुझे छोड़ दिया है जिनकी पूजा तुम्हारे पूर्वज करते थे। 31तुम उसी प्रकार की भेंट चढ़ा रहे हो। तुम अपने बच्चों को आग में (असत्य देवताओं की भेंट के रूप में) डाल रहे हो। तुम अपने को आज भी गन्दी देवमूर्तियों से गन्दा बना रहे हो! क्या तुम सचमुच सोचते हो कि मैं तुम्हें अपने पास आने दूँगा और अपनी सलाह मांगने दूँगा? मैं यहोवा और स्वामी हूँ। मैं अपने जीवन की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर नहीं दूँगा और तुम्हें सलाह नहीं दूँगा! 32तुम कहते रहते हो कि तुम अन्य राष्ट्रों की तरह होओगे। तुम उन राष्ट्रों के लोगों की तरह रहते हो। तुम लकड़ी और पत्थर के खण्डों (देवमूर्तियों) की पूजा करते हो!'"

33मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "अपने जीवन की शपथ खाकर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हारे ऊपर राजा की तरह शासन करुँगा। मैं अपनी शक्तिशाली भुजाओं को उठाऊँगा और तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट करुँगा! 34मैं तुम्हें इन अन्य राष्ट्रों से बाहर लाऊँगा। मैंने तुम लोगों को उन राष्ट्रों में बिखेरा। किन्तु मैं तुम लोगों को एक साथ इकट्ठा करुँगा और इन राष्ट्रों से वापस लौटाऊँगा। किन्तु मैं अपनी शक्तिशाली भुजाएं उठाऊँगा और तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट करुँगा! 35मैं पहले की तरह तुम्हें मरूभूमि में ले चलूँगा। किन्तु यह वह स्थान होगा जहाँ अन्य राष्ट्र रहते हैं। हम आमने-सामने खड़े होंगे और मैं तुम्हारे साथ न्याय करुँगा। 36मैं तुम्हारे साथ वैसा ही न्याय करुँगा जैसा मैंने तुम्हारे पूर्वजों के साथ मिस्र की मरूभूमि में किया था।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

37"मैं तुम्हें अपराधी प्रमाणित करूँगा और साक्षीपत्र के अनुसार तुम्हें दण्ड दूँगा। 38मैं उन सभी लोगों को दूर करुँगा जो मेरे विरुद्ध खड़े हुए और जिन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किये। मैं उन लोगों को तुम्हारी जन्मभूमि से दूर करुँगा। वे इस्राएल देश में फिर कभी नहीं लौटेंगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

39इस्राएल के परिवार, अब सुनो, मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "यदि कोई व्यक्ति अपनी गन्दी देवमूर्तियों की पूजा करना चाहता है तो उसे जाने दो और पूजा करने दो। किन्तु बाद में यह न सोचना कि तुम मुझसे कोई सलाह पाओगे! तुम मेरे नाम को भविष्य में और अधिक अपवित्र नहीं कर सकोगे! उस समय नहीं, जब तुम अपने गन्दी देवमूर्तियों को भेंट देना जारी रखते हो।"

40मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "लोगों को मेरी सेवा के लिये मेरे पवित्र पर्वत-इस्राएल के ऊँचे पर्वत पर आना चाहिए! इस्राएल का सारा परिवार अपनी भूमि पर होगा वे वहाँ अपने देश में होंगे। यह वह ही स्थान है जहाँ तुम आ सकते हो और मेरी सलाह मांग सकते हो और तुम्हें उस स्थान पर मुझे अपनी भेंट चढ़ाने आना चाहिये। तुम्हें अपनी फसल का पहला भाग वहाँ उस स्थान पर लाना चाहिये। तुम्हें अपनी सभी पवित्र भेंटें वहीं लानी चाहिये। 41तब तुम्हारी भेंट की मधुर गन्ध से मैं प्रसन्न होऊँगा। यह सब होगा जब मैं तुम्हें वापस लाऊँगा। मैंने तुम्हें विभिन्न राष्ट्रों में बिखेरा था। किन्तु मैं तुम्हें एक साथ इकट्ठा करुँगा और तुम्हें फिर से अपने विशेष लोग बनाऊँगा और सभी राष्ट्र यह देखेंगे। 42तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ। तुम यह तब जानोगे जब मैं तुम्हें इस्राएल देश में वापस लाऊँगा। यह वही देश है जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को देने का वचन दिया था। 43उस देश में तुम उन बुरे पापों को याद करोगे जिन्होंने तुम्हें दोषी बनाया और तुम लज्जित होगे। 44इस्राएल के परिवार! तुमने बहुत बुरे काम किये और तुम लोगों को उन बुरे कामों के कारण नष्ट कर दिया जाना चाहिए। किन्तु अपने नाम की रक्षा के लिये मैं वह दण्ड तुम लोगों को नहीं दूँगा जिसके पात्र तुम लोग हो। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।"

45तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 46"मनुष्य के पुत्र, यहूदा के दक्षिण भाग नेगव की ओर ध्यान दो। नेगव-वन के विरुद्ध कुछ कहो। 47नेगव-वन से कहो, 'यहोवा के सन्देश को सुनो। मेरे स्वामी यहोवा

ने ये बातें कहीं: ध्यान दो, मैं तुम्हारे वन में आग लगाने वाला हूँ। आग हर एक हरे वृक्ष और हर एक सूखे वृक्ष को नष्ट करेगी। जो लपटें जलेंगी उन्हें बुझाया नहीं जा सकेगा। दक्षिण से उत्तर तक सारा देश अग्नि से जला दिया जाएगा। 48तब लोग जानेंगे कि मैंने अर्थात यहोवा ने आग लगाई है। आग बुझाई नहीं जा सकेगी!'"

49तब मैंने (यहेजकेल) ने कहा, "हे मेरे स्वामी यहोवा! यदि मैं इन बातों को कहता हूँ तो लोग कहेंगे कि मैं उन्हें केवल कहानियाँ सुना रहा हूँ। वे नहीं सोचेंगे कि यह सचमुच घटित होगा!"

21 इसलिये यहोवा का वचन मुझे फिर मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, यरूशलेम की ओर ध्यान दो और उसके पवित्र स्थानों के विरुद्ध कुछ कहो। मेरे लिये इस्राएल देश के विरुद्ध कुछ कहो। 3इस्राएल देश से कहो, 'यहोवा ने ये बातें कहीं हैं: मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ! मैं अपनी तलवार म्यान से बाहर निकालूँगा! मैं सभी लोगों को तुमसे दूर करूँगा, अच्छे और बुरे दोनों को! 4मैं अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के व्यक्तियों को तुमसे अलग करूँगा। मैं अपनी तलवार म्यान से निकालूँगा और दक्षिण से उत्तर तक के सभी लोगों के विरुद्ध उसका उपयोग करूँगा। 5तब सभी लोग जानें कि मैं यहोवा हूँ और वे जान जाएंगे कि मैंने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली है। मेरी तलवार म्यान में फिर तब तक नहीं लौटेगी जब तक यह खत्म नहीं कर लेती।'"

6परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, टूटे हृदय वाले व्यक्ति की तरह सिसको। लोगों के सामने कराहो। 7तब वे तुमसे पूछेंगे, 'तुम कराह क्यों रहे हो?' तब तुम्हें कहना चाहिये, 'कष्टदायक समाचार मिलने वाला है, इसलिये। हर एक हृदय भय से पिघल जाएगा। सभी हाथ कमजोर हो जाएंगे।' हर एक अन्तरात्मा कमजोर हो जाएगी। हर एक घुटने पानी जैसे हो जाएंगे।' ध्यान दो, वह बुरा समाचार आ रहा है! ये घटनायें घटित होंगी। मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।"

तलवार तैयार है

8परमेश्वर का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 9"मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये लोगों से बातें करो। ये बातें कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "'ध्यान दो, एक तलवार, एक तेज तलवार है, और तलवार झलकाई गई है।

10तलवार को जान लेने के लिये तेज किया गया था। बिजली के समान चकाचौंध करने के लिये इसको झलकाया गया था। "मेरे पुत्र, तुम उस छड़ी से दूर भाग गये जिससे मैं तुम्हें दण्ड देता था। तुमने उस लकड़ी की छड़ी से दण्डित होने से इन्कार किया।

11इसलिये तलवार को झलकाया गया है। अब यह प्रयोग की जा सकेगी। तलवार तेज की गई और झलकाई गई थी। अब यह मारने वाले के हाथों में दी जा सकेगी।

12"मनुष्य के पुत्र, चिल्लाओ और चीखो। क्यों? क्योंकि तलवार का उपयोग मेरे लोगों और इस्राएल के सभी शासकों के विरुद्ध होगा! वे शासक युद्ध चाहते थे, इसलिये वे हमारे लोगों के साथ तब होंगे जब तलवार आएगी! इसलिये अपनी जांघे पीटो और अपना दुःख प्रकट करने के लिये शोर मचाओ! 13क्यों? क्योंकि यह परीक्षा मात्र नहीं है! तुमने लकड़ी की छड़ी से दण्डित होने से इन्कार किया अतः उसके अतिरिक्त तुम्हें दण्डित करने के लिये मैं क्या उपयोग में लाऊँ? हाँ, तलवार ही।'" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

14परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, तालियाँ बजाओ और मेरे लिये लोगों से ये बातें करो: 'दो बार तलवार को वार करने दो, हाँ, तीन बार! यह तलवार लोगों को मारने के लिये है! यह तलवार है, बड़े नर-संहार के लिये! यह तलवार लोगों को धार पर रखेगी।

15उनके हृदय भय से पिघल जाएंगे और बहुत से लोग गिरेंगे। बहुत से लोग अपने नगर-द्वार पर मरेंगे। हाँ, तलवार बिजली की तरह चमकेगी। ये लोगों को मारने के लिये झलकाई गई है!

16तलवार, धारदार बनो! तलवार दायें काटो, सीधे सामने काटो, बायें काटो, जाओ हर एक स्थान में जहाँ तुम्हारी धार, जाने के लिये चुनी गई!

17"तब मैं भी ताली बजाऊँगा और मैं अपना क्रोध प्रकट करना बन्द कर दूँगा। मैं यहोवा, कह चुका हूँ!'"

यरूशलेम तक के मार्ग को चुनना

18यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 19"मनुष्य के पुत्र, दो सड़कों के नक्शे बनाओ। जिन में से बाबुल के राजा की तलवार इस्राएल आने के लिये एक को चुन सके। दोनों सड़कें उसी बाबुल देश से निकलेंगी। तब नगर को पहुँचने वाली सड़क के सिरे पर एक चिन्ह बनाओ। 20चिन्ह का उपयोग यह दिखाने के लिये करो कि कौन-सी सड़क का उपयोग तलवार करेगी। एक सड़क अम्मोनी नगर रब्बा को पहुँचाती है। दूसरी सड़क यहूदा, सुरक्षित नगर, यरूशलेम को पहुँचाती है! 21यह स्पष्ट करता है कि बाबुल का राजा उस सड़क की योजना बना रहा है जिससे वह उस क्षेत्र पर आक्रमण करे। बाबुल का राजा उस बिन्दु पर आ चुका है जहाँ दोनों सड़कें अलग होती हैं। बाबुल के राजा ने जादू के संकेतों का उपयोग भविष्य को जानने के लिये किया है। उसने कुछ बाण हिलाये, उसने परिवार की देवमूर्तियों से प्रश्न पूछे, उसने गुर्दे को देखा जो उस जानवर का था जिसे उसने मारा था।

22"संकेत उसे बताते हैं कि वह उस दायीं सड़क को पकड़े जो यरूशलेम पहुँचाती है! उसने अपने साथ

विध्वंसक लट्ठों को लाने की योजना बनाई है। वह आदेश देगा और उसके सैनिक जान से मारना आरम्भ करेंगे। वे युद्ध–घोष करेंगे। तब वे एक मिट्टी की दीवार नगर के चारों ओर बनायेंगे। वे एक मिट्टी की सड़क दीवार तक पहुँचाने वाली बनाएंगे। वे नगर पर आक्रमण के लिए लकड़ी की मीनार बनाएंगे। 23वे जादूई चिन्ह इस्राएल के लोगों के लिये कोई अर्थ नहीं रखते। वे उन वचनों का पालन करते हैं जो उन्होंने दिये। किन्तु यहोवा उनके पाप याद रखेगा! तब इस्राएली लोग बन्दी बनाए जाएंगे।"

24मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "तुमने बहुत से बुरे काम किये हैं। तुम्हारे पाप पूरी तरह स्पष्ट हैं। तुमने मुझे यह याद रखने को विवश किया कि तुम दोषी हो। अत: शत्रु तुम्हें अपने हाथों में कर लेगा 25और इस्राएल के पापी प्रमुखों, तुम मारे जाओगे। तुम्हारे दण्ड का समय आ पहुँचा है! अब अन्त निकट है!"

26मेरा स्वामी यहोवा यह सन्देश देता है, "पगड़ी उतारो! मुकुट उतारो! परिवर्तन का समय आ पहुँचा है! महत्वपूर्ण प्रमुख नीचे लाए जाएंगे और जो लोग महत्वपूर्ण नहीं हैं, वे महत्वपूर्ण बनेंगे। 27मैं उस नगर को पूरी तरह नष्ट करुँगा! किन्तु यह तब तक नहीं होगा जब तक उपयुक्त व्यक्ति नया राजा नहीं होता। तब मैं उसे (बाबुल के राजा को) नगर पर अधिकार करने दूँगा।"

अम्मोन के विरुद्ध भविष्यवाणी

28परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये लोगों से कहो। वे बातें कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा ये बातें अम्मोन के लोगों और उनके लज्जाजनक देवता से कहता है:

"'ध्यान दो, एक तलवार! एक तलवार अपनी म्यान से बाहर है। तलवार झलकाई गई है! तलवार मारने के लिये तैयार है। बिजली की तरह चमकने के लिए इसको झलकाया गया था!

29तुम्हारे दर्शन व्यर्थ हैं। तुम्हारे जादू तुम्हारी सहायता नहीं करेंगे। यह केवल झूठ का गुच्छा है। अब तलवार पापियों की गर्दन पर है। वे शीघ्र ही मुर्दा हो जाएंगे। उनका अन्त समय आ पहुँचा है। उनके पाप की समाप्ति का समय आ गया है।

बाबुल के विरुद्ध भविष्यवाणी

30"'अब तुम तलवार (बाबुल) को म्यान में वापस रखो। बाबेल मैं तुम्हारे साथ न्याय, तुम जहाँ बने हो उसी स्थान पर करूँगा अर्थात् उसी देश में जहाँ तुम उत्पन्न हुए हो। 31मैं तुम्हारे विरुद्ध अपने क्रोध की वर्षा करूँगा। मेरा क्रोध तुम्हें तप्त पवन की तरह जलाएगा। मैं तुम्हें क्रूर व्यक्तियों के हाथों में दूँगा। वे व्यक्ति मनुष्यों को मार डालने में कुशल हैं। 32तुम आग के लिये ईंधन बनोगे। तुम्हारा खून भूमि में गहरा बह जाएगा अर्थात् लोग तुम्हें फिर याद नहीं करेंगे। मैंने अर्थात् यहोवा ने यह कह दिया है!'"

यहेजकेल यरूशलेम के विरुद्ध बोलता है

22 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, क्या तुम न्याय करोगे? क्या तुम हत्यारों के नगर (यरूशलेम) के साथ न्याय करोगे? क्या तुम उससे उन सब भयंकर बातों के बारे में कहोगे जो उसने की हैं? 3तुम्हें कहना चाहिये, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: नगर हत्यारों से भरा है। अत: उसके लिये दण्ड का समय आएगा। उसने अपने लिये गन्दी देवमूर्तियों को बनाया और इन देवमूर्तियों ने उसे गन्दा बनाया!

4"'यरूशलेम के लोगों, तुमने बहुत लोगों को मार डाला। तुमने गन्दी देवमूर्तियाँ बनाईं। तुम दोषी हो और तुम्हें दण्ड देने का समय आ गया है। तुम्हारा अन्त आ गया है। अन्य राष्ट्र तुम्हारा मजाक उड़ाएंगे। वे देश तुम पर हँसेंगे। 5दूर और निकट के लोग तुम्हारा मजाक उड़ाएंगे। तुमने अपना नाम बदनाम किया है। तुम अट्टहास सुन सकते हो।

6"'ध्यान दो! यरूशलेम में हर एक शासक ने अपने को शक्तिशाली बनाया जिससे वह अन्य लोगों को मार सके। 7यरूशलेम के लोग अपने माता–पिता का सम्मान नहीं करते। वे उस नगर में विदेशियों को सताते हैं। वे अनाथों और विधवाओं को उस स्थान पर ठगते हैं। 8तुम लोग मेरी पवित्र चीजों से घृणा करते हो। तुम मेरे विश्राम के दिनों को ऐसे लेते हो मानों वे महत्वपूर्ण न हों। 9यरूशलेम के लोग अन्य लोगों के बारें में झूठ बोलते हैं। वे यह उन भोले लोगों को मार डालने के लिये करते हैं। लोग पर्वतों पर असत्य देवताओं की पूजा करने जाते हैं और तब वे यरूशलेम में उनके मैत्री–भोजन को खाने आते हैं।

"'यरूशलेम में लोग अनेक यौन–सम्बन्धी पाप करते हैं। 10यरूशलेम में लोग अपने पिता की पत्नी के साथ व्यभिचार करते हैं। यरूशलेम में लोग मासिक धर्म के समय में भी नारियों से बलात्कार करते हैं। 11कोई अपने पड़ोसी की पत्नी के विरुद्ध भी ऐसा भंयकर पाप करता है। कोई अपनी पुत्रवधू के साथ शारीरिक सम्बन्ध करता है और उसे अपवित्र करता है और कोई अपने पिता की पुत्री अर्थात अपनी बहन के साथ शारीरिक सम्बंध करता है।

12"'यरूशलेम में, तुम लोग, लोगों को मार डालने के लिये धन लेते हो। तुम लोग ऋण देते हो और उस ऋण पर ब्याज लेते हो। तुम लोग थोड़े धन को पाने के लिये अपने पड़ोसी को ठगते हो और तुम लोग मुझे भूल गए हो।'" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

13परमेश्वर ने कहा, "अब ध्यान दो! मैं अपनी भुजा
को नीचे टिकाकर, तुम्हें रोक दूँगा! मैं तुम्हें लोगों को
धोखा देने और मार डालने के लिये दण्ड दूँगा। 14क्या
तब भी तुम वीर बने रहोगे? क्या तुम पर्याप्त बलवान
रहोगे जब मैं तुम्हें दण्ड देने आऊँगा? नहीं! मैं यहोवा हूँ।
मैंने यह कह दिया है और मैं वह करूँगा जो मैंने करने
को कहा है! 15मैं तुम्हें राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। मैं तुम्हें
बहुत–से देशों में जाने को विवश करूँगा। मैं नगर की
गन्दी चीजों को पूरी तरह नष्ट करुँगा। 16किन्तु यरूशलेम
तुम अपवित्र हो जाओगे और अन्य राष्ट्र इन घटनाओं
को होता देखेंगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

इस्राएल बेकार कचरे की तरह है

17यहोवा का वचन मुझ तक आया। उसने कहा,
18"मनुष्य के पुत्र, काँसा, लोहा, सीसा और टीन चाँदी
की तुलना में बेकार हैं। कारीगर चाँदी को शुद्ध करने
के लिये आग में डालते हैं। चाँदी गल जाती है और
कारीगर इसे कचरे से अलग करता है। इस्राएल राष्ट्र
उस बेकार कचरे की तरह हो गया है। 19इसलिये
यहोवा तथा स्वामी यह कहता है, 'तुम सभी लोग बेकार
कचरे की तरह हो गए हो। इसलिये मैं तुम्हें इस्राएल में
इकट्ठा करुँगा। 20कारीगर चाँदी, काँसा, लोहा, सीसा
और टीन को आग में डालते हैं। वे आग को अधिक
गर्म करने के लिये फूँकते हैं। तब धातुओं का गलना
आरम्भ हो जाता है। इसी प्रकार मैं तुम्हें अपनी आग में
डालूँगा और तुम्हें पिघलाऊँगा। वह आग मेरा गरम
क्रोध है। 21मैं तुम्हें उस आग में डालूँगा और मैं अपने
क्रोध की आग को फूँके मारुँगा और तुम्हारा पिघलना
आरम्भ हो जाएगा। 22चाँदी आग में पिघलती है और
कारीगर चाँदी को ढालते हैं तथा बचाते हैं। इसी प्रकार
तुम नगर में पिघलोगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ
और तुम समझोगे कि मैंने तुम्हारे विरुद्ध अपने क्रोध
को उंड़ेला है।'"

यहेजकेल यरूशलेम के विरुद्ध बोलता है

23यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 24"मनुष्य
के पुत्र, यरूशलेम से बातें करो। उससे कहो कि वह
पवित्र नहीं है। मैं उस देश पर क्रोधित हूँ इसलिये उस
देश ने अपनी वर्षा नहीं पाई है। 25यरूशलेम में नबी बुरे
कार्यक्रम बना रहे हैं। वे उस सिंह की तरह हैं जो उस
समय गरजता है जब वह अपने पकड़े हुए जानवर को
खाता है। उन नबियों ने बहुत से जीवन नष्ट किये हैं।
उन्होंने अनेक कीमती चीजें ली हैं। उन्होंने यरूशलेम में
अनेक स्त्रियों को विधवा बनाया।

26"याजकों ने सचमुच मेरे उपदेशों को हानि पहुँचाई
है। वे मेरी पवित्र चीजों को ठीक–ठीक नहीं बरतते
अर्थात् वे यह प्रकट नहीं करते कि वे महत्वपूर्ण हैं। वे
पवित्र चीजों को अपवित्र चीजों की तरह बरतते हैं। वे
शुद्ध चीजों को अशुद्ध चीजों की तरह बरतते हैं। वे
लोगों को इनके विषय में शिक्षा नहीं देते। वे मेरे विशेष
विश्राम के दिनों का सम्मान करने से इन्कार करते हैं।
वे मुझे इस तरह लेते हैं मानों मैं महत्वपूर्ण नहीं हूँ।

27"यरूशलेम में प्रमुख उन भेड़िये के समान हैं जो
अपने पकड़े जानवर को खा रहा है। वे प्रमुख केवल
सम्पन्न बनने के लिये आक्रमण करते हैं और लोगों
को मार डालते हैं।

28"नबी, लोगों को चेतावनी नहीं देते, वे सत्य को
ढक देते हैं। वे उन कारीगरों के समान हैं जो दीवार को
ठीक–ठीक दृढ़ नहीं बनाते वे केवल छेदों पर लेप कर
देते हैं। उनका ध्यान केवल झूठ पर होता है। वे अपने
जादू का उपयोग भविष्य जानने के लिये करते हैं,
किन्तु वे केवल झूठ बोलते हैं। वे कहते हैं, 'मेरे स्वामी
यहोवा ने ये बातें कहीं। किन्तु वे केवल झूठ बोल रहे
हैं–यहोवा ने उनसे बातें नहीं की!'

29"सामान्य जनता एक दूसरे का लाभ उठाते हैं। वे
एक दूसरे को धोखा देते और चोरी करते हैं। वे गरीब
और असहाय व्यक्ति के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं। वे
विदेशियों को भी धोखा देते थे, मानों उनके विरुद्ध कोई
नियम न हो!

30"मैंने लोगों से कहा कि तुम लोग अपना जीवन
बदलो और अपने देशों की रक्षा करो। मैंने लोगों को
दीवारों को दृढ़ करने के लिये कहा। मैं चाहता था कि
वे दीवारों के छेदों पर खड़े रहें और अपने नगर की
रक्षा करें। किन्तु कोई व्यक्ति सहायता के लिये नहीं
आया! 31अत: मैं अपना क्रोध प्रकट करुँगा, मैं उन्हें
पूरी तरह नष्ट करूँगा! मैं उन्हें उन बुरे कामों के लिये
दण्डित करुँगा जिन्हें उन्होंने किये हैं। यह सब उनका
दोष है!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

23 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, शोमरोन और यरूशलेम के
बारें में इस कहानी को सुनो। दो बहनें थीं। वे एक ही
माँ की पुत्रियाँ थीं। 3वे मिस्र में तब वेश्यायें हो गई जब
छोटी लड़कियाँ हीं थीं। मिस्र में उन्होंने प्रथम प्रेम किया
और लोगों को अपने चुचुक और अपने नवोदित स्तनों
को पकड़ने दिया। 4बड़ी लड़की ओहोला नाम की थी
और उसकी बहन का नाम ओहोलीबा था। वे मेरी हो
गयीं और उनके पुत्र–पुत्रियाँ उत्पन्न हुयीं (ओहोला
वस्तुत: शोमरोन है और ओहोलीबा वस्तुत: यरूशलेम
है।)

5"तब ओहोला मेरे प्रति पतिव्रता नहीं रह गई। वह
एक वेश्या की तरह रहने लगी। वह अपने प्रेमियों की
चाह रखने लगी। उसने अश्शूर के सैनिकों को उनकी
6नीली वर्दियों में देखा। वे सभी मन चाहे युवक घुड़सवार
थे। वे प्रमुख और अधिकारी थे 7और ओहोला ने अपने

को उन सभी लोगों को अर्पित किया। वे सभी अश्शूर की सेना में विशिष्ट चुने सैनिक थे और उसने सभी को चाहा! वह उनकी गन्दी देवमूर्तियों के साथ गन्दी हो गई। 8इसके अतिरिक्त उसने मिस्र से अपने प्रेम-व्यापार को भी बन्द नहीं किया। मिस्र ने उससे तब प्रेम किया जब वह किशोरी थी। मिस्र पहला प्रेमी था जिसने उसके नवजात स्तनों का स्पर्श किया। मिस्र ने उस पर अपने झूठे प्रेम की वर्षा की। 9इसलिये मैंने उसके प्रेमियों को उसे भोगने दिया। वह अश्शूर को चाहती थी, इसलिये मैंने उसे उन्हें दे दिया! 10उन्होंने उसके साथ बलात्कार किया। उन्होंने उसके बच्चों को लिया और उन्होंने तलवार चलाई और उसे मार डाला। उन्होंने उसे दण्ड दिया और स्त्रियाँ अब तक उसकी बातें करती हैं।

11"उसकी छोटी बहन ओहोलीबा ने इन सभी घटनाओं को घटित होते देखा। किन्तु ओहोलीबा ने अपनी बहन से भी अधिक पाप किये! वह ओहोला की तुलना में अधिक धोखेबाज थी। 12यह अश्शूर के प्रमुखों और अधिकारियों को चाहती थी। वह नीली वर्दी में घोड़े पर सवार उन सैनिकों को चाहती थी। वे सभी चाहने योग्य युवक थे। 13मैंने देखा कि वे दोनों स्त्रियाँ एक ही गलती से अपना जीवन नष्ट करने जा रही थीं।

14"ओहोलीबा मेरे प्रति धोखेबाज बनी रही। बाबुल में उसने मनुष्यों की तस्वीरों को दीवारों पर खुदे देखा। वे कसदी लोगों की तस्वीरें उनकी लाल पोशाकों में थीं। 15उन्होंने कमर में पेटियाँ बांध रखी थीं और उनके सिर पर लम्बी पगड़ियाँ थीं। वे सभी रथ के अधिकारियों की तरह दिखते थे। वे सभी बाबुल की जन्मभूमि में उत्पन्न पुरूष ज्ञात होते थे। 16ओहोलीबा ने उन्हें चाहा। उसने उनको आमंत्रित करने के लिये दूत भेजे। 17इसलिये वे बाबुल के लोग उसकी प्रेम-शैया पर उसके साथ शारीरिक सम्बंध करने आये। उन्होंने उसका उपयोग किया और उसे इतना गन्दा कर दिया कि वह उनसे घृणा करने लगी!

18"ओहोलीबा ने सबको दिखा दिया कि वह धोखेबाज है। उसने इतने अधिक व्यक्तियों को अपने नंगे शरीर का उपभोग करने दिया कि मुझे उससे वैसी ही घृणा हो गई जैसी उसकी बहन के प्रति हो गई थी। 19ओहोलीबा, बार-बार मुझसे धोखेबाजी करती रही और तब उसने अपने उस प्रेम-व्यापार को याद किया जो उसने किशोरावस्था में मिस्र में किया था। 20उसने अपने प्रेमी के गधे जैसे लिंग और घोड़े के सदृश वीर्य-प्रवाह को याद किया।

21"ओहोलीबा, तुमने अपने उन दिनों को याद किया जब तुम युवती थीं, जब तुम्हारे प्रेमी तुम्हारे चुचुक को छूते थे और तुम्हारे नवजात स्तनों को पकड़ते थे। 22अत: ओहोलीबा, मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: तुम अपने प्रेमियों से घृणा करने लगीं। किन्तु मैं तुम्हारे प्रेमियों को यहाँ लाऊँगा। वे तुम्हें घेर लेंगे। 23मैं उन सभी लोगों को बाबुल से, विशेषकर कसदी लोगों को, लाऊँगा। मैं पकोद, शो और कोआ से लोगों को लाऊँगा और मैं उन सभी लोगों को अश्शूर से लाऊँगा। इस प्रकार मैं सभी प्रमुखों और अधिकारियों को लाऊँगा। वे सभी चाहने योग्य, रथपति विशेष योग्यता के लिये चुने घुड़सवार थे। 24उन लोगों की भीड़ तुम्हारे पास आएगी। वे अपने घोड़ों पर सवार और अपने रथों पर आएंगे। लोग बड़ी संख्या में होंगे। उनके पास उनके भाले, उनकी ढालें और उनके सिर के सुरक्षा कवच होंगे। वे तुम्हारे चारों ओर इकट्ठे होंगे। मैं उन्हें बताऊँगा कि तुमने मेरे साथ क्या किया और वे अपनी तरह से तुम्हें दण्ड देंगे। 25मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि मैं कितना ईष्यालु हूँ। वे बहुत क्रोधित होंगे और तुम्हें चोट पहुँचायेंगे। वे तुम्हारी नाक और तुम्हारे कान काट लेंगे। वे तलवार चलाएंगे और तुम्हें मार डालेंगे। तब वे तुम्हारे बच्चों को ले जाएंगे और तुम्हारा जो कुछ बचा होगा उसे जला देंगे। 26वे तुम्हारे अच्छे वस्त्र-आभूषण ले लेंगे 27और मिस्र के साथ हुए तुम्हारे प्रेम-व्यापार के सपने को मैं रोक दूँगा। तुम उनकी प्रतीक्षा कभी नहीं करोगी। तुम फिर कभी मिस्र को याद नहीं करोगी!"

28मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं तुमको उन लोगों को दे रहा हूँ, जिससे तुम घृणा करती हो। मैं तुमको उन लोगों को दे रहा हूँ जिनसे तुम घृणा करने लगी थी 29और वे दिखायेंगे कि वे तुमसे कितनी घृणा करते हैं! वे तुम्हारी हर एक चीज ले लेंगे जो तुमने कमाई है। वे तुम्हें रिक्त और नंगा छोड़ देंगे! लोग तुम्हारे पापों को स्पष्ट देखेंगे। वे समझेंगे कि तुमने एक वेश्या की तरह व्यवहार किया और बुरे सपने देखे। 30तुमने वे बुरे काम तब किये जब तुमने मुझे उन अन्य राष्ट्रों का पीछा करने के लिये छोड़ा था। तुमने वे बुरे काम तब किये जब तुमने उनकी गन्दी देवमूर्तियों की पूजा करनी आरम्भ की। 31तुमने अपनी बहन का अनुसरण किया और उसी की तरह रहीं। तुमने अपने आप विष का प्याला लिया और उसे अपने हाथों में उठाये रखा। तुमने अपना दण्ड स्वयं कमाया।" 32मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा "तुम अपनी बहन के विष के प्याले को पीओगी। यह विष का प्याला लम्बा-चौड़ा है। उस प्याले में बहुत विष (दण्ड) आता है। लोग तुम पर हँसेंगे और व्यंग्य करेंगे।

33तुम मदमत्त व्यक्ति की तरह लड़खड़ाओगी। तुम बहुत अस्थिर हो जाओगी। वह प्याला विनाश और विध्वंस का है। यह उसी प्याले (दण्ड) की तरह है जिसे तुम्हारी बहन ने पीया।

34तुम उसी प्याले में विष पीओगी। तुम उसकी अन्तिम बूंद तक उसे पीओगी। तुम गिलास को फेंकोगी और उसके टुकड़े कर डालोगी और तुम पीड़ा से अपनी

छाती विदीर्ण करोगी। यह होगा क्योंकि मैं यहोवा और स्वामी हूँ और मैंने वे बातें कहीं।

35"इस प्रकार, मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं, 'यरूशलेम, तुम मुझे भूल गए। तुमने मुझे दूर फेंका और मुझे पीछे छोड़ दिया। इसलिये तुम्हें मुझे छोड़ने और वेश्या की तरह रहने का दण्ड भोगना चाहिए। तुम्हें अपने दुष्ट सपनों के लिये कष्ट अवश्य पाना चाहिए।'"

ओहोला और ओहोलीबा के विरुद्ध निर्णय

36मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम ओहोला और ओहोलीबा का न्याय करोगे? तब उनको उन भंयकर बातों को बताओ जो उन्होंने किये। 37उन्होंने व्यभिचार का पाप किया है। वे हत्या करने के अपराधी हैं। उन्होंने वेश्या की तरह काम किया, उन्होंने अपनी गन्दी देवमूर्तियों के साथ रहने के लिये मुझको छोड़ा। मेरे बच्चे उनके पास थे, किन्तु उन्होंने उन्हें आग से गुजरने के लिये विवश किया। उन्होंने अपनी गन्दी देवमूर्तियों को भोजन देने के लिये यह किया। 38उन्होंने मेरे विश्राम के दिनों और पवित्र स्थानों को ऐसे लिया मानों वे महत्वपूर्ण न हों। 39उन्होंने अपनी देवमूर्तियों के लिये अपने बच्चों को मार डाला और तब वे मेरे पवित्र स्थान पर गए और उसे भी गन्दा बनाया। उन्होंने यह मेरे मन्दिर के भीतर किया!

40"उन्होंने बहुत दूर के स्थानों से मनुष्यों को बुलाया है। इन व्यक्तियों को तुमने एक दूत भेजा और वे लोग तुम्हें देखने आए। तुम उनके लिये नहाई, अपनी आँखों को सजाया और अपने आभूषणों को पहना। 41तुम सुन्दर बिस्तर पर बैठी, जिसके सामने मेज रखा था। तुमने मेरी सुगन्ध और मेरे तेल को इस मेज पर रखा।

42"यरूशलेम में शोर ऐसा सुनाई पड़ता था मानों दावत उड़ाने वाले लोगों का हो। दावत में बहुत लोग आये। लोग जब मरुभूमि से आते थे तो पहले से पी रहे होते थे। वे स्त्रियों को बाजूबन्द और सुन्दर मुकुट देते थे। 43तब मैंने एक स्त्री से बातें कीं, जो व्यभिचार से शिथिल हो गई थी। मैंने उससे कहा, 'क्या वे उसके साथ व्यभिचार करते रह सकते हैं, और वह उनके साथ करती रह सकती है?' 44किन्तु वे उसके पास वैसे ही जाते रहे जैसे वे किसी वेश्या के पास जा रहे हों। हाँ, वे उन दुष्ट स्त्रियाँ ओहोला और ओहोलीबा के पास बार-बार गए।

45"किन्तु अच्छे लोग उनका न्याय अपराधी के रूप में करेंगे। वे उन स्त्रियों का न्याय व्यभिचार का पाप करने वालियों और हत्यारिनों के रूप में करेंगे। क्यों? क्योंकि ओहोला और ओहोलीबा ने व्यभिचार का पाप किया है और उस रक्त से उनके हाथ अब भी रंगे हैं जिन्हें उन्होंने मार डाला था।"

46मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कही, "लोगों को एक साथ इकट्ठा करो। तब उन लोगों को ओहोला और ओहोलीबा को दण्ड देने दो। लोगों का यह समूह उन दोनों स्त्रियों को दण्डित करेगा तथा इनका मजाक उड़ाएगा। 47तब वह समूह उन्हें पत्थर मारेगा और उन्हें मार डालेगा। तब वह समूह अपनी तलवारों से स्त्रियों के टुकड़े करेगा। वे स्त्रियों के बच्चों को मार डालेंगे और उनके घर जला डालेंगे। 48इस प्रकार मैं इस देश की लज्जा को धोऊँगा और सभी स्त्रियों को चेतावनी दी जाएगी कि वे वह लज्जाजनक काम न करें जो तुमने किया है। 49वे तुम्हें उन दुष्ट कामों के लिये दण्डित करेंगे जो तुमने किया और तुम्हें अपनी गन्दी देवमूर्तियों की पूजा के लिये दण्ड मिलेगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा और स्वामी हूँ।"

पात्र और माँस

24 मेरे स्वामी यहोवा का वचन मुझे मिला। यह देश-निकाले के नवें वर्ष के दसवें महीने का दसवाँ दिन था। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, आज की तिथि और इस टिप्पणी को लिखो: 'आज बाबुल के राजा की सेना ने यरूशलेम को घेरा।' 3यह कहानी उस परिवार से कहो जो (इस्राएल) आज्ञा मानने से इन्कार करे। उनसे ये बातें कहो। 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "'पात्र को आग पर रखो, पात्र को रखो और उस में जल डालो।

4उसमें माँस के टुकड़े डालो, हर अच्छे टुकड़े डालो, जाँघे और कंधे। पात्र को सर्वोत्तम हड्डियों से भरो।

5झुण्ड के सर्वोत्तम जानवर का उपयोग करो, पात्र के नीचे ईंधन का ढेर लगाओ, और माँस के टुकड़ों को पकाओ। शोरवे को तब तक पकाओ जब तक हड्डियाँ भी न पक जाय!

6इस प्रकार मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:

"'यह यरूशलेम के लिये बुरा होगा। यह हत्यारों से भरे नगर के लिये बुरा होगा। यरूशलेम उस पात्र की तरह है जिस पर जंख के दाग हों, और वे दाग दूर न किये जा सकें! वह पात्र शुद्ध नहीं है, इसलिये माँस का हर एक टुकड़ा पात्र से बाहर निकालो! उस माँस को मत खाओ! याजकों को उस बेकार माँस में से कोई टुकड़ा मत चुनने दो!

7यरूशलेम एक जंख लगे पात्र की तरह है, क्यों? क्योंकि हत्याओं का रक्त वहाँ अब तक है! उसने रक्त को खुली चट्टानों पर डाला है! उसने रक्त को भूमि पर नहीं डाला और इसे मिट्टी से नहीं ढका।

8मैंने उसका रक्त को खुली चट्टान पर डाला। अत: यह ढका नहीं जाएगा। मैंने यह किया, जिससे लोग क्रोधित हो, और उसे निरपराध लोगों की हत्या का दण्ड दें।'"

9अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: हत्यारों से
भरे इस नगर के लिये यह बुरा होगा! मैं आग के लिए
बहुत सी लकड़ी का ढेर बनाऊँगा
10पात्र के नीचे बहुत सा ईधन डालो। आग जलाओ।
अच्छी प्रकार माँस को पकाओ! मसाले मिलाओ और
हड्डियों को जल जाने दो।
11तब पात्र को अंगारों पर खाली छोड़ दो। इसे इतना
तप्त होने दो कि इसके दाग चमकने लगे। वे दाग पिघल
जाएंगे। जंख नष्ट होगा।
12यरूशलेम अपने दागों को धोने का कठोर प्रयत्न
कर सकती है। किन्तु वह जंख दूर नहीं होगा! केवल
आग (दण्ड) उस जंख को दूर करेगी!
13तुमने मेरे विरुद्ध पाप किया और पाप से कंलकित
हुई। मैंने तुम्हें नहलाना चाहा और तुम्हें स्वच्छ करना
चाहा! किन्तु दाग छूटे नहीं। मैं तुमको फिर नहलाना
नहीं चाहूँगा। जब तक मेरा तप्त क्रोध तुम्हारे प्रति
समाप्त नहीं होता।
14"मैं यहोवा हूँ। मैंने कहा, तुम्हें दण्ड मिलेगा, और
मैं इसे दिलाऊँगा। मैं दण्ड को रोकूँगा नहीं। मैं तुम्हारे
लिये दु:ख का अनुभव नहीं करूँगा। मैं तुम्हें उन बुरे
पापों के लिये दण्ड दूँगा जो तुमने किये।" मेरे स्वामी
यहोवा ने यह कहा।

यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु

15तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
16"मनुष्य के पुत्र, तुम अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करते
हो किन्तु मैं उसे तुमसे दूर कर रहा हूँ। तुम्हारी पत्नी
अचानक मरेगी। किन्तु तुम्हें अपना शोक प्रकट नहीं
करना चाहिए। तुम्हें जोर से रोना नहीं चाहिए। तुम
रोओगे और तुम्हारे आँसू गिरेंगे। 17किन्तु तुम्हें अपना
शोक–रूदन बहुत मन्द रखना चाहिए। अपनी मृत पत्नी
के लिये जोर से न रोओ। तुम्हें सामान्य नित्य के वस्त्र
पहनने चाहिए। अपनी पगड़ी और अपने जूते पहनो।
अपने शोक को प्रकट करने के लिये अपनी मूँछे न
ढको और वह भोजन न करो जो प्राय: किसी के मरने
पर लोग करते हैं।"
18अगली सुबह मैंने लोगों को बताया कि परमेश्वर ने
क्या कहा है। उसी शाम मेरी पत्नी मरी। अगली प्रात:
मैंने वही किया जो परमेश्वर ने आदेश दिया था। 19तब
लोगों ने मुझसे कहा, "तुम यह काम क्यों कर रहे हो?
इसका मतलब क्या है?"
20मैंने उनसे कहा, "यहोवा का वचन मुझे मिला।
उसने मुझसे, 21इस्राएल के परिवार से कहने को कहा।
मेरे स्वामी यहोवा ने कहा, 'ध्यान दो, मैं अपने पवित्र
स्थान को नष्ट करुँगा। तुम लोगों को उस पर गर्व है
और तुम लोग उसकी प्रशंसा के गीत गाते हो। तुम्हें उस
स्थान को देखने का प्रेम है। तुम सचमुच उस स्थान से
प्रेम करते हो। किन्तु मैं उस स्थान को नष्ट करुँगा
और तुम्हारे पीछे छूटे हुए तुम्हारे बच्चे युद्ध में मारे
जाएंगे। 22किन्तु तुम वही करोगे जो मैंने अपनी मृत
पत्नी के बारे में किया है। तुम अपना शोक प्रकट
करने के लिये अपनी मूँछे नहीं ढकोगे। तुम वह भोजन
नहीं करोगे जो लोग प्राय: किसी के मरने पर खाते हैं।
23तुम अपनी पगड़ियाँ और अपने जूते पहनोगे। तुम
अपना शोक नहीं प्रकट करोगे। तुम रोओगे नहीं।
किन्तु तुम अपने पाप के कारण बरबाद होते रहोगे। तुम
चुपचाप अपनी आहें एक दूसरे के सामने भरोगे। 24अत:
यहेजकेल तुम्हारे लिये एक उदाहरण है। तुम वही सब
करोगे जो इसने किया। दण्ड का यह समय आयेगा और
तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"
25-26"मनुष्य के पुत्र, मैं उस सुरक्षित स्थान यरूशलेम
को लोगों से ले लूँगा। वह सुन्दर स्थान उनको आनन्दित
करता है। उन्हें उस स्थान को देखने का प्रेम है। वे
सचमुच उस स्थान से प्रेम करते हैं। किन्तु उस समय मैं
नगर और उनके बच्चों को उन लोगों से ले लूँगा। बचने
वालों में से एक यरूशलेम के बारे में बुरा सन्देश लेकर
तुम्हारे पास आएगा। 27उस समय तुम उस व्यक्ति से बातें
कर सकोगे। तुम और अधिक चुप नहीं रह सकोगे।
इस प्रकार तुम उनके लिये उदाहरण बनोगे। तब वे
जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

अम्मोन के विरुद्ध भविष्यवाणी

25 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, अम्मोन के लोगों पर ध्यान
दो और मेरे लिये उनके विरुद्ध कुछ कहो। 3अम्मोन
के लोगों से कहो: 'मेरे स्वामी यहोवा का कथन सुनो!
मेरा स्वामी यहोवा कहता है: तुम तब प्रसन्न थे जब मेरा
पवित्र स्थान नष्ट हुआ था। तुम लोग तब इस्राएल देश
के विरुद्ध थे जब यह दूषित हुआ था। तुम यहूदा के
परिवार के विरुद्ध थे जब वे लोग बन्दी बनाकर ले जाए
गए। 4इसलिये मैं तुम्हें, पूर्व के लोगों को दूँगा। वे तुम्हारी
भूमि लेंगे। उनकी सेनायें तुम्हारे देश में अपना डेरा
डालेंगी। वे तुम्हारे बीच रहेंगे। वे तुम्हारे फल खाएंगे
और तुम्हारा दूध पीएंगे।
5"'मैं रब्बा नगर को ऊँटों की चरागाह और अम्मोन
देश को भेड़ों का बाड़ा बना दूँगा। तब तुम समझोगे कि
मैं यहोवा हूँ। 6यहोवा यह कहता है: तुम प्रसन्न थे कि
यरूशलेम नष्ट हुआ। तुमने तालियाँ बजाई और पैरों पर
थिरके। तुमने इस्राएल प्रदेश को अपमानित करने वाले
मजाक किये। 7अत: मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। तुम वैसी कीमती
चीजों की तरह होगे जिन्हें सैनिक युद्ध में पाते हैं। तुम
अपना उत्तराधिकार खो दोगे। तुम दूर देशों में मरोगे। मैं
तुम्हारे देश को नष्ट करुँगा! तब तुम जानोगे कि मै
यहोवा हूँ।'"

मोआब और सेईर के विरुद्ध भविष्यवाणी

8मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "मोआब और
सेईर (एदोम) कहते हैं, 'यहूदा का परिवार ठीक किसी
अन्य राष्ट्र की तरह है। 9मैं मोआब के कन्धे पर प्रहार
करूँगा, मैं इसके उन नगरों को लूँगा जो इसकी सीमा
पर प्रदेश के गौरव, बेत्यशीमोत, बालमोन और किर्यातैम
हैं। 10तब मैं इन नगरों को पूर्व के लोगों को दूँगा। वे
तुम्हारा प्रदेश लेंगे और मैं पूर्व के लोगों को अम्मोन को
नष्ट करने दूँगा। तब हर एक व्यक्ति भूल जाएगा कि
अम्मोन के लोग एक राष्ट्र थे। 11इस प्रकार मैं मोआब
को दण्ड दूँगा। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।'"

एदोम के विरुद्ध भविष्यवाणी

12मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "एदोम के लोग
यहूदा के परिवार के विरुद्ध उठ खड़े हुए और उससे
बदला लेना चाहा। एदोम के लोग दोषी हैं।" 13इसलिये
मेरा स्वामी यहोवा कहता है: "मैं एदोम को दण्ड दूँगा।
मैं एदोम के लोगों और जानवरों को नष्ट करूँगा। मैं
एदोम के पूरे देश को तेमान से ददान तक नष्ट करूँगा।
एदोमी युद्ध में मारे जाएंगे। 14मैं अपने लोगों, इस्राएल का
उपयोग करुँगा और एदोम के विरुद्ध भी होऊँगा। इस
प्रकार इस्राएल के लोग मेरे क्रोध को एदोम के विरुद्ध
प्रकट करेंगे। तब एदोम के लोग समझेंगे कि मैंने उनको
दण्ड दिया।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

पलिश्तियों के विरुद्ध भविष्यवाणी

15मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा, "पलिश्तियों ने भी
बदला लेने का प्रयत्न किया। वे बहुत क्रूर थे। उन्होंने
अपने क्रोध को अपने भीतर अत्याधिक समय तक
जलते रखा।" 16इसलिये मेरे स्वामी यहोवा ने कहा, "मैं
पलिश्तियों को दण्ड दूँगा। हाँ, मैं करेत से उन लोगों को
नष्ट करुँगा। मैं समुद्र-तट पर रहने वाले उन लोगों को
पूरी तरह नष्ट करुँगा। 17मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा, मैं
उन से बदला लूँगा। मैं अपने क्रोध द्वारा उन्हें एक
सबक सिखाऊँगा तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!"

सोर के बारे में दुःखद समाचार

26 देश-निकाले के ग्यारहवें वर्ष में, महीने के
पहले दिन, यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने
कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, सोर ने यरूशलेम के विरुद्ध
बुरी बातें कहीं: आहा! लोगों की रक्षा करने वाला
नगर-द्वार नष्ट हो गया है! नगर-द्वार मेरे लिये खुला
है। नगर (यरूशलेम) नष्ट हो गया है, अत: मैं इससे
बहुत सी बहुमूल्य चीजें ले सकता हूँ!"

3इसलिये मेरा स्वामी यहोवा कहता है: "सोर, मैं
तुम्हारे विरुद्ध हूँ! मैं तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिये कई
राष्ट्रों को लाऊँगा। वे समुद्र तट की लहरों की तरह
बार-बार आएंगे।"

4परमेश्वर ने कहा, "शत्रु के वे सैनिक सोर की
दीवारों को नष्ट करेंगे और उनके स्तम्भों को गिरा
देंगे। मैं भी उसकी भूमि से ऊपर की मिट्टी को खुरच
दूँगा। मैं सोर को चट्टान मात्र बना डालूँगा। 5सोर समुद्र
के किनारे मछलियों के जालों को फैलाने का स्थान
मात्र रह जाएगा। मैंने यह कह दिया है!" मेरा स्वामी
यहोवा कहता है, "सोर उन बहुमूल्य वस्तुओं की तरह
होगा जिन्हें सैनिक युद्ध में पाते हैं। 6मूल प्रदेश में उसकी
पुत्रियाँ (छोटे नगर) युद्ध में मारी जाएंगी। तब वे जानेंगे
कि मैं यहोवा हूँ।"

नबूकदनेस्सर सोर पर आक्रमण करेगा

7मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं सोर के विरुद्ध
उत्तर से एक शत्रु लाऊँगा। बाबुल का महान राजा
नबूकदनेस्सर शत्रु है! वह एक विशाल सेना लाएगा।
उसमें घोड़े, रथ, घुड़सवार सैनिक, और अत्याधिक
संख्या में अन्य सैनिक होंगे। वे सैनिक विभिन्न राष्ट्रों
से होंगे। 8नबूकदनेस्सर मूल-प्रदेश में तुम्हारी पुत्रियों
(छोटे नगर) को मार डालेगा। वह तुम्हारे नगरों पर
आक्रमण करने के लिये मीनारें बनाएगा! वह तुम्हारे
नगर के चारों ओर कच्ची सड़क बनाएगा! वह एक
कच्ची सड़क दीवार तक पहुँचाने वाली बनाएगा। 9वह
तुम्हारी दीवारों को तोड़ने के लिये लट्ठे लाएगा। वह
कुदालियों का उपयोग करेगा और तुम्हारी मीनारों को
तोड़ गिराएगा। 10उसके घोड़े इतनी बड़ी संख्या में होंगे
कि उनकी टापों से उठी धूलि तुम्हें ढक लेगी। तुम्हारी
दीवारें घुड़सवार सैनिकों, बन्द गाड़ियों और रथों की
आवाज से काँप उठेगी। जब बाबुल का राजा नगर-द्वार
से नगर में प्रवेश करेगा। हाँ, वे तुम्हारे नगर में आएंगे
क्योंकि इसकी दीवारें गिराई जाएंगी।

11बाबुल का राजा तुम्हारे नगर से घोड़े पर सवार
होकर निकलेगा। उसके घोड़ों की टाप तुम्हारी सड़कों
को कुचलती हुई आएगी। वह तुम्हारे लोगों को तलवार
से मार डालेगा। तुम्हारे नगर की दृढ़ स्तम्भ-पंक्तियाँ
धराशायी होंगी। 12नबूकदनेस्सर के सैनिक तुम्हारी
सम्पत्ति ले जाएंगे। वे उन चीजों को ले जाएंगे जिन्हें तुम
बेचना चाहते हो। वे तुम्हारी दीवारों को ध्वस्त करेंगे
और तुम्हारे सुन्दर भवनों को नष्ट करेंगें। वे तुम्हारे
पत्थरों और लकड़ियों के घरों को कूड़े की तरह समुद्र
में फेंक देंगे। 13इस प्रकार मैं तुम्हारे आनन्द गीतों के
स्वर को बन्द कर दूँगा। लोग तुम्हारी वीणा को भविष्य
में नहीं सुनेंगे। 14मैं तुमको नंगी चट्टान मात्र कर दूँगा।
तुम समुद्र के किनारे मछलियों के जालों को फैलाने
के स्थान रह जाओगे। तुम्हारा निर्माण फिर नहीं होगा।
क्यों? क्योंकि मैं, यहोवा ने यह कहा है!" मेरे स्वामी
यहोवा ने वे बातें कहीं।

अन्य राष्ट्र सोर के लिये रोयेंगे

15मेरा स्वामी यहोवा सोर से यह कहता है: "भूमध्य
सागर के तट से लगे देश तुम्हारे पतन की ध्वनि से
काँप उठेंगे। यह तब होगा जब तुम्हारे लोग चोट खाएंगे
और मारे जाएंगे। 16तब समुद्र तट के देशों के सभी
प्रमुख अपने सिंहासनों से उतरेंगे और अपना दुःख
प्रकट करेंगे। वे अपनी विशेष पोशाक उतारेंगे। वे
अपने सुन्दर वस्त्रों को उतारेंगे। तब वे अपने काँपने के
वस्त्र (भय) पहनेंगे। वे भूमि पर बैठेंगे और भय से
काँपेंगे। वे इस पर शोकग्रस्त होंगे कि तुम इतने शीघ्र
कैसे नष्ट हो गए। 17वे तुम्हारे विषय में यह करुण गीत
गायेंगे:

'हे सोर, तुम प्रसिद्ध नगर थे समुद्र पार से लोग तुम
पर बसने आए। तुम प्रसिद्ध थे, किन्तु अब तुम कुछ
नहीं हो। तुम सागर पर शक्तिशाली थे, और वैसे ही तुम
में निवास करने वाले व्यक्ति थे! तुमने विशाल भू-पर
रहने वाले सभी लोगों को भयभीत किया।

18अब जिस दिन तुम्हारा पतन होता है, समुद्र तट से
लगे देश भय से कंपित होंगे। तुमने समुद्र तट के सहारे
कई उपनिवेश बनाए, अब वे लोग भयभीत होंगे, जब
तुम नहीं रहोगे!'"

19मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "सोर, मैं तुम्हें
नष्ट करुँगा और तुम एक प्राचीन खाली नगर हो
जाओगे। वहाँ कोई नहीं रहेगा। मैं समुद्र को तुम्हारे
ऊपर बहाऊँगा। विशाल समुद्र तुम्हें ढक लेगा। 20मैं
तुम्हें नीचे उस गहरे अधोगर्त में भेजूँगा, जिस स्थान पर
मरे हुए लोग हैं। तुम उन लोगों से मिलोगे जो बहुत पहले
मर चुके। मैं तुम्हें उन सभी प्राचीन और खाली नगरों
की तरह पाताल लोक में भेजूँगा। तुम उन सभी अन्य
लोगों के साथ होगे जो कब्र में जाते हैं। तुम्हारे साथ तब
कोई नहीं रहेगा। तुम फिर कभी जीवितों के प्रदेश में
नहीं रहोगे! 21अन्य लोग उससे डरेंगे जो तुम्हारे साथ
हुआ। तुम समाप्त हो जाओगे! लोग तुम्हारी खोज करेंगे,
किन्तु तुमको फिर कभी पाएंगे नहीं!" मेरा स्वामी
यहोवा यही कहता है।

सोर समुद्र पर व्यापार का महान केन्द्र

27 यहोवा का वचन मुझे फिर मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, सोर के बारे में यह करुण-गीत
गाओ। 3सोर के बारे में यह कहो: 'सोर, तुम समुद्र के
द्वार हो। तुम अनेक राष्ट्रों के लिये व्यापारी हो, तुम
समुद्र तट के सहारे के अनेक देशों की यात्रा करते हो।
मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है। सोर तुम सोचते हो
कि तुम इतने अधिक सुन्दर हो! तुम सोचते हो कि तुम
पूर्णतः सुन्दर हो!

4भूमध्य सागर तुम्हारे नगर के चारों ओर सीमा
बनाता है। तुम्हारे निर्माताओं ने तुम्हें पूर्णतः सुन्दर बनाया।
तुम उन जहाजों की तरह हो जो तुम्हारे यहाँ से यात्रा पर
जाती हैं।

5तुम्हारे निर्माताओं ने, सनीर पर्वत से सनौवर के
पेड़ों का उपयोग, तुम्हारे सभी तख्तों को बनाने के लिये
किया। उन्होंने लबानोन से देवदार वन का उपयोग,
तुम्हारे मस्तूल को बनाने के लिये किया। 6उन्होंने बाशान
से बांज वृक्ष का उपयोग, तुम्हारे पतवारों को बनाने के
लिये किया। उन्होंने सनौवर से चीड़ वृक्ष का उपयोग,
तुम्हारे जहाजी फर्श के कमरे के लिये किया, और
उन्होंने इस निवास को हाथी-दाँत से सजाया।

7तुम्हारे पाल के लिये उन्होंने मिस्र में बने रंगीन सूती
वस्त्र का उपयोग किया। पाल तुम्हारा झंड़ा था। कमरे
के लिये तुम्हारे पर्दे नीले और बैंगनी थे। वे सनौवर के
समुद्र तट से आते थे।

8सीदोन और अर्वद के निवासियों ने तुम्हारे लिये
तुम्हारी नावों को खेया। सोर तुम्हारे बुद्धिमान व्यक्ति
तुम्हारे जहाजों के चालक थे।

9गबल के अग्रज प्रमुख और बुद्धिमान व्यक्ति जहाज
के तख्तों के बीच कल्किन लगाने में सहायता के लिये
जहाज पर थे। समुद्र के सारे जहाज और उनके चालक
तुम्हारे साथ व्यापार और वाणिज्य करने आते थे।'

10"फारस, लूद और पूत के लोग तुम्हारी सेना में थे।
वे तुम्हारे युद्ध के सैनिक थे। उन्होंने अपनी ढालें और
सिर के कवच तुम्हारी दीवारों पर लटकाये थे। उन्होंने
तुम्हारे नगर के लिये सम्मान और यश कमाया। 11अर्वद
के व्यक्ति तुम्हारे नगर के चारों ओर की दीवार पर
रक्षक के रूप में खड़े थे। गम्मत के व्यक्ति तुम्हारी
मीनारों में थे। उन्होंने तुम्हारे नगर के चारों ओर की
दीवारों पर अपनी ढाले टाँगी। उन्होंने तुम्हारी सुन्दरता
को पूर्ण किया।

12"तर्शीश तुम्हारे सर्वोत्तम ग्राहकों में से एक था। वे
तुम्हारी सभी अद्भुत विक्रय वस्तुओं के बदले चाँदी,
लोहा, टीन और सीसा देते थे। 13यावान, तूबल, मेशेक
और काले सागर के चारों ओर के क्षेत्र के लोग तुम्हारे
साथ व्यापार करते थे। वे तुम्हारी विक्रय चीजों के
बदले गुलाम और काँसा देते थे। 14तोगर्मा राष्ट्र के लोग
घोड़े, युद्ध अश्व और खच्चर उन चीजों के बदले में देते
थे जिन्हें तुम बेचते थे। 15ददान के लोग तुम्हारे साथ
व्यापार करते थे। तुम अपनी चीजों को अनेक स्थानों
पर बेचते थे। लोग तुमको भुगतान करने के लिये हाथी
दाँत और आबनूस की लकड़ी लाते थे। 16एदोम तुम्हारे
साथ व्यापार करता था क्योंकि तुम्हारे पास बहुत सी
अच्छी चीजें थीं। एदोम के लोग नीलमणि, बैंगनी वस्त्र,
बारीक कढ़ाई के काम, बारीक सूती, मूंगा और लाल
तुम्हारी विक्रय चीजों के बदले देते थे।

17"यहूदा और इस्राएल के लोगों ने तुम्हारे साथ व्यापार
किया। उन्होंने तुम्हारी विक्रय चीजों के लिये भुगतान में

गेहूँ, जैतून, अगाती, अंजीर, शहद, तेल और मलहम दिये। 18दमिश्क एक अच्छा ग्राहक था। वे तुम्हारे पास की अद्‌भुत चीजों के लिये व्यापार करते थे। वे हेलबोन से दाखमधु का व्यापार करते थे और उन चीजों के लिये सफेद ऊन लेते थे। 19जो चीजें तुम बेचते थे उनसे दमिश्क उजला से दाखमधु मंगाने का व्यापार करता था। वे उन चीजों के भुगतान में तैयार लोहा, कस्सिय और गन्ना देते थे। 20ददान अच्छा धन्धा प्रदान करता था। वे तुम्हारे साथ काठी के वस्त्र और सवारी के घोड़ों का व्यापार करते थे। 21अरब और केदार के सभी प्रमुख मेमने, भेड़ और बकरियाँ तुम्हारी विक्रय की गई वस्तुओं के लिये देते थे। 22शबा और रामा के व्यापारी तुम्हारे साथ व्यापार करते थे। वे सर्वोत्तम मसाले, हर प्रकार के रत्न और सोना तुम्हारी विक्रय की गई चीजों के लिये देते थे। 23हारान, कन्ने, एदेन तथा शबा, अश्शूर, कलमद के व्यापारी तुम्हारे साथ व्यापार करते थे। 24उन्होंने सर्वोत्तम कपड़ों, बारीक कढ़े हुए और नीले वस्त्र, रंग-बिरंगे कालीन, अच्छी बटी रस्सियाँ और देवदार की लकड़ी से बने सामान भुगतान में दिये। ये वे चीजें थीं जिनसे उन्होंने तुम्हारे साथ व्यापार किया। 25तर्शीश के जहाज उन चीजों को ले जाते थे जिन्हें तुम बेचते थे।

'सोर, तुम उन व्यापारी बेड़ों में से एक की तरह हो, तुम समुद्र पर बहुमूल्य वस्तुओं से लदे हुये हो।

26वे व्यक्ति जो तुम्हारी नावों को खेते थे। तुम्हें विशाल और शक्तिशाली समुद्रों के पार ले गए। किन्तु शक्तिशाली पुरवाई तुम्हारे जहाजों को समुद्र में नष्ट करेगी

27और तुम्हारी सारी सम्पत्ति समुद्र में डूब जाएगी। तुम्हारी सम्पत्ति, तुम्हारा व्यापार, और विक्रय चीजें, तुम्हारे मल्लाह और तुम्हारे चालक, तुम्हारे व्यक्ति जो, तुम्हारे जहाज पर तख्तों के बीच में कल्किन लगाते हैं, तुम्हारे मल्लाह और तुम्हारे नगर के सभी सैनिक और तुम्हारे नाविक सारे समुद्र में डूब जाएंगे। यह उसी दिन होगा जिस दिन तुम नष्ट होगे!

28तुमने अपने व्यापारियों को बहुत दूर के स्थानों में भेजा। वे स्थान भय से काँप उठेंगे, जब वे तुम्हारे चालकों का चिल्लाना सुनेंगे!

29तुम्हारे सारे नाविक जहाज से कूदेंगे। मल्लाह और चालक जहाज से कूदेंगे, और तट पर तैर आएंगे।

30वे तुम्हारे बारे में बहुत दुःखी होंगे। वे रो पड़ेंगे। वे अपने सिरों पर धूली डालेंगे। वे राख में लोटेंगे।

31वे तुम्हारे लिए सिर पर उस्तरा फिरायेंगे। वे शोक-वस्त्र पहनेंगे। वे तुम्हारे लिये रोये-चिल्लायेंगे। वे किसी ऐसे रोते हुए के समान होंगे, जो किसी के मरने पर रोता है।

32"वे अपने फूट-फूट कर रोने के समय तुम्हारे बारे में यह शोक गीत गायेंगे और रोयेंगे: 'कोई सोर की तरह नहीं है! सोर नष्ट कर दिया गया, समुद्र के बीच में!

33तुम्हारे व्यापारी समुद्रों के पार गए। तुमने अनेक लोगों को, अपनी विशाल सम्पत्ति और विक्रय वस्तुओं से सन्तुष्ट किया। तुमने भूमि के राजाओं को सम्पन्न बनाया!

34किन्तु अब तुम समुद्रों द्वारा टूटे हो और गहरे जल द्वारा भी। सभी चीजें जो तुम बेचते हो, और तुम्हारे सभी व्यक्ति नष्ट हो चुके हैं!

35समुद्र तट के निवासी सभी व्यक्ति तुम्हारे लिये शोकग्रस्त हैं। उनके राजा भयानक रूप से डरे हैं। उनके चेहरे से शोक झांकता है।

36अन्य राष्ट्रों के व्यापारी तुम पर छींटा कसते हैं। जो घटनायें तुम्हारे साथ घटीं, लोगों को भयभीत करेगी। क्यों? क्योंकि तुम अब समाप्त हो। तुम भविष्य में नहीं रहोगे।'"

सोर अपने को परमेश्वर समझता है

28 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, सोर के राजा से कहो। मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:

'तुम बहुत घमण्डी हो! और तुम कहते हो "मैं परमेश्वर हूँ।! मैं समुद्रों के मध्य में देवताओं के आसन पर बैठता हूँ।' किन्तु तुम व्यक्ति हो, परमेश्वर नहीं! तुम केवल सोचते हो कि तुम परमेश्वर हो।

3तुम सोचते हो तुम दानिय्येल से बुद्धिमान हो! तुम समझते हो कि तुम सारे रहस्यों को जान लोगे!

4अपनी बुद्धि और अपनी समझ से। तुमने सम्पत्ति स्वयं कमाई है और तुमने अपने कोषागार में सोना-चाँदी रखा है।

5अपनी तीव्र बुद्धि और व्यापार से तुमने अपनी सम्पत्ति बढ़ाई है, और अब तुम उस सम्पत्ति के कारण गर्वीले हो।

6अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: सोर, तुमने सोचा तुम परमेश्वर की तरह हो।

7मैं अजनबियों को तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिये लाऊँगा। वे राष्ट्रों में बड़े भंयकर हैं! वे अपनी तलवारें बाहर खीचेंगे और उन सुन्दर चीजों के विरुद्ध चलाएंगे जिन्हें तुम्हारी बुद्धि ने कमाया। वे तुम्हारे गौरव को ध्वस्त करेंगे। 8वे तुम्हें गिराकर कब्र में पहुँचाएंगे। तुम उस मल्लाह की तरह होगे जो समुद्र में मरा।

9वह व्यक्ति तुमको मार डालेगा। क्या अब भी तुम कहोगे, "मैं परमेश्वर हूँ?" उस समय वह तुम्हें अपने अधिकार में करेगा। तुम समझ जाओगे कि तुम मनुष्य हो, परमेश्वर नहीं!

10अजनबी तुम्हारे साथ विदेशी जैसा व्यवहार करेंगे, और तुमको मार डालेंगे। ये घटनाएँ होंगी क्योंकि मेरे

पास आदेश–शक्ति है!'" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं। 11यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,

12"मनुष्य के पुत्र, सोर के राजा के बारे में करुण गीत गाओ। उससे कहो, 'मेरे स्वामी यहोवा यह कहता है: तुम आदर्श पुरुष थे, तुम बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण थे, तुम पूर्णत: सुन्दर थे,

13तुम एदेन में थे परमेश्वर के उद्यान में तुम्हारे पास हर एक बहुमूल्य रत्न थे लाल, पुखराज, हीरे, फिरोजा, गोमेद और जस्पर नीलम, हरितमणि और नीलमणि और ये हर एक रत्न सोने में जड़े थे। तुमको यह सौन्दर्य प्रदान किया गया था जिस दिन तुम्हारा जन्म हुआ था। परमेश्वर ने तुम्हें शक्तिशाली बनाया।

14तुम चुने गए करुब (स्वर्गदूत) थे। तुम्हारे पंख मेरे सिंहासन पर फैले थे और मैंने तुमको परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर रखा। तुम उन रत्नों के बीच चले जो अग्नि की तरह कौंधते थे।

15तुम अच्छे और ईमानदार थे जब मैंने तुम्हें बनाया। किन्तु इसके बाद तुम बुरे बन गए।

16तुम्हारा व्यापार तुम्हारे पास बहुत सम्पत्ति लाता था। किन्तु उसने भी तुम्हारे भीतर क्रूरता उत्पन्न की और तुमने पाप किया। अत: मैंने तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार किया मानों तुम गन्दी चीज हो। मैंने तुम्हें परमेश्वर के पर्वत से फेंक दिया। तुम विशेष करुब (स्वर्गदूतों) में से एक थे, तुम्हारे पंख फैले थे मेरे सिंहासन पर किन्तु मैंने तुम्हें आग की तरह कौंधने वाले रत्नों को छोड़ने को विवश किया।

17तुम अपने सौन्दर्य के कारण घमण्डी हो गए, तुम्हारे गौरव ने तुम्हारी बुद्धिमत्ता को नष्ट किया, इसलिये मैंने तुम्हें धरती पर ला फेंका, और अब अन्य राजा तुम्हें आँख फाड़ कर देखते हैं।

18तुमने अनेक गलत काम किये, तुम बहुत कपटी व्यापारी थे। इस प्रकार तुमने पवित्र स्थानों को अपवित्र किया, इसलिये मैं तुम्हारे ही भीतर से अग्नि लाया, इसने तुमको जला दिया, तुम भूमि पर राख हो गए। अब हर कोई तुम्हारी लज्जा देख सकता है।

19अन्य राष्ट्रों में सभी लोग, जो तुम पर घटित हुआ, उसके बारे में शोकग्रस्त थे। जो तुम्हें हुआ, वह लोगों को भयभीत करेगा। तुम समाप्त हो गये हो!'"

सीदोन के विरुद्ध सन्देश

20यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 21"मनुष्य के पुत्र, सीदोन पर ध्यान दो और मेरे लिये उस स्थान के विरुद्ध कुछ कहो। 22कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "'सीदोन, मैं तेरे विरुद्ध हूँ! तुम्हारे लोग मेरा सम्मान करना सीखेंगे, मैं सीदोन को दण्ड दूँगा, तब लोग समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ। तब वे समझेंगे कि मैं पवित्र हूँ और वे मुझको उस रूप में लेंगे।

23मैं सीदोन में रोग और मृत्यु भेजूँगा, नगर के बाहर तलवार (शत्रु सैनिक) उस मृत्यु को लायेगी। तब वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ!'"

राष्ट्र इस्राएल का मजाक उड़ाना बन्द करेंगे।

24"'अतीत काल में इस्राएल के चारों ओर के देश उससे घृणा करते थे। किन्तु उन अन्य देशों के लिये बुरी घटनायें घटेंगी। कोई भी तेज काँटे या कंटीली झाड़ी इस्राएल के परिवार को घायल करने वाली नहीं रह जाएगी। तब वे जानेंगे कि मैं उनका स्वामी यहोवा हूँ।'"

25मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैंने इस्राएल के लोगों को अन्य राष्ट्रों में बिखेर दिया। किन्तु मैं फिर इस्राएल के परिवार को एक साथ इकट्ठा करूँगा। तब वे राष्ट्र समझेंगे कि मैं पवित्र हूँ और वे मुझे उसी रूप में लेंगे। उस समय इस्राएल के लोग अपने देश में रहेंगे अर्थात जिस देश को मैंने अपने सेवक याकूब को दिया। 26वे उस देश में सुरक्षित रहेंगे। वे घर बनायेंगे तथा अंगूर की बेलें लगाएंगे। मैं उसके चारों ओर के राष्ट्रों को दण्ड दूँगा जिन्होंने उससे घृणा की। तब इस्राएल के लोग सुरक्षित रहेंगे। तब वे समझेंगे कि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ।"

मिस्र के विरुद्ध सन्देश

29 देश निकाले के दसवें वर्ष के दसवें महीने (जनवरी) के बारहवें दिन मेरे स्वामी यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, मिस्र के राजा फिरौन की ओर ध्यान दो, मेरे लिये उसके तथा

मिस्र के विरुद्ध कुछ कहो। 3कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: मिस्र के राजा फिरौन, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। तुम नील नदी के किनारे विश्राम करते हुए विशाल दैत्य हो। तुम कहते थे, "यह मेरी नदी है! मैंने यह नदी बनाई है!"

4-5 किन्तु मैं तुम्हारे जबड़े में आँकड़े दूँगा। नील नदी की मछलियाँ तुम्हारी चमड़ी से चिपक जाएंगी। मैं तुमको और तुम्हारी मछलियाँ को तुम्हारी नदियों से बाहर कर सूखी भूमि पर फेंक दूँगा, तुम धरती पर गिरोगे, और कोई न तुम्हें उठायेगा, न ही दफनायेगा। मैं तुम्हें जंगली जानवरों और पक्षियों को दूँगा, तुम उनके भोजन बनोगे।

6तब मिस्र में रहने वाले सभी लोग–जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ! मैं इन कामों को क्यों करूँगा? क्योंकि इस्राएल के लोग सहारे के लिये मिस्र पर झुके, किन्तु मिस्र केवल दुर्बल घास का तिनका निकला।

7इस्राएल के लोग सहारे के लिये मिस्र पर झुके और मिस्र ने केवल उनके हाथों और कन्धों को विदीर्ण

किया। वे सहारे के लिये तुम पर झुके किन्तु तुमने उनकी पीठ को तोड़ा और मरोड़ दिया।'"

8इसलिये मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:

"मैं तुम्हारे विरुद्ध तलवार लाऊँगा। मैं तुम्हारे सभी लोगों और जानवरों को नष्ट करुँगा।

9मिस्र खाली और नष्ट हो जाएगा। तब वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

परमेश्वर ने कहा, "मैं वे काम क्यों करूँगा? क्योंकि तुमने कहा, 'यह मेरी नदी है। मैंने इस नदी को बनाया।' 10अत: मैं (परमेश्वर) तुम्हारे विरुद्ध हूँ। मैं तुम्हारी नील नदी की कई शाखाओं के विरुद्ध हूँ। मैं मिस्र को पूरी तरह नष्ट करूँगा। मिग्दोल से सवेन तक तथा जहाँ तक कूश की सीमा है, वहाँ तक नगर खाली होंगे। 11कोई व्यक्ति या जानवर मिस्र से नहीं गुजरेगा। कोई व्यक्ति या जानवर मिस्र में चालीस वर्ष तक नहीं रहेगा। 12मैं मिस्त्र देश को उजाड़ कर दूँगा और उसके नगर चालीस वर्ष तक उजाड़ रहेंगे। मैं मिस्रियों को राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। मैं उन्हें विदेशों में बसा दूँगा।"

13मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं मिस्र के लोगों को कई राष्ट्रों में बिखेरूँगा। किन्तु चालीस वर्ष के अन्त में फिर मैं उन लोगों को एक साथ इकट्ठा करूँगा। 14मैं मिस्र के बंदियों को वापस लाऊँगा। मैं मिस्रियों को पत्रास के प्रदेश में, जहाँ वे उत्पन्न हुए थे, वापस लाऊँगा। किन्तु उनका राज्य महत्वपूर्ण नहीं होगा। 15यह सबसे कम महत्वपूर्ण राज्य होगा। मैं इसे फिर अन्य राष्ट्रों से ऊपर कभी नहीं उठाऊँगा। मैं उन्हें इतना छोटा कर दूँगा कि वे राष्ट्रों पर शासन नहीं कर सकेंगे 16और इस्राएल का परिवार फिर कभी मिस्र पर आश्रित नहीं रहेगा। इस्राएली अपने पाप को याद रखेंगे। वे याद रखेंगे कि वे सहायता के लिये मिस्र की ओर मुड़े, परमेश्वर की ओर नहीं और वे समझेंगे कि मैं यहोवा और स्वामी हूँ।"

बाबुल मिस्र को लेगा

17देश निकाले के सत्ताईसवें वर्ष के पहले महीने (अप्रैल) के पहले दिन यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 18"मनुष्य के पुत्र, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने सोर के विरुद्ध अपनी सेना को भीषण युद्ध में लगाया। उन्होंने हर एक सैनिक के बाल कटवा दिये। भारी वजन ढोने के कारण हर एक कंधा रगड़ से नंगा हो गया। नबूकदनेस्सर और उसकी सेना ने सोर को हराने के लिये कठिन प्रयत्न किया। किन्तु वे उन कठिन प्रयत्नों से कुछ पा न सके।" 19अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को मिस्र देश दूँगा और नबूकदनेस्सर मिस्र के लोगों को ले जाएगा। नबूकदनेस्सर मिस्र की कीमती चीजों को ले जाएगा। यह नबूकदनेस्सर की सेना का वेतन होगा। 20मैंने नबूकदनेस्सर को मिस्र देश उसके कठिन प्रयत्न के पुरस्कार के रूप में दिया है। क्यों? क्योंकि उन्होंने मेरे लिये काम किया!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

21"उस दिन मैं इस्राएल के परिवार को शक्तिशाली बनाऊँगा और तुम्हारे लोग मिस्रियों का मजाक उड़ाएंगे। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

बाबुल की सेना मिस्र पर आक्रमण करेगी

30 यहोवा का वचन मुझे फिर मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, मेरे लिए कुछ कहो। कहो, मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: रोओ और कहो, वह भंयकर दिन आ रहा है।

3वह दिन समीप है! हाँ, न्याय करने का यहोवा का दिन समीप है। यह एक दुर्दिन होगा। यह राष्ट्रों के साथ न्याय करने का समय होगा!

4मिस्र के विरुद्ध तलवार आएगी! कूश के लोग भय से काँप उठेंगे, जिस समय मिस्र का पतन होगा। बाबुल की सेना मिस्र के लोगों को बन्दी बना कर ले जाएगी। मिस्र की नींव उखड़ जाएगी!

5"'अनेक लोगों ने मिस्र से शान्ति–सन्धि की। किन्तु कूश, पूत, लूद, समस्त अरब, कूब और इस्राएल के सभी लोग नष्ट होंगे!

6मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: हाँ, जो मिस्र की सहायता करते हैं उनका पतन होगा! उसकी शक्ति का गर्व नीचा होगा। मिस्र के लोग युद्ध में मारे जाएंगे मिग्दोल से लेकर सवेन तक के। मेरे स्वामी यहोवा ने वे बातें कहीं!

7मिस्र उन देशों में मिल जाएगा जो नष्ट कर दिए गए। मिस्र उन खाली देशों में से एक होगा।

8मैं मिस्र में आग लगाऊँगा और उसके सभी सहायक नष्ट हो जायेंगे। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!

9'"उस समय मैं दूतों को भेजूँगा। वे जहाजों में कूश को बुरी खबरें पहुँचाने के लिये जाएंगे। कूश अब अपने को सुरक्षित समझता है। किन्तु कूश के लोग भय से तब काँप उठेंगे जब मिस्र दण्डित होगा। वह समय आ रहाहै!'"

10मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:

"मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर का उपयोग करूँगा और मैं मिस्र के लोगों को नष्ट करूँगा।

11नबूकदनेस्सर और उसके लोग राष्ट्रों में सर्वाधिक भंयकर हैं। मैं उन्हें मिस्र को नष्ट करने के लिये लाऊँगा। वे मिस्र के विरुद्ध अपनी तलवारें निकालेंगे। वे प्रदेश को शवों से पाट देंगे।

12मैं नील नदी को सूखी भूमि बना दूँगा। तब मैं सूखी भूमि को बुरे लोगों को बेच दूँगा। मैं अजनबियों का उपयोग उस देश को खाली करने के लिये करुँगा। मैं यहोवा ने, यह कहा है!"

मिस्र की देवमूर्तियाँ नष्ट की जाएंगी

13मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "मैं मिस्र में
देवमूर्तियों को नष्ट करूँगा। मैं मूर्तियों को नोप से बाहर
करूँगा। मिस्र देश में कोई भी प्रमुख भविष्य के लिये
नहीं होगा, और मैं मिस्र में भय भर दूँगा।
14मैं पत्रोस को खाली करा दूँगा। मैं सोअन में आग
लगा दूँगा। मैं नो को दण्ड दूँगा
15और मैं सीन नामक मिस्र के किले के विरुद्ध
अपने क्रोध की वर्षा करूँगा।! मैं नो के लोगों को नष्ट
करूँगा।
16मैं मिस्र में आग लगाऊँगा। सीन नामक स्थान भय
से पीड़ित होगा, नो नगर में सैनिक टूट पड़ेंगे और नो
को प्रतिदिन नयी परेशानियाँ होंगी।
17आवेन और पीबेसेत के युवक युद्ध में मारे जाएंगे
और स्त्रियाँ पकड़ी जाएँगी और ले जाई जाएँगी।
18तहपन्हेस का यह काला दिन होगा, जब मैं मिस्र के
अधिकार को समाप्त करूँगा मिस्र की गर्वीली शक्ति
समाप्त होगी! मिस्र को दुर्दिन ढक लेगा और उसकी
पुत्रियाँ पकड़ी और ले जायी जाएँगी।
19इस प्रकार मैं मिस्र को दण्ड दूँगा। तब वे जानेंगे कि
मैं यहोवा हूँ!"

मिस्र सदा के लिये दुर्बल होगा

20देश निकाले के ग्यारहवें वर्ष में प्रथम महीने (अप्रैल)
के सातवें दिन यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने
कहा, 21"मनुष्य के पुत्र, मैंने मिस्र के राजा फिरौन की
भुजा (शक्ति) तोड़ डाली है। कोई भी उसकी भुजा पर
पट्टी नहीं लपेटेगा। उसका घाव नहीं भरेगा। अत:
उसकी भुजा तलवार पकड़ने योग्य शक्ति वाली नहीं
होगी।"
22मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं मिस्र के राजा
फिरौन के विरुद्ध हूँ। मैं उसकी दोनों भुजाओं
शक्तिशाली भुजा और पहले से टूटी भुजा–को तोड़
डालूँगा। मैं उसके हाथ से तलवार को गिरा दूँगा। 23मैं
मिस्रियों को राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। 24मैं बाबुल के राजा
की भुजाओं को शक्तिशाली बनाऊँगा। मैं अपनी तलवार
उसके हाथ में दूँगा। किन्तु मैं फिरौन की भुजा को तोड़
दूँगा। तब फिरौन पीड़ा से चीखेगा, राजा की चीख एक
मरते हुए व्यक्ति की चीख सी होगी। 25अत: मैं बाबुल के
राजा की भुजाओं को शक्तिशाली बनाऊँगा, किन्तु
फिरौन की भुजायें कट गिरेंगी। तब वे जानेंगे कि मैं
यहोवा हूँ।
"मैं बाबुल के राजा के हाथों अपनी तलवार दूँगा। तब
वह मिस्र देश के विरुद्ध अपनी तलवार को आगे बढ़ायेगा।
26मैं मिस्रियों को राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। तब वे समझेंगे
कि मैं यहोवा हूँ!"

अश्शूर एक देवदार वृक्ष की तरह है

31 देश निकाले के ग्यारहवें वर्ष में तीसरे महीने
(जून) के प्रथम दिन यहोवा का संदेश मुझे
मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, मिस्र के राजा
फिरौन और उसके लोगों से यह कहो: 'तुम्हारी महानता
में कौन तुम्हारे समान है?
3अश्शूर, लबानोन में, सुन्दर शाखाओं सहित एक
देवदार का वृक्ष था। वन की छाया–युक्त और अति
ऊँचा एक देवदार का वृक्ष था। इसके शिखर जलद
भेदी थे!
4जल वृक्ष को उगाता था। गहरी नदियाँ वृक्ष को
ऊँचा करती थीं। नदियाँ उन स्थान के चारों ओर बहती
थीं, जहाँ वृक्ष लगे थे। केवल इसकी धारायें ही खेत के
अन्य वृक्षों तक बहती थीं।
5इसलिये खेत के सभी वृक्षों से ऊँचा वृक्ष वही था
और इसने कई शाखायें फैला रखी थीं। वहाँ काफी जल
था। अत: वृक्ष–शाखायें बाहर फैली थीं।
6वृक्ष की शाखाओं में संसार के सभी पक्षियों ने
घोंसले बनाए थे। वृक्ष की शाखाओं के नीचे खेत के
सभी जानवर बच्चों को जन्म देते थे। सभी बड़े राष्ट्र उस
वृक्ष की छाया में रहते थे।
7अत: वृक्ष अपनी महानता और अपनी लम्बी शाखाओं
में सुन्दर था। क्यों? क्योंकि इसकी जड़ें यथेष्ट जल
तक पहुँची थीं!
8परमेश्वर के उद्यान के देवदारु वृक्ष भी, उतने बड़े
नहीं थे जितना यह वृक्ष। सनौवर के वृक्ष इतनी अधिक
शाखायें नहीं रखते, चिनार–वृक्ष भी ऐसी शाखायें नहीं
रखते, परमेश्वर के उद्यान का कोई भी वृक्ष, इतना
सुन्दर नहीं था जितना यह वृक्ष।
9मैंने अनेक शाखाओं सहित इस वृक्ष को सुन्दर
बनाया और परमेश्वर के उद्यान अदन के सभी वृक्ष
इससे ईर्ष्या करते थे!'"
10अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "वृक्ष ऊँचा
हो गया है। इसने अपने शिखरों को बादलों में पहुँचा
दिया है। वृक्ष गर्वीला है क्योंकि यह ऊँचा है! 11इसलिये
मैंने एक शक्तिशाली राजा को इस वृक्ष को लेने दिया।
उस शासक ने वृक्ष को उसके बुरे कामों के लिये दण्ड
दिया। मैंने उस वृक्ष को अपने उद्यान से बाहर किया है।
12अजनबी अत्याधिक भंयकर राष्ट्रों ने इसे काट डाला
और छोड़ दिया। वृक्ष की शाखायें पर्वतों पर और सारी
घाटी में गिरीं। उस प्रदेश में बहने वाली नदियों में वे टूटे
अंग बह गए। वृक्ष के नीचे कोई छाया नहीं रह गई,
अत: सभी लोगों ने उसे छोड़ दिया। 13अब उस गिरे वृक्ष
में पक्षी रहते हैं और इसकी गिरी शाखाओं पर जंगली
जानवर चलते हैं। 14"अब कोई भी, उस जल का वृक्ष
गर्वीला नहीं होगा। वे बादलों तक पहुँचना नहीं चाहेंगे।
कोई भी शक्तिशाली वृक्ष, जो उस जल को पीता है,

ऊँचा होने की अपनी प्रशंसा नहीं करेगा। क्यों? क्योंकि उन सभी की मृत्यु निश्चित हो चुकी है। वे सभी मृत्यु के स्थान शेओल नामक पाताल लोक में चले जाएंगे। वे उन अन्य लोगों के साथ हो जाएंगे जो मरे और नीचे नरक में चले गए।"

15मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "उस दिन जब तक वृक्ष शेओल को गया मैंने लोगों से शोक मनवाया। मैंने गहरे जल को, उसके लिये, शोक से ढक दिया। मैंने वृक्ष की नदियों को रोक दिया और वृक्ष के लिये जल का बहना रूक गया। मैंने लबानोन से इसके लिये शोक मनवाया। खेत के सभी वृक्ष इस बड़े वृक्ष के शोक से रोगी हो गए। 16मैंने वृक्ष को गिराया और वृक्ष के गिरने की ध्वनि के भय से राष्ट्र काँप उठे। मैंने वृक्ष को मृत्यु के स्थान पर पहुँचाया। यह नीचे उन लोगों के साथ रहने गया जो उस नरक में नीचे गिरे हुए थे। अतीत में एदेन के सभी वृक्ष अर्थात् लबानोन के सर्वोत्तम वृक्ष उस पानी को पीते थे। उन सभी वृक्षों ने पाताल लोक में शान्ति प्राप्त की। 17हाँ, वे वृक्ष भी बड़े वृक्ष के साथ मृत्यु के स्थान पर गए। उन्होंने उन व्यक्तियों का साथ पकड़ा जो युद्ध में मर गए थे। उस बड़े वृक्ष ने अन्य वृक्षों को शक्तिशाली बनाया। वे वृक्ष, राष्ट्रों में, उस बड़े वृक्ष की छाया में रहते थे।

18"अत: मिस्र, एदेन में बहुत से विशाल और शक्तिशाली वृक्ष है। उनमें से किस वृक्ष के साथ मैं तुम्हारी तुलना करूँगा! तुम एदेन के वृक्षों के साथ पाताल लोक को जाओगे! मृत्यु के स्थान में तुम उन विदेशियों और युद्ध में मारे गए व्यक्तियों के साथ में लेटोगे।

"हाँ, यह फिरौन और उसके सभी लोगों के साथ होगा!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

फिरौन: एक सिंह या दैत्य?

32 देश–निकाले के बारहवें वर्ष के बारहवें महीने (मार्च) के प्रथम दिन यहोवा का वचन मेरे पास आया। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, मिस्र के राजा के विषय में यह करुणगीत गाओ। उससे कहो:

'तुमने सोचा था तुम शक्तिशाली युवा सिंह हो, राष्ट्रों में गर्व सहित टहलते हुए। किन्तु सचमुच समुद्र के दैत्य जैसे हो। तुम प्रवाह को धकेल कर रास्ता बनाते हो, और अपने पैरों से जल को मटमैला करते हो। तुम मिस्र की नदियों को उद्वेलित करते हो'"

3मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "मैंने बहुत से लोगों को एक साथ इकट्ठा किया है। अब मैं तुम्हारे ऊपर अपना जाल फेंकूँगा। तब वे लोग तुम्हें खींच लेंगे।

4तब मैं तुम्हें सूखी जमीन पर गिरा दूँगा। मैं तुम्हें खेत में फेंकूँगा। मैं सभी पक्षियों को तुम्हें खाने के लिये बुलवाऊँगा। मैं हर जगह से जंगली जानवरों को तुम्हें खाने और पेट भरने के लिये बुलवाऊँगा।

5मैं तुम्हारे शरीर को पर्वतों पर बिखेरुँगा। मैं तुम्हारे शव से घाटियों को भर दूँगा।

6मैं तुम्हारा रक्त पर्वतों पर डालूँगा और धरती इसे सोखेगी। नदियाँ तुमसे भर जाएंगी।

7मैं तुमको लुप्त कर दूँगा। मैं नभ को ढक दूँगा और नक्षत्रों को काला कर दूँगा। मैं सूर्य को बादल से ढक दूँगा और चन्द्र नहीं चमकेगा।

8मैं सभी चमकती ज्योतियों को नभ में तुम्हारे ऊपर काला बनाऊँगा। मैं तुम्हारे सारे देश में अंधेरा कर दूँगा।

9"बहुत से लोग शोकग्रस्त और व्यग्र होंगे, जब वे सुनेंगे कि तुमको नष्ट करने के लिये मैं एक शत्रु को लाया। राष्ट्र जिन्हें तुम जानते भी नहीं, तिलमिला जायेंगे। 10मैं बहुत से लोगों को तुम्हारे बारे में आघात पहुँचाऊँगा उनके राजा तुम्हारे बारे में उस समय बुरी तरह से भयभीत होंगे जब मैं उनके सामने अपनी तलवार चलाऊँगा। जिस दिन तुम्हारा पतन होगा उसी दिन, हर एक क्षण, राजा लोग भयभीत होंगे। हर एक राजा अपने जीवन के लिये भयभीत होगा।"

11क्यों? क्योंकि मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "बाबुल के राजा की तलवार तुम्हारे विरुद्ध युद्ध करने आयेगी। 12मैं उन सैनिकों का उपयोग तुम्हारे लोगों को युद्ध में मार डालने में करुँगा। वे सैनिक राष्ट्रों में सबसे भयंकर राष्ट्र से आते हैं। वे उन चीजों को नष्ट कर देंगे जिनका गर्व मिस्र को है। मिस्र के लोग नष्ट कर दिये जायेंगे। 13मिस्र में नदियों के सहारे बहुत से जानवर हैं। मैं इन जानवरों को भी नष्ट करूँगा! लोग भविष्य में, अपने पैरों से पानी को गंदा नहीं करेंगे। गायों के खुर भविष्य में पानी को मैला नहीं करेंगे। 14इस प्रकार मैं मिस्र में पानी को शान्त बनाऊँगा। मैं उनकी नदियों को मन्द बहाऊँगा वे तेल की तरह बहेंगी।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा,

15"मैं मिस्र देश को खाली कर दूँगा। वह हर चीज से रहित होगा। मैं मिस्र में रहने वाले सभी लोगों को दण्ड दूँगा। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा और स्वामी हूँ!

16"यह एक करुणगीत है जिसे लोग मिस्र के लिये गायेंगे। दूसरे राष्ट्रों में पुत्रियाँ (नगर) मिस्र के बारे में इस करुण गीत को गायेंगी। वे इसे, मिस्र और उसके सभी लोगों के बारे में करुण गीत के रूप में गायेंगी।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था!

मिस्र का नष्ट किया जाना

17देश निकाले के बारहवें वर्ष में, उस महीने के पन्द्रहवें दिन, यहोवा का संदेश मुझे मिला। उसने कहा, 18"मनुष्य के पुत्र, मिस्र के लोगों के लिये रोओ। मिस्र और उन पुत्रियों को, शक्तिशाली राष्ट्र से कब्र तक पहुँचाओ। उन्हें उस पाताल लोक में पहुँचाओ जहाँ वे उन अन्य व्यक्तियों के साथ होंगे जो उस नरक में गए।

19"मिस्र, तुम किसी अन्य से अच्छे नहीं हो। मृत्यु के
स्थान पर चले जाओ। जाओ और उन विदेशियों के
साथ लेटो।
20"मिस्र को उन सभी अन्य लोगों के साथ रहने
जाना पड़ेगा जो युद्ध में मारे गए थे। शत्रु ने उसे और
उसके लोगों को उठा फेंका है।
21"मजबूत और शक्तिशाली व्यक्ति युद्ध में मारे गए।
वे विदेशी मृत्यु के स्थान पर गए। उस स्थान से वे लोग
मिस्र और उसके सहायकों से बातें करेंगे। वे जो युद्ध में
मारे गये थे।
22-23"अश्शूर और उसकी सारी सेना वहाँ मृत्यु के
स्थान पर हैं। उनकी कब्रें नीचे गहरे नरक में हैं। वे
सभी अश्शूर के सैनिक युद्ध में मारे गए। उनकी कब्रे
उसकी कब्र के चारों ओर हैं। जब वे जीवित थे तब वे
लोगों को भयभीत करते थे। किन्तु अब वे सभी पूर्ण
शान्त हैं वे सभी युद्ध में मारे गए थे।
24"एलाम वहाँ है और इसकी सारी सेना उसकी कब्र
के चारों ओर हैं। वे सभी युद्ध में मारे गए। वे विदेशी
गहरे नीचे धरती में गए। जब वे जीवित थे, वे लोगों को
भयभीत करते थे। किन्तु वे अपनी लज्जा को अपने
साथ उस गहरे नरक में ले गए। 25उन्होंने एलाम और
उसके सैनिकों के लिए, जो युद्ध में मारे गए हैं, बिस्तर
लगा दिया है। एलाम की सारी सेना उसकी कब्र के
चारों ओर हैं। ये सभी विदेशी युद्ध में मारे गए थे। जब वे
जीवित थे, वे लोगों को डराते थे। किन्तु वे अपनी लज्जा
को अपने साथ उस गहरे नरक में ले गए। वे उन सभी
लोगों के साथ रखे गये, जो मारे गए थे।
26"मेशेक, तूबल और उनकी सारी सेनायें वहाँ है।
उनकी कब्रें इनके चारों ओर हैं। वे सभी विदेशी युद्ध में
मारे गए थे। जब वे जीवित थे तब वे लोगों को भयभीत
करते थे। 27किन्तु अब वे शक्तिशाली व्यक्तियों के साथ
लेटे हैं जो बहुत पहले मर चुके थे। वे अपने युद्ध के
अस्त्र-शस्त्रों के साथ दफनाए गए। उनकी तलवारें
उनके सिर के नीचे रखी जाएंगी। किन्तु उनके पाप
उनकी हड्डियों पर हैं। क्यों? क्योंकि जब वे जीवित थे,
उन्होंने लोगों को डराया था।
28"मिस्र, तुम भी नष्ट होगे। तुम उन विदेशियों के
साथ लेटोगे। तुम उन अन्य सैनिकों के साथ लेटोगे जो
युद्ध में मारे जा चुके हैं।
29"एदोम भी वहीं है। उसके राजा और अन्य प्रमुख
उसके साथ वहाँ हैं। वे शक्तिशाली सैनिक भी थे। किन्तु
अब वे उन अन्य लोगों के साथ लेटे हैं। जो युद्ध में मारे
गए थे। वे उन विदेशियों के साथ लेटे हैं। वे उन
व्यक्तियों के साथ नीचे नरक में चले गए।
30"उत्तर के सभी शासक वहाँ हैं। वहाँ सीदोन के
सभी सैनिक हैं। उनकी शक्ति लोगों को डराती थी।
किन्तु वे हक्के-बक्के हैं। वे विदेशी उन अन्य व्यक्तियों
के साथ लेटे हैं जो युद्ध में मारे गए थे। वे अपनी लज्जा
अपने साथ उस गहरे नरक में ले गए।
31"फिरौन उन लोगों को देखेगा जो मृत्यु के स्थान
पर गए। वह और उसके साथ सभी लोगों को पूर्ण
शान्ति मिलेगी। हाँ, फिरौन और उसकी सेना युद्ध में
मारी जाएगी।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।
32"जब फिरौन जीवित था तब मैंने लोगों को उससे
भयभीत कराया। किन्तु अब वह उन विदेशियों के साथ
लेटेगा। फिरौन और उसकी सेना उन अन्य सैनिकों के
साथ लेटेगी जो युद्ध में मारे गए थे।" मेरे स्वामी यहोवा
ने यह कहा था।

परमेश्वर यहेजकेल को इस्राएल का पहरेदार चुनता है

33 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, अपने लोगों से बातें करो।
उनसे कहो, 'मैं शत्रु के सैनिकों को उस देश के विरुद्ध
युद्ध के लिये ला सकता हूँ। जब ऐसा होगा तो लोग एक
व्यक्ति को पहरेदार के रूप में चुनेंगे। 3यदि पहरेदार
शत्रु के सैनिकों को आते देखता है, तो वह तुरही
बजाता है और लोगों को सावधान करता है। 4यदि लोग
उस चेतावनी को सुनें किन्तु अनसुनी करें तो शत्रु उन्हें
पकड़ेगा और उन्हें बन्दी के रूप में ले जायेगा। यह व्यक्ति
अपनी मृत्यु के लिये स्वयं उत्तरदायी होगा। 5उसने तुरही
सुनी, पर चेतावनी अनसुनी की। इसलिये अपनी मृत्यु
के लिये वह स्वयं दोषी है। यदि उसने चेतावनी पर ध्यान
दिया होता तो उसने अपना जीवन बचा लिया होता।
6"'किन्तु यह हो सकता है कि पहरेदार शत्रु के
सैनिकों को आता देखता है, किन्तु तुरही नहीं बजाता।
उस पहरेदार ने लोगों को चेतावनी नहीं दी। शत्रु उन्हें
पकड़ेगा और उन्हें बन्दी बनाकर ले जाएगा। वह व्यक्ति
ले जाया जाएगा क्योंकि उसने पाप किया। किन्तु पहरेदार
भी उस आदमी की मृत्यु का उत्तरदायी होगा।'"
7"अब, मनुष्य के पुत्र, मैं तुमको इस्राएल के परिवार
का पहरेदार चुन रहा हूँ। यदि तुम मेरे मुख से कोई
सन्देश सुनो तो तुम्हें मेरे लिये लोगों को चेतावनी देनी
चाहिए। 8मैं तुमसे कह सकता हूँ, 'यह पापी व्यक्ति
मरेगा।' तब तुम्हें उस व्यक्ति के पास जाकर मेरे लिये
उसे चेतावनी देनी चाहिए। यदि तुम उस पापी व्यक्ति को
चेतावनी नहीं देते और उसे अपना जीवन बदलने को
नहीं कहते, तो वह पापी व्यक्ति मरेगा, क्योंकि उसने
पाप किया। किन्तु मैं तुम्हें उसकी मृत्यु का उत्तरदायी
बनाऊँगा। 9किन्तु यदि तुम उस बुरे व्यक्ति को अपना
जीवन बदलने के लिये और पाप करना छोड़ने के लिये
चेतावनी देते हो और यदि वह पाप करना छोड़ने से
इन्कार करता है तो वह मरेगा क्योंकि उसने पाप
किया, किन्तु तुमने अपना जीवन बचा लिया।"

परमेश्वर लोगों को नष्ट करना नहीं चाहता

10"अत: मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के परिवार से मेरे
लिये कहो। वे लोग कह सकते हैं, 'हम लोगों ने पाप
किया है और नियमों को तोड़ा है। हमारे पाप हमारी
सहनशक्ति के बाहर हैं। हम उन पापों के कारण नाश
हो रहे हैं। हम जीवित रहने के लिये क्या कर सकते
हैं।'
11"तुम्हें उनसे कहना चाहिए, 'मेरा स्वामी यहोवा
कहता है: मैं अपनी जीवन की शपथ खाकर विश्वास
दिलाता हूँ कि मैं लोगों को मरता देख कर आनन्दित
नहीं होता, पापी व्यक्तियों को भी नहीं। मैं नहीं चाहता
कि वे मरें। मैं उन पापी व्यक्तियों को अपने पास लौटाना
चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वे अपने जीवन को बदलें
जिससे वे जीवित रह सकें। अत: मेरे पास लौटो! बुरे
काम करना छोड़ो! इस्राएल के परिवार, तुम्हें मरना ही
क्यों चाहिए?"
12"मनुष्य के पुत्र, अपने लोगों से कहो: 'यदि किसी
व्यक्ति ने अतीत में पुण्य किया है तो उससे उसका
जीवन नहीं बचेगा। यदि वह बच जाये और पाप करना
शुरु करे। यदि किसी व्यक्ति ने अतीत में पाप किया, तो
वह नष्ट नहीं किया जाएगा, यदि वह पाप से दूर हट
जाता है। अत: याद रखो, एक व्यक्ति द्वारा अतीत में
किये गए पुण्य कर्म उसकी रक्षा नहीं करेंगे, यदि वह
पाप करना आरम्भ करता है।
13"यह हो सकता है कि मैं किसी अच्छे व्यक्ति के
लिये कहूँ कि वह जीवित रहेगा। किन्तु यह हो सकता
है कि वह अच्छा व्यक्ति यह सोचना आरम्भ करे कि
अतीत में उसके द्वारा किये गए अच्छे कर्म उसकी रक्षा
करेंगे। अत: वह बुरे काम करना आरम्भ कर सकता
है। किन्तु मैं उसके अतीत के पुण्यों को याद नहीं
रखूँगा! नहीं, वह उन पापों के कारण मरेगा जिन्हें वह
करना आरम्भ करता है।
14"या यह हो सकता है कि मैं किसी पापी व्यक्ति के
लिये कहूँगा कि वह मरेगा। किन्तु वह अपने जीवन को
बदल सकता है। वह पाप करना छोड़ सकता है और
ठीक-ठीक रहना आरम्भ कर सकता है। वह अच्छा
और उचित हो सकता है। 15वह उस गिरवीं की चीज
को लौटा सकता है जिसे उसने ऋण में मुद्रा देते समय
रखा था। वह उन चीजों के लिये भुगतान कर सकता है
जिन्हें उसने चुराया था। वह उन नियमों का पालन कर
सकता है जो जीवन देते हैं। वह बुरे काम करना छोड़
देता है। तब वह व्यक्ति निश्चय ही जीवित रहेगा। वह
मरेगा नहीं। 16मैं उसके अतीत के पापों को याद नहीं
करुँगा। क्यों? क्योंकि वह अब ठीक-ठीक रहता है
और उचित व्यवहार रखता है। अत: वह जीवित रहेगा!
17"किन्तु तुम्हारे लोग कहते हैं, 'यह उचित नहीं है!
यहोवा मेरा स्वामी वैसा नहीं हो सकता!'
"परन्तु वे ही लोग हैं जो उचित नहीं हैं! वे ही लोग हैं,
जिन्हें बदलना चाहिए! 18यदि अच्छा व्यक्ति पुण्य करना
बन्द कर देता है और पाप करना आरम्भ करता है तो
वह अपने पापों के कारण मरेगा। 19और यदि कोई
पापी पाप करना छोड़ देता है और ठीक-ठीक तथा
उचित रहना आरम्भ करता है तो वह जीवित रहेगा!
20किन्तु तुम लोग अब भी कहते हो कि मैं उचित नहीं
हूँ। किन्तु मैं सत्य कह रहा हूँ। इस्राएल के परिवार, हर
एक व्यक्ति के साथ न्याय, वह जो करता है, उसके
अनुसार होगा!"

यरूशलेम पर अधिकार कर लिया गया

21देश-निकाले के बारहवें वर्ष में, दसवें महीने
(जनवरी) के पाँचवें दिन एक व्यक्ति मेरे पास यरूशलेम
से आया। वह वहाँ के युद्ध से बच निकला था। उसने
कहा, "नगर (यरूशलेम) पर अधिकार हो गया!"
22ऐसा हुआ कि जिस दिन वह व्यक्ति मेरे पास आया
उसकी पूर्व संध्या को, मेरे स्वामी यहोवा की शक्ति मुझ
पर उतरी। परमेश्वर ने मुझे बोलने योग्य नहीं बनाया।
जिस समय वह व्यक्ति मेरे पास आया, यहोवा ने मेरा
मुख खोल दिया था और फिर से मुझे बोलने दिया।
23तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 24"मनुष्य
के पुत्र, इस्राएल के ध्वस्त नगर में इस्राएली लोग रह रहे
हैं। वे लोग कह रहे हैं, 'इब्राहीम केवल एक व्यक्ति था
और परमेश्वर ने उसे यह सारी भूमि दे दी। अब हम
अनेक लोग हैं अत: निश्चय ही यह भूमि हम लोगों की
है! यह हमारी भूमि है!'
25"तुम्हें उनसे कहना चाहिये कि मेरा स्वामी यहोवा
यह कहता है, 'तुम लोग रक्त-युक्त माँस खाते हो। तुम
लोग अपनी देवमूर्तियों से सहायता की आशा करते हो।
तुम लोगों को मार डालते हो। अत: मैं तुम लोगों को यह
भूमि क्यों दूँ? 26तुम अपनी तलवार पर भरोसा करते
हो। तुममें से हर एक भंयकर पाप करता है। तुममें से
हर एक अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ व्यभिचार
करता है। अत: तुम भूमि नहीं पा सकते।'
27"तुम्हें कहना चाहिये कि स्वामी यहोवा यह कहता
है, 'मैं अपने जीवन की शपथ खा कर प्रतिज्ञा करता
हूँ, कि जो लोग उन ध्वस्त नगरों में रहते हैं, वे तलवार
के घाट उतारे जाएंगे। यदि कोई उस देश से बाहर होगा
तो मैं उसे जानवरों से मरवाऊँगा और खिलाऊँगा। यदि
लोग किले और गुफाओं में छिपे होंगे तो वे रोग से
मरेंगे। 28मैं भूमि को खाली और बरबाद करुँगा। वह
देश उन सभी चीजों को खो देगा जिन पर उसे गर्व था।
इस्राएल के पर्वत खाली हो जाएंगे। उस स्थान से कोई
गुजरेगा नहीं। 29उन लोगों ने अनेक भंयकर पाप किये
हैं। अत: मैं उस देश को खाली और बरबाद करुँगा। तब
वे लोग जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।'"

30"अब तुम्हारे विषय में, मनुष्य के पुत्र, तुम्हारे लोग दीवारों के सहारे झुके हुए और अपने दरवाजों में खड़े हैं और वे तुम्हारे बारे में बात करते हैं। वे एक दूसरे से कहते हैं, 'आओ, हम जाकर सुनें जो यहोवा कहता है।' 31अत: वे तुम्हारे पास वैसे ही आते हैं जैसे वे मेरे लोग हों। वे तुम्हारे सामने मेरे लोगों की तरह बैठेंगे। वे तुम्हारा सन्देश सुनेंगे। किन्तु वे वह नहीं करेंगे जो तुम कहोगे। वे केवल वह करना चाहते हैं जो अनुभव करने में अच्छा हो। वे लोगों को धोखा देना चाहते हैं और अधिक धन कमाना चाहते हैं।

32"तुम इन लोगों की दृष्टि में प्रेमगीत गाने वाले गायक से अधिक नहीं हो। तुम्हारा स्वर अच्छा है। तुम अपना वाद्य अच्छा बजाते हो। वे तुम्हारा संदेश सुनेंगे किन्तु वे वह नहीं करेंगे जो तुम कहते हो। 33किन्तु जिन चीजों के बारे में तुम गाते हो, वे सचमुच घटित होंगी और तब लोग समझेंगे कि उनके बीच सचमुच एक नबी रहता था!"

इस्राएल भेड़ों की एक रेवड़ की तरह है

34 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, मेरे लिए इस्राएल के गड़ेरियों (प्रमुखों) के विरुद्ध बातें करो। उनसे मेरे लिये बातें करो। उनसे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है: 'इस्राएल के गड़ेरियों (प्रमुखों) तुम केवल अपना पेट भर रहे हो। यह तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा। तुम गड़ेरियों, रेवड़ों का पेट क्यों नहीं भरते? 3तुम मोटी भेड़ों को खाते हो और अपने वस्त्र बनाने के लिये उनकी ऊन का उपयोग करते हो। तुम मोटी भेड़ को मारते हो, किन्तु तुम रेवड़ का पेट नहीं भरते। 4तुमने दुर्बल को बलवान नहीं बनाया। तुमने रोगी भेड़ की परवाह नहीं की है। तुमने चोट खाई हुई भेड़ों को पट्टी नहीं बाँधी। कुछ भेड़ें भटक कर दूर चली गईं और तुम उन्हें खोजने और उन्हें वापस लेने नहीं गए। तुम उन खोई भेड़ों को खोजने नहीं गए। नहीं, तुम क्रूर और कठोर रहे, यही मार्ग था जिस पर तुमने भेड़ों को ले जाना चाहा!

5'"और अब, भेड़ें बिखर गई हैं क्योंकि कोई गड़ेरिया नहीं था। वे हर एक जंगली जानवर का भोजन बनीं। अत: वे बिखर गईं। 6मेरी रेवड़ सभी पर्वतों और ऊँची पहाड़ियों पर भटकी। मेरी रेवड़ धरती की सारी सतह पर बिखर गई। कोई भी उनकी खोज और देखभाल करने वाला नहीं था।'"

7अत: तुम गड़ेरियों, यहोवा का वचन सुनों। मेरा स्वामी यहोवा कहता है, 8"मैं अपने जीवन की शपथ खाकर तुम्हें यह विश्वास दिलाता हूँ। जंगली जानवरों ने मेरी भेड़ों को पकड़ा। हाँ, मेरी रेवड़ सभी जंगली जानवरों का भोजन बन गई। क्यों? क्योंकि उनका कोई ठीक गड़ेरिया नहीं था। मेरे गड़ेरियों ने मेरे रेवड़ की खोज नहीं की। उन गड़ेरियों ने भेड़ों को केवल मारा और स्वयं खाया। उन्होंने मेरी रेवड़ का पेट नहीं भरा।"

9अत: तुम गड़ेरियों, यहोवा के संदेश को सुनो! 10यहोवा कहता है, "मैं उन गड़ेरियों के विरुद्ध हूँ! मैं उनसे अपनी भेड़ें माँगूँगा! मैं उन पर आक्रमण करूँगा! वे भविष्य में मेरे गड़ेरिये नहीं रहेंगे! तब गड़ेरिये अपना पेट भी नहीं भर पाएंगे। मैं उनके मुख से अपनी रेवड़ को बचाऊँगा। तब मेरी भेड़ें उनका भोजन नहीं होंगी।"

11मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं स्वयं उनका गड़ेरिया बनूँगा। मैं अपनी भेड़ों की खोज करूँगा। मैं उनको ढूँढूंगा। 12यदि कोई गड़ेरिया अपनी भेड़ों के साथ उस समय है जब उसकी भेड़ें दूर भटकने लगी हों तो वह उनको खोजने जाएगा। उसी प्रकार मैं अपनी भेड़ों की खोज करूँगा। मैं अपनी भेड़ों को बचाऊँगा। मैं उन्हें उन स्थानों से लौटाऊँगा जहाँ वे उस बदली तथा अंधेरे में भटक गई थीं। 13मैं उन्हें उन राष्ट्रों से वापस लाऊँगा। मैं उन देशों से उन्हें इकट्ठा करूँगा। मैं उन्हें उनके अपने देश में लाऊँगा। मैं उन्हें इस्राएल के पर्वतों पर, जलस्रोतों के सहारे, उन सभी स्थानों में, जहाँ लोग रहते हैं, खिलाऊँगा। 14मैं उन्हें घास वाले खेतों में ले जाऊँगा। वे इस्राएल के पर्वतों के ऊँचे स्थानों पर जाएंगी। वहाँ वे अच्छी धरती पर सोएँगी और घास खाएंगी। वे इस्राएल के पर्वत पर भरी-पूरी घास वाली भूमि में चरेंगी। 15हाँ, मैं अपने रेवड़ को खिलाऊँगा और उन्हें विश्राम के स्थान पर ले जाऊँगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

16"मैं खोई भेड़ की खोज करुँगा। मैं उन भेड़ों को वापस लाऊँगा जो बिखर गई थीं। मैं उन भेड़ों की पट्टी करुँगा जिन्हें चोट लगी थी। मैं कमजोर भेड़ को मजबूत बनाऊँगा। किन्तु मैं उन मोटे और शक्तिशाली गड़ेरियों को नष्ट कर दूँगा। मैं उन्हें वह दण्ड दूँगा जिसके वे पात्र हैं।"

17मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "और तुम, मेरी रेवड़, मैं प्रत्येक भेड़ के साथ न्याय करुँगा। मैं मेढ़ों और बकरों के बीच न्याय करुँगा। 18तुम अच्छी भूमि पर उगी घास खा सकते हो। अत: तुम उस घास को क्यों कुचलते हो जिसे दूसरी भेड़ें खाना चाहती हैं। तुम पर्याप्त स्वच्छ जल पी सकते हो। अत: तुम उस जल को हिलाकर गन्दा क्यों करते हो, जिसे अन्य भेड़ें पीना चाहती हैं। 19मेरी रेवड़ उस घास को खाएंगी जिसे तुमने अपने पैरों से कुचला और वह पानी पीएंगी जिसे तुमने अपने पैरों से हिलाकर गन्दा कर दिया!"

20अत: मेरा स्वामी यहोवा उनसे कहता है: "मैं स्वयं मोटी और पतली भेड़ों के साथ न्याय करूँगा! 21तुम अपनी बगल से और अपने कन्धों से धक्का देकर और अपनी सींगों से सभी कमजोर भेड़ों को तब तक मार

गिराते हो, जब तक तुम उनको दूर चले जाने के लिये विवश नहीं करते। 22अत: मैं अपनी रेवड़ को बचाऊँगा। वे भविष्य में जंगली जानवरों से नहीं पकड़ी जाएंगी। मैं प्रत्येक भेड़ के साथ न्याय करुँगा। 23तब मैं उनके ऊपर एक गड़ेरिया अपने सेवक दाऊद को रखूँगा। वह उन्हें अपने आप खिलाएगा और उनका गड़ेरिया होगा। 24तब मैं यहोवा और स्वामी, उनका परमेश्वर होऊँगा और मेरा सेवक दाऊद उनके बीच रहने वाला शासक होगा। मै (यहोवा) ने यह कहा है।

25"मैं अपनी भेड़ों के साथ एक शान्ति–सन्धि करुँगा। मैं हानिकर जानवरों को देश से बाहर कर दूँगा। तब भेड़ें मरूभूमि में सुरक्षित रहेंगी और जंगल में सोएंगी। 26मैं भेड़ों को और अपनी पहाड़ी (यरूशलेम) के चारों ओर के स्थानों को आशीर्वाद दूँगा। मैं ठीक समय पर वर्षा करुँगा। वे आशीर्वाद सहित वर्षा करेंगे। 27खेतों में उगने वाले वृक्ष अपने फल देंगे। भूमि अपनी फसल देगी। अत: भेड़ें अपने प्रदेश में सुरक्षित रहेंगी। मैं उनके ऊपर रखे जूवों को तोड़ दूँगा। मैं उन्हें उन लोगों की शक्ति से बचाऊँगा जिन्होंने उन्हें दास बनाया। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। 28वे जानवरों की तरह भविष्य में अन्य राष्ट्रों द्वारा बन्दी नहीं बनाये जाएंगे। वे जानवर उन्हें भविष्य में नहीं खाएंगे। अपितु अब वे सुरक्षित रहेंगे। कोई उन्हें आतंकित नहीं करेगा। 29मैं उन्हें कुछ ऐसी भूमि दूँगा जो एक अच्छा उद्यान बनेगी। तब वे उस देश में भूख से पीड़ित नहीं होंगे। वे भविष्य में राष्ट्रों से अपमानित होने का कष्ट न पाएंगे। 30तब वे समझेंगे कि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ। तब वे समझेंगे कि मैं उनके साथ हूँ। इस्राएल का परिवार समझेगा कि वे मेरे लोग हैं।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था!

31"तुम मेरी भेड़ों, मेरी चरागाह की भेड़ों, तुम केवल मनुष्य हो और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

एदोम के विरुद्ध सन्देश

35 मुझे यहोवा का वचन मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, सेईर पर्वत की ओर ध्यान दो और मेरे लिये इसके विरुद्ध कुछ कहो। 3इससे कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: सेईर पर्वत, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ! मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हें खाली बरबाद क्षेत्र कर दूँगा। 4मैं तुम्हारे नगरों को नष्ट करुँगा, और तुम खाली हो जाओगे। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ।

5क्यों? क्योंकि तुम सदा मेरे लोगों के विरुद्ध रहे। तुमने इस्राएल के विरुद्ध अपनी तलवारों का उपयोग उनकी विपत्ति के समय में किया, उनके अन्तिम दण्ड के समय में।'"

6अत: मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं अपने जीवन की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हें मैं मृत्यु के मुँह में भेजूँगा। मृत्यु तुम्हारा पीछा करेगी। तुम्हें व्यक्तियों के मारने से घृणा नहीं है, अत: मृत्यु तुम्हारा पीछा करेगी। 7मैं सेईर पर्वत को खाली बरबाद कर दूँगा। मैं उस हर एक व्यक्ति को मार डालूँगा जो उस नगर से आएगा और मैं उस हर व्यक्ति को मार डालूँगा जो उस नगर में जाने का प्रयत्न करेगा। 8मैं उसके पर्वतों को शवों से ढक दूँगा। वे शव तुम्हारी सारी पहाड़ियों, तुम्हारी घाटी और तुम्हारे सारे विषम जंगलों में फैले होंगे। 9मैं तुझे सदा के लिये खाली कर दूँगा। तुम्हारे नगरों में कोई नहीं रहेगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

10तुमने कहा, "ये दोनों राष्ट्र और देश (इस्राएल और यहूदा) मेरे होंगे। हम उन्हें अपना बना लेंगे।"

किन्तु यहोवा वहाँ है! 11मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "तुम मेरे लोगों के प्रति ईर्ष्यालु थे। तुम उन पर क्रोधित थे और तुम मुझसे घृणा करते थे। अत: अपने जीवन की शपथ खाकर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हें वैसे ही दण्डित करुँगा जैसे तुमने उन्हें चोट पहुँचाई। मैं तुझे दण्ड दूँगा और अपने लोगों को समझने दूँगा कि मैं उनके साथ हूँ। 12तब तुम भी समझोगे कि मैंने तुम्हारे लिये सभी अपमानों को सुना है। तुमने इस्राएल पर्वत के विरुद्ध बहुत सी बुरी बातें की हैं। तुमने कहा, 'इस्राएल नष्ट कर दिया गया! हम लोग उसे भोजन की तरह चबा जाएंगे!" 13तुम गर्वीले थे तथा मेरे विरुद्ध तुमने बातें कीं। तुमने अनेक बार कहा और जो तुमने कहा, उसका हर एक शब्द मैंने सुना! हाँ, मैंने तुम्हें सुना।"

14मेरा स्वामी यहोवा यह कहता हैं, "उस समय सारी धरती प्रसन्न होगी जब मैं तुम्हें नष्ट करूँगा। 15तुम तब प्रसन्न थे जब इस्राएल देश नष्ट हुआ था। मैं तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करुँगा। सेईर पर्वत और एदोम का पूरा देश नष्ट कर दिया जाएगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

इस्राएल देश का फिर निर्माण किया जाएगा

36 "मनुष्य के पुत्र, मेरे लिए इस्राएल के पर्वतों से कहो। इस्राएल के पर्वतों को यहोवा का वचन सुनने को कहो! 2उनसे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, 'शत्रु ने हमें छला है। उन्होंने कहा: अहा! अब प्राचीन पर्वत हमारा होगा!'"

3"अत: मेरे लिये इस्राएल के पर्वतों से कहो। कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, शत्रु ने तुम्हें खाली किया। उन्होंने तुम्हें चारों ओर से कुचल डाला है। उन्होंने ऐसा किया अत: तुम अन्य राष्ट्रों के अधिकार में गए। तब तुम्हारे बारे में लोगों ने बातें और कानाफूसी की। 4अत: इस्राएल के पर्वतों, मेरे स्वामी यहोवा के वचन को सुनो। मेरा स्वामी यहोवा पर्वतों, पहाड़ियों, धाराओं, घाटियों, खाली खण्डहरों और छोड़े गए नगरों

से, जो चारों ओर के अन्य राष्ट्रों द्वारा लूटे और मजाक उड़ाए गए कहता है। 5मेरा स्वामी यहोवा कहता है: मैं शपथ खाता हूँ कि मैं अपनी तीव्र अनुभूतियों को अपने लिये बोलने दूँगा। मैं एदोम और अन्य राष्ट्रों को अपने क्रोध का अनुभव कराऊँगा। उन राष्ट्रों ने मेरा देश अपना बना लिया! वे उस देश को लेकर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने देश को अपना बना लिया!"

6"इसलिये इस्राएल देश के बारे में ये कहो। पर्वतों, पहाड़ियों, धाराओं और घाटियों से कहो। यह कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, 'मैं अपनी तीव्र अनुभूतियों और क्रोध को अपने लिये बोलने दूँगा। क्यों? क्योंकि इन राष्ट्रों से तुम्हें अपमान की पीड़ा मिली है।'" 7अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हारे चारों ओर के राष्ट्र अपमान का कष्ट भोगेंगे।"

8"किन्तु इस्राएल के पर्वतों, तुम मेरे इस्राएल के लोगों के लिये नये पेड़ उगाओगे और फल पैदा करोगे। मेरे लोग शीघ्र लौटेंगे। 9मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। लोग तुम्हारी भूमि जोतेंगे। लोग बीज बोएंगे। 10तुम्हारे ऊपर असंख्य लोग रहेंगे। इस्राएल का सारा परिवार और सभी लोग वहाँ रहेंगे। नगरों में, लोग रहने लगेंगे। नष्ट स्थान नये स्थानों की तरह बनेंगे। 11मैं तुम्हें बहुत से लोग और जानवर दूँगा। वे बढ़ेंगे और उनके बहुत बच्चे होंगे। मैं तुम्हारे ऊपर रहने वाले लोगों को वैसे ही तुम्हें प्राप्त कराऊँगा, जैसे तुमने पहले किया था। मैं तुम्हें तुम्हारे आरम्भ से भी अच्छा बनाऊँगा। तुम फिर कभी उनको, उनके सन्तानों से वंचित नहीं करोगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। 12हाँ, मैं अपने लोग, इस्राएल को तुम्हारी भूमि पर चलाऊँगा। वे तुम पर अधिकार करेंगे और तुम उनके होगे। तुम उन्हें बिना बच्चों के फिर कभी नहीं बनाओगे।"

13मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "हे इस्राएल देश लोग तुमसे बुरी बातें कहते हैं। वे कहते हैं कि तुमने अपने लोगों को नष्ट किया। वे कहते हैं कि तुम बच्चों को दूर ले गए। 14अब भविष्य में तुम लोगों को नष्ट नहीं करोगे। तुम भविष्य में बच्चों को दूर नहीं ले जाओगे।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं थीं। 15"मैं उन अन्य राष्ट्रों को तुम्हें, और अधिक अपमानित नहीं करने दूँगा। तुम उन लोगों से और अधिक चोट नहीं खाओगे। तुम उनको बच्चों से रहित फिर कभी नहीं करोगे।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

यहोवा अपने अच्छे नाम की रक्षा करेगा

16तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 17"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल का परिवार अपने देश में रहता था। किन्तु उन्होंने उस देश को उन कामों से गन्दा बना दिया जो उन्होंने किया। मेरे लिये वे ऐसी स्त्री के समान थे जो अपने मासिक धर्म से अशुद्ध हो गई हो। 18उन्होंने जब उस देश में लोगों की हत्या की तो उन्होंने धरती पर खून फैलाया। उन्होंने अपनी देवमूर्तियों से देश को गन्दा किया। अत: मैंने उन्हें दिखाया कि मैं कितना क्रोधित था। 19मैंने उन्हें राष्ट्रों में बिखेरा और सभी देशों में फैलाया। मैंने उन्हें वही दण्ड उस बुरे काम के लिये दिया जो उन्होंने किया। 20वे उन अन्य राष्ट्रों को गये और उन देशों में भी उन्होंने मेरे अच्छे नाम को बदनाम किया। कैसे? वहाँ राष्ट्रों ने उनके बारे में बातें कीं। उन्होंने कहा, ये यहोवा के लोग हैं किन्तु इन्होंने उसका देश छोड़ दिया तो जरुर यहोवा में कुछ खराबी होगी!

21"इस्राएल के लोगों ने मेरे पवित्र नाम को जहाँ कहीं वे गये, बदनाम किया। मैंने अपने नाम के लिये दु:ख अनुभव किया। 22अत: इस्राएल के परिवार से कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, 'इस्राएल के परिवार, तुम जहाँ गए वहाँ तुमने मेरे पवित्र नाम को बदनाम किया। इसे रोकने के लिये मैं कुछ करने जा रहा हूँ। मैं यह तुम्हारे लिये नहीं करूँगा। इस्राएल, मैं इसे अपने पवित्र नाम के लिये करूँगा। 23मैं उन राष्ट्रों को दिखाऊँगा कि मेरा महान नाम सच में पवित्र है। तब वे राष्ट्र जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।'" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

24परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हें उन राष्ट्रों से बाहर निकालूँगा, एक साथ इकट्ठा करूँगा और तुम्हें तुम्हारे अपने देश में लाऊँगा। 25तब मैं तुम्हारे ऊपर शुद्ध जल छिड़कूँगा और तुम्हें शुद्ध करूँगा। मैं तुम्हारी सारी गन्दगियों को धो डालूँगा और उन घृणित देवमूर्तियों से उत्पन्न गन्दगी को धो डालूँगा।"

26परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम में नयी आत्मा भी भरूँगा और तुम्हारे सोचने के ढंग को बदलूँगा। मैं तुम्हारे शरीर से कठोर हृदय को बाहर करुँगा और तुम्हें एक कोमल मानवी हृदय दूँगा। 27मैं तुम्हारे भीतर अपनी आत्मा प्रतिष्ठित करुँगा। मैं तुम्हें बदलूँगा जिससे तुम मेरे नियमों का पालन करोगे। तुम सावधानी से मेरे आदेशों का पालन करोगे। 28तब तुम उस देश में रहोगे जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था। तुम मेरे लोग रहोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा।"

29परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हें बचाऊँगा भी और तुम्हें अशुद्ध होने से रोकूँगा। मैं अन्न को उगने के लिये आदेश दूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध भूखमरी का समय नहीं लाऊँगा। 30मैं तुम्हारे वृक्षों से फलों की बड़ी फसलें और खेतों से अन्न की फसलें दूँगा। तब तुम अन्य देशों में भूखे रहने की लज्जा फिर कभी अनुभव नहीं करोगे। 31तुम उन बुरे कामों को याद करोगे जो तुमने किये। तुम याद करोगे कि वे काम अच्छे नहीं थे। तब तुम अपने पापों और जो भंयकर काम किये उनके लिये तुम स्वयं अपने से घृणा करोगे।"

32मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं चाहता हूँ कि तुम
यह याद रखो: मैं तुम्हारी भलाई के लिये ये काम नहीं
कर रहा हूँ! मैं उन्हें अपने अच्छे नाम के लिये कर
रहा हूँ। इस्राएल के परिवार, तुम्हें अपने रहने के ढंग
पर लज्जित और व्याकुल होना चाहिये!"
33मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "जिस दिन मैं
तुम्हारे पापों को धोऊँगा, मैं लोगों को वापस तुम्हारे
नगरों में लाऊँगा। वे नष्ट नगर फिर बनाए जाएंगे।
34खाली पड़ी भूमि फिर जोती जाएगी। यहाँ से गुजरने
वाले हर एक को यह बरबादियों के ढेर के रूप में नहीं
दिखेगा। 35वे कहेंगे, 'अतीत में यह देश नष्ट हो गए थे।
लेकिन अब ये अदन के उद्यान जैसे हैं। नगर नष्ट हो
गये थे। वे बरबाद और खाली थे। किन्तु अब वे सुरक्षित
हैं और उनमें लोग रहते हैं।'"
36परमेश्वर ने कहा, "तब तुम्हारे चारों ओर के राष्ट्र
समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ और मैंने उन नष्ट स्थानों को
फिर बसाया। मैंने इस प्रदेश में, जो खाली पड़ा था पेड़ों
को रोपा। मैं यहोवा हूँ। मैंने यह कहा और मैं इसे घटित
कराऊँगा! 37मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं इस्राएल
के परिवार से उनके लिये यह करने की याचना
कराऊँगा। मैं उनको असंख्य लोग बनाऊँगा। वे भेड़ों
की रेवड़ों की तरह होंगे। 38यरूशलेम में विशेष त्योहार
के अवसर के समय (बकरियों–भेंड़ों की रेवड़ों की
तरह, लोग होंगे।) नगर और बरबाद स्थान, लोगों के
झुण्ड से भर जाएंगे। तब वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

सूखी हड्डियों का दर्शन

37 यहोवा की शक्ति मुझ पर उतरी। यहोवा की
आत्मा मुझे नगर के बाहर ले गई और नीचे
एक घाटी के बीच में रखा। घाटी मरे लोगों की हड्डियों
से भरी थी। 2घाटी में असंख्य हड्डियाँ भूमि पर पड़ी
थी। यहोवा ने मुझे हड्डियों के चारों ओर घुमाया। मैंने
देखा कि हड्डियाँ बहुत सूखी हैं।
3तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "मनुष्य के
पुत्र, क्या यह हड्डियाँ जीवित हो सकती हैं?"
मैने उत्तर दिया, "मेरे स्वामी यहोवा, उस प्रश्न का
उत्तर केवल तू जानता है।"
4मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "उन हड्डियों से
मेरे लिये बातें करो। उन हड्डियों से कहो, 'सूखी हड्डियों,
यहोवा का वचन सुनों! 5मेरा स्वामी यहोवा तुम से यह
कहता है: मैं तुममें आत्मा को आने दूँगा और तुम
जीवित हो जाओगे! 6मैं तुम्हारे ऊपर नसें और माँस
पेशियाँ चढ़ाऊँगा और मैं तुम्हें चमड़ी से ढक दूँगा। तब
मैं तुम में प्राण का संचार करुँगा और तुम फिर जीवित
हो उठोगे। तब तुम समझोगे कि मैं स्वामी यहोवा हूँ।'"
7अत: मैंने यहोवा के लिये उन हड्डियों से वैसे ही
बातें कीं जैसा उसने कहा। मैं जब कुछ कह ही रहा था
तभी मैंने प्रचण्ड ध्वनि सुनी। हड्डियाँ खड़खड़ाने लगीं
और हड्डियाँ हड्डियों से एक साथ जुड़ीं! 8वहाँ मेरी
आँखों के सामने नसों, माँस पेशियों और त्वचा ने
हड्डियों को ढकना आरम्भ किया। किन्तु शरीर हिले
नहीं, उनमें प्राण नहीं था।
9तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "सांस से मेरे
लिये कहो। मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये सांस से बातें करो।
सांस से कहो कि स्वामी यहोवा यह कह रहा है: 'सांस,
हर दिशा से आओ और इन शवों में प्राण संचार करो।
उनमें प्राण संचार करो और वे फिर जीवित हो जाएंगे!'"
10इस प्रकार मैंने यहोवा के लिये सांस से बातें कीं
जैसा उसने कहा और शवों में सांस आई। वे जीवित हुए
और खड़े हो गये। वहाँ बहुत से पुरुष थे, वे एक बड़ी
विशाल सेना थे!
11तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "मनुष्य के
पुत्र, ये हड्डियाँ इस्राएल के पूरे परिवार की तरह हैं!
इस्राएल के लोग कहते हैं, हमारी हड्डियाँ सूख गई हैं ,
हमारी आशा समाप्त है। हम पूरी तरह नष्ट किये जा
चुके हैं। 12इसलिये उनसे मेरे लिये बातें करो। उनसे
कहो स्वामी यहोवा यह कहता है, 'मेरे लोगों, मैं तुम्हारी
कब्रें खोलूँगा और तुम्हें कब्रों के बाहर लाऊँगा! तब मैं
तुम्हें इस्राएल की भूमि पर लाऊँगा। 13मेरे लोगों, मैं
तुम्हारी कब्रें खोलूँगा और तुम्हारी कब्रों से तुम्हें बाहर
लाऊँगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ। 14मैं अपनी
आत्मा तुममें डालूँगा और तुम फिर से जीवित हो जाओगे।
तब तुमको मैं तुम्हारे देश में वापस लाऊँगा। तब तुम
जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। तुम जानोगे कि मैंने ये बातें
कहीं और उन्हें घटित कराया।'" यहोवा ने यह कहा
था।

यहूदा और इस्राएल का फिर एक होना

15मुझे यहोवा का वचन फिर मिला। उसने कहा,
16"मनुष्य के पुत्र, एक छड़ी लो और उस पर यह
सन्देश लिखो: 'यह छड़ी यहूदा और उसकेमित्र इस्राएल
के लोगों की है।' तब दूसरी छड़ी लो और इस पर
लिखो, 'एप्रैम की यह छड़ी, यूसुफ और उसके मित्र
इस्राएल के लोगों की है।' 17तब दोनों छड़ियों को एक
साथ जोड़ दो। तुम्हारे हाथ में वे एक छड़ी होंगी।
18"तुम्हारे लोग यह स्पष्ट करने को कहेंगे कि इसका
अर्थ क्या है। 19उनसे कहो कि स्वामी यहोवा कहता है,
'मैं यूसुफ की छड़ी लूँगा जो इस्राएल के लोगों, जो एप्रैम
और उसके मित्रों के हाथ में है। तब मैं उस छड़ी को
यहूदा की छड़ी के साथ रखूँगा और इन्हें एक छड़ी
बनाऊँगा। मेरे हाथ में वह एक छड़ी होगी!'
20"उनके आँखों के सामने उन छड़ियों को अपने
हाथों में पकड़ो। तुमने वे नाम उन छड़ियों पर लिखे थे।
21लोगों से कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है: 'मैं

इस्राएल के लोगों को उन राष्ट्रों से लाऊँगा, जहाँ वे गए हैं। मैं उन्हें चारों ओर से एकत्रित करूँगा और उनके अपने देश में लाऊँगा। 22मैं उन्हें इस्राएल के पर्वतों के प्रदेश में एक राष्ट्र बनाऊँगा। उन सभी का केवल एक राजा होगा। वे दो राष्ट्र नहीं बने रहेंगे। वे भविष्य में राज्यों में नहीं बाँटे जा सकते। 23वे अपनी देवमूर्तियों और भंयकर मूर्तियों या अपने अन्य किसी अपराध से अपने आपको गन्दा बनाते नहीं रहेंगे। किन्तु मैं उन्हें सभी पापों से बचाता रहूँगा, चाहे वे जहाँ कहीं भी हों। मैं उन्हें नहलाऊँगा और शुद्ध करूँगा। वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर रहूँगा।

24"'मेरा सेवक दाऊद उनके ऊपर राजा होगा। उन सभी का केवल एक गड़ेरिया होगा। वे मेरे नियमों के सहारे रहेंगे और मेरे विधियों का पालन करेंगे। वे वह काम करेंगे जो मैं कहूँगा। 25वे उस भूमि पर रहेंगे जो मैंने अपने सेवक याकूब को दी। तुम्हारे पूर्वज उस स्थान पर रहते थे और मेरे लोग वहाँ रहेंगे। वे, उनके बच्चे और उनके पौत्र-पौत्रियाँ वहाँ सर्वदा रहेंगी और मेरा सेवक दाऊद उनका प्रमुख सदा रहेगा। 26मैं उनके साथ एक शान्ति-सन्धि करुँगा। यह सन्धि सदा बनी रहेगी। मैं उनको उनका देश देना स्वीकार करता हूँ। मैं उन्हें बहुसंख्यक लोग बनाना स्वीकार करता हूँ। मैं अपना पवित्र स्थान वहाँ उनके साथ सदा के लिये रखना स्वीकार करता हूँ। 27मेरा पवित्र तम्बू वहाँ उनके बीच रहेगा। हाँ, मैं उनका परमेश्वर और वे मेरे लोग होंगे। 28तब अन्य राष्ट्र समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ और वे जानेंगे कि मैं इस्राएल को, उनके बीच सदा के लिये अपना पवित्र स्थान रखकर, अपने विशेष लोग बना रहा हूँ।'"

गोग के विरुद्ध सन्देश

38 यहोवा का सन्देश मुझे मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, मागोग प्रदेश में गोग पर ध्यान दो। वह मेशेक और तूबल राष्ट्रों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रमुख है। गोग के विरुद्ध मेरे लिये कुछ कहो। 3उससे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, गोग तुम मेशेक और तूबल राष्ट्रों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रमुख हो! किन्तु मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। 4मैं तुम्हें पकड़ूँगा और तुम्हारी पूरी सेना के साथ वापस लाऊँगा। मैं तुम्हारी सेना के सभी पुरुषों को वापस लाऊँगा। मैं सभी घोड़ों और घुड़सवारों को वापस लाऊँगा। मैं तुम्हारे मुँह में नकेल डालूँगा और तुम सभी को वापस लाऊँगा। सभी सैनिक अपनी सभी तलवारों और ढालों के साथ अपनी सैनिक पोशाक में होंगे। 5फारस, कूश और पूत के सैनिक उनके साथ होंगे। वे सभी अपनी ढालें तथा सिर के कवच धारण किये होंगे। 6वहाँ अपने सैनिकों के सभी समूहों के साथ गोमेर भी होगा। वहाँ दूर उत्तर से अपने सैनिकों के सभी समूहों के साथ तोगर्मा का राष्ट्र भी होगा। उस बन्दियों की पंक्ति में वहाँ बहु संख्यक लोग होंगे।

7"तैयार हो जाओ। हाँ, अपने को तैयार करो और अपने साथ मिलने वाली सेना को भी। तुम्हें निगरानी रखनी चाहिए और तैयार रहना चाहिए। 8बहुत लम्बे समय के बाद तुम काम पर बुलाये जाओगे। आगे आने वाले वर्षों में तुम उस प्रदेश में आओगे जो युद्ध के बाद पुन: निर्मित होगा। उस देश में लोग इस्राएल के पर्वत पर आने के लिये बहुत से राष्ट्रों से इकट्ठे किये जाएंगे। अतीत में इस्राएल का पर्वत बार-बार नष्ट किया गया था। किन्तु ये लोग उन दूसरे राष्ट्रों से वापस लौटे होंगे। वे सभी सुरक्षित रहेंगे। 9किन्तु तुम उन पर आक्रमण करने आओगे। तुम तूफान की तरह आओगे। तुम देश को ढकते हुए गरजते मेघ की तरह आओगे। तुम और बहुत से राष्ट्रों के तुम्हारे सैनिकों के समूह, इन लोगों पर आक्रमण करने आएंगे।"

10मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "उस समय तुम्हारे मस्तिष्क में एक विचार उठेगा। तुम एक बुरी योजना बनाना आरम्भ करोगे। 11तुम कहोगे, 'मैं उस देश पर आक्रमण करने जाऊँगा जिसके नगर बिना दीवार के हैं (इस्राएल)। वे लोग शान्तिपूर्वक रहते हैं। वे समझते हैं कि वे सुरक्षित हैं। उनकी रक्षा के लिये उनके नगरों के चारों ओर कोई दीवार नहीं है। उनके दरवाजों में ताले नहीं हैं, उनके दरवाजे भी नहीं हैं! 12मैं इन लोगों को हराऊँगा और उनकी सभी कीमती चीजें उनसे ले लूँगा। मैं उन स्थानों के विरुद्ध लड़ूँगा जो नष्ट हो चुके थे, किन्तु अब लोग उनमें रहने लगे हैं। मैं उन लोगों (इस्राएल) के विरुद्ध लड़ूँगा जो दूसरे राष्ट्रों से इकट्ठे हुए थे। अब वे लोग मवेशी और सम्पत्ति वाले हैं। वे संसार के चौराहे पर रहते हैं जिस स्थान में से शक्तिशाली देशों को अन्य शक्तिशाली सभी देशों तक जाने के लिये यात्रा करनी पड़ती है।"

13"शबा, ददान और तर्शीश के व्यापारी और सभी नगर जिनके साथ वे व्यापार करते हैं, तुमसे पूछेंगे, 'क्या तुम कीमती चीजों पर अधिकार करने आये हो? क्या तुम अपने सैनिकों के समूहों के साथ, उन अच्छी चीजों को हड़पने और चाँदी, सोना मवेशी तथा सम्पत्ति ले जाने आए थे? क्या तुम उन सभी कीमती चीजों को लने आये थे?'"

14परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये गोग से कहो। उससे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, "तुम हमारे लोगों पर तब आक्रमण करने आओगे जब वे शान्तिपूर्वक और सुरक्षित रह रहे हैं। 15तुम दूर उत्तर के अपने स्थान से आओगे और तुम बहुसंख्यक लोगों को साथ लाओगे। वे सभी घुड़सवार होंगे। तुम एक विशाल और शक्तिशाली सेना होगे। 16तुम मेरे लोग

इस्राएल के विरुद्ध लड़ने आओगे। तुम देश को गरजते मेघ की तरह ढकने वाले होगे। मैं बाद में, अपने देश के विरुद्ध लड़ने के लिये तुम्हें लाऊँगा। तब गोग, राष्ट्र जानेंगे कि मैं कितना शक्तिशाली हूँ। वे मेरा सम्मान करेंगे और समझेंगे कि मैं पवित्र हूँ। वे देखेंगे कि मैं तुम्हारे विरुद्ध क्या करुँगा!"

17यहोवा यह कहता है, "उस समय लोग याद करेंगे कि मैंने अतीत में तुम्हारे बारे में जो कहा। वे याद करेंगे कि मैने अपने सेवकों इस्राएल के नबियों का उपयोग किया। वे याद करेंगे कि इस्राएल के नबियों ने मेरे लिये अतीत में बातें कीं और कहा कि मैं तुमको उनके विरुद्ध लड़ने के लिये लाऊँगा।"

18मेरे स्वामी यहोवा ने कहा, "उस समय, गोग इस्राएल देश के विरुद्ध लड़ने आएगा। मैं अपना क्रोध प्रकट करूँगा। 19क्रोध और उत्तेजना में मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि इस्राएल में एक प्रबल भूकम्प आएगा। 20उस समय सभी सजीव प्राणी भय से काँप उठेंगे। समुद्र में मछलियाँ, आकाश में पक्षी, खेतों में जंगली जानवर और वे सभी छोटे प्राणी जो धरती पर रेंगते हैं, भय से काँप उठेंगे। पर्वत गिर पड़ेंगे और शिखर ध्वस्त होंगी। हर एक दीवार धरती पर आ गिरेगी!"

21मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "इस्राएल के पर्वतों पर, मैं गोग के विरुद्ध हर प्रकार का भय उत्पन्न करुँगा। उसके सैनिक इतने भयभीत होंगे कि वे एक दूसरे पर आक्रमण करेंगे और अपनी तलवार से एक दूसरे को मार डालेंगे। 22मैं गोग को रोग और मृत्यु का दण्ड दूँगा। मैं गोग और बहुत से राष्ट्रों के सैनिकों के ऊपर ओले, आग और गंधक की वर्षा करुँगा। 23तब मैं दिखाऊँगा कि मैं कितना महान हूँ, मैं प्रमाणित करुँगा कि मैं पवित्र हूँ। बहुत से राष्ट्र मुझे ये काम करते देखेंगे और वे जानेंगे कि मैं कौन हूँ। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

गोग और उसकी सेना की मृत्यु

39 "मनुष्य के पुत्र, गोग के विरुद्ध मेरे लियेकहो। उससे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, 'गोग, तुम मेशेक और तूबल देशों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रमुख हो! किन्तु मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। 2मैं तुम्हें पकड़ूँगा और वापस लाऊँगा। मैं तुम्हें सुदूर उत्तर से लाऊँगा। मैं तुम्हें इस्राएल के पर्वतों के विरुद्ध युद्ध करने के लिये लाऊँगा। 3किन्तु मैं तुम्हारा धनुष तुम्हारे बायें हाथ से झटक कर गिरा दूँगा। मैं तुम्हारे दायें हाथ से तुम्हारे बाण झटक कर गिरा दूँगा। 4तुम इस्राएल के पर्वतों पर मारे जाओगे। तुम, तुम्हारे सैनिक समूह और तुम्हारे साथ के अन्य सभी राष्ट्र युद्ध में मारे जाएंगे। मैं तुमको हर एक प्रकार के पक्षियों, जो माँसभक्षी हैं तथा सभी जंगली जानवरों को भोजन के रूप में दूँगा। 5तुम नगर में प्रवेश नहीं करोगे। तुम खुले मैदानों में मारे जाओगे। मैंने यह कह दिया है!'" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

6परमेश्वर ने कहा, "मैं मागोग और उन व्यक्तियों के, जो समुद्र-तट पर सुरक्षित रहते हैं, विरुद्ध आग भेजूँगा। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। 7मैं अपना पवित्र नाम अपने इस्राएल लोगों में विदित करुँगा। भविष्य में, मैं अपने पवित्र नाम को, लोगों द्वारा और अधिक बदनाम नहीं करने दूँगा। राष्ट्र जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। वे समझेंगे कि मैं इस्राएल में परम पवित्र हूँ। 8वह समय आ रहा है! यह घटित होगा!" यहोवा ने ये बातें कहीं! "यह वही दिन है जिसके बारे में मैं कह रहा हूँ।

9"उस समय, इस्राएल के नगरों में रहने वाले लोग उन खेतों में जाएंगे। वे शत्रु के अस्त्र-शस्त्रों को इकट्ठा करेंगे और उन्हें जला देंगे। वे सभी ढालों, धनुषों, और बाणों, गदाओं और भालों को जलाएंगे। वे उन अस्त्र-शस्त्रों का उपयोग सात वर्ष तक ईंधन के रूप में करेंगे। 10उन्हें मैदानों से लकड़ी इकट्ठी नहीं करनी पड़ेगी या जंगलों से ईंधन नहीं काटना पड़ेगा, क्योंकि वे अस्त्र-शस्त्रों का उपयोग ईंधन के रुप में करेंगे। वे कीमती चीजों को सैनिकों से छीनेंगे जिसे वे उनसे चुराना चाहते थे। वे सैनिकों से अच्छी चीजें लेंगे जिन्होंने उनसे अच्छी चीजें ली थीं।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।"

11परमेश्वर ने कहा, "उस समय में गोग को दफनाने के लिये इस्राएल में एक स्थान चुनूँगा। वह मृत सागर के पूर्व में यात्रियों की घाटी में दफनाया जाएगा। यह यात्रियों के मार्ग को रोकेगा। क्यों? क्योंकि गोग और उसकी सारी सेना उस स्थान में दफनायी जाएगी। लोग इसे 'गोग की सेना की घाटी' कहेंगे। 12इस्राएल का परिवार देश को शुद्ध करने के लिए सात महीने तक उन्हें दफनाएगा। 13देश के साधारण लोग शत्रु के सैनिकों को दफनाएंगे। इस्राएल के लोग उस दिन प्रसिद्ध होंगे जिस दिन मैं अपने लिए सम्मान पाऊँगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

14परमेश्वर ने कहा, "लोग मजदूरों को, उन मरे सैनिकों को दफनाने के लिये पूरे समय की नौकरी देंगे। इस प्रकार वे देश को पवित्र करेंगे। वे मज़दूर सात महीने तक कार्य करेंगे। वे शवों को ढूँढते हुए चारों ओर जाएंगे। 15वे मज़दूर चारों ओर ढूँढते फिरेंगे। यदि उनमें कोई एक हड्डी देखेगा तो वह उसके पास एक चिन्ह बना देगा। चिन्ह वहाँ तब तक रहेगा जब तक कब्र खोदने वाला आता नहीं और गोग की सेना की घाटी में उस हड्डी को दफनाता नहीं। 16वह मृतक लोगों का नगर, (कब्रिस्तान) हमोना कहलाएगा। इस प्रकार वे देश को शुद्ध करेंगे।"

17मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा, "मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये पक्षियों और जंगली जानवरों से कुछ कहो। उनसे कहो, 'यहाँ आओ! यहाँ आओ! एक स्थान पर इकट्ठे

हो। यह बलि जो मैं तुम्हारे लिये तैयार कर रहा हूँ उसके लिए आओ, उसे खाओ। इस्राएल के पर्वतों पर एक विशाल बलिदान होगा। आओ, माँस खाओ और खून पिओ। 18तुम शक्तिशाली सैनिकों के शरीर का माँस खाओगे। तुम संसार के प्रमुखों का खून पीओगे। वे बाशान के मेढ़ों, मेमनों, बकरों और मोटे बैलों के समान होंगे। 19तुम जितनी चाहो, उतनी चर्बी खा सकते हो और तुम खून तब तक पी सकते हो जब तक तुम्हारे पेट न भरे। तुम मेरी बलि से खाओगे और पीओगे जिसे मैंने तुम्हारे लिये मारा। 20मेरी मेज पर खाने को तुम बहुत–सा माँस पा सकते हो। वहाँ घोड़े और रथ सारथी, शक्तिशाली सैनिक और अन्य सभी लड़ने वाले व्यक्ति होंगे।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

21परमेश्वर ने कहा, "मैं अन्य राष्ट्रों को दिखाऊँगा कि मैंने क्या किया है। वे राष्ट्र मेरा सम्मान करना आरम्भ करेंगे! वे मेरी वह शक्ति देखेंगे जो मैंने शत्रु के विरुद्ध उपयोग की। 22तब, उस दिन के बाद, इस्राएल का परिवार जानेगा कि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ। 23राष्ट्र यह जान जाएंगे कि इस्राएल का परिवार क्यों दूसरे देशों में बन्दी बनाकर ले जाया गया था। वे जानेंगे कि मेरे लोग मेरे विरुद्ध हो उठे थे। इसलिए मैं उनसे दूर हट गया था। मैंने उनके शत्रुओं को उन्हें हराने दिया। अत: मेरे लोग युद्ध में मारे गए। 24उन्होंने पाप किया और अपने को गन्दा बनाया। अत: मैंने उन्हें उन कामों के लिये दण्ड दिया जो उन्होंने किये। अत: मैंने उनसे अपना मुँह छिपाया है और उनको सहायता देने से इन्कार किया। 25अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "अब मैं याकूब के परिवार को बन्धुवाई से निकालूँगा। मैंने पूरे इस्राएल के परिवार पर दया की है। मैं अपने पवित्र नाम के लिये विशेष भावना प्रकट करुँगा। 26लोग अपनी लज्जा और मेरे विरुद्ध विद्रोह के सारे समय को भूल जायेंगे। वे अपने देश में सुरक्षा के साथ रहेंगे। कोई भी उन्हें भयभीत नहीं करेगा। 27मैं अपने लोगों को अन्य देशों से वापस लाऊँगा। मैं उन्हें उनके शत्रुओं के देशों से इकट्ठा करुँगा। तब बहुत से राष्ट्र समझेंगे कि मैं कितना पवित्र हूँ। 28वे समझेंगे कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूँ। क्यों? क्योंकि मैंने उनसे उनका घर छुड़वाया और अन्य देशों में बन्दी के रूप में भिजवाया और तब मैंने उन्हें एक साथ इकट्ठा किया और उनके अपने देश में वापस लाया। 29मैं इस्राएल के परिवार में अपनी आत्मा उतारुँगा और उसके बाद, मैं फिर अपने लोगों से दूर नहीं हटूँगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

नया मन्दिर

40 हम लोगों को बन्दी के रूप में ले जाए जाने के पच्चीसवें वर्ष में, वर्ष के आरम्भ में (अकटूबर) महीने के दसवें दिन, यहोवा की शक्ति मुझ में आई। बाबुल वासियों द्वारा इस्राएल पर अधिकार करने के चौदहवें वर्ष का यह वही दिन था। दर्शन में यहोवा मुझे वहाँ ले गया।

2दर्शन में परमेश्वर मुझे इस्राएल देश ले गया। उसने मुझे एक बहुत ऊँचे पर्वत के समीप उतारा। पर्वत पर एक भवन था जो नगर के समान दिखता था। 3यहोवा मुझे वहाँ ले आया। वहाँ एक व्यक्ति था जो झलकाये गये काँसे की तरह चमकता हुआ दिखता था। वह व्यक्ति एक कपड़े नापने का फीता और नापने की एक छड़ अपने हाथ में लिये था। वह फाटक से लगा खड़ा था। 4उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, अपनी आँख और अपने कान का उपयोग करो। इन चीजों पर ध्यान दो और मेरी सुनों। जो मैं तुम्हें दिखाता हूँ उस पर ध्यान दो। क्यों? क्योंकि तुम यहाँ लाए गए हो, अत: मैं तुम्हें इन चीजों को दिखा सकता हूँ। तुम इस्राएल के परिवार से वह सब बताना जो तुम यहाँ देखो।"

5मैंने एक दीवार देखी जो मन्दिर के बाहर चारों ओर से घेरती थी। उस व्यक्ति के हाथ में चीजों को नापने की एक छड़ थी। यह एक बालिश्त और एक हाथ लम्बी थी। अत: उस व्यक्ति ने दीवार की मोटाई नापी। वह एक छड़ मोटी थी। उस व्यक्ति ने दीवार की ऊँचाई नापी। यह एक छड़ ऊँची थी।

6तब व्यक्ति पूर्वी द्वार को गया। वह व्यक्ति उसकी पैड़ियों पर चढ़ा और फाटक की देहली को नापा। यह एक छड़ चौड़ी थी। 7रक्षकों के कमरे एक छड़ लम्बे और एक छड़ चौड़े थे। कमरों के बीच के दीवारों की मोटाई पाँच हाथ थी। भीतर की ओर फाटक के प्रवेश कक्ष के बगल में फाटक की देहली एक छड़ चौड़ी थी। 8तब उस व्यक्ति ने मन्दिर से लगे फाटक के प्रवेश कक्ष को नापा। 9यह एक छड़ चौड़ा था। तब उस व्यक्ति ने फाटक के प्रवेश कक्ष को नापा। यह आठ हाथ था। उस व्यक्ति ने फाटक के द्वार–स्तम्भों को नापा। हर एक द्वार स्तम्भ दो हाथ चौड़ा था। प्रवेश कक्ष का दरवाजा भीतर को था। 10फाटक के हर ओर तीन छोटे कमरे थे। ये तीनों छोटे कमरे हर ओर से एक नाप के थे। दोनों ओर के द्वार स्तम्भ एक नाप के थे। 11उस व्यक्ति ने फाटक के दरवाजें की चौड़ाई नापी। यह दस हाथ चौड़ी और तेरह हाथ चौड़ी थी। 12हर एक कमरे के सामने एक नीची दीवार थी। यह दीवार एक हाथ ऊँची और एक हाथ मोटी थी। कमरे वर्गाकार थे और हर ओर से छ: हाथ लम्बे थे।

13उस व्यक्ति ने फाटक को एक कमरे की छत से दूसरे कमरे की छत तक नापा। यह पच्चीस हाथ था। एक द्वार दूसरे द्वार के ठीक विपरीत था। 14उस व्यक्ति ने प्रवेश कक्ष को भी नापा। यह बीस हाथ चौड़ा था। प्रवेश कक्ष के चारों ओर आँगन था। 15प्रवेश कक्ष का

फाटक पूरे बाहर की ओर से, फाटक के भीतर तक
नाप में पचास हाथ था। 16रक्षकों के कमरों में चारों
ओर छोटी खिड़कियाँ थीं। छोटे कमरों में द्वार-स्तम्भों
की ओर भीतर को खिड़कियाँ अधिक पतली हो गई
थीं। प्रवेश कक्ष में भी भीतर के चारों ओर खिड़कियाँ
थीं। हर एक द्वार स्तम्भ पर खजूर के वृक्ष खुदे थे।

बाहर का आँगन

17तब वह व्यक्ति मुझे बाहरी आँगन में लाया। मैंने
कमरे और पक्के रास्ते को देखा। वे आँगन के चारों
ओर थे। पक्के रास्ते पर सामने तीस कमरे थे। 18पक्का
रास्ता फाटक की बगल से गया था। पक्का रास्ता
उतना ही लम्बा था जितने फाटक थे। यह नीचे का
रास्ता था। 19तब उस व्यक्ति ने नीचे फाटक के सामने
भीतर की ओर से लेकर आँगन की दीवार के सामने
भीतर की ओर तक नापा। यह सौ हाथ पूर्व और उत्तर
में था।

20उस व्यक्ति ने बाहरी आँगन, जिसका सामना उत्तर
की ओर है, के फाटक की लम्बाई और चौड़ाई को
नापा। 21इसके हर एक ओर तीन कमरे हैं। इसके द्वार
स्तम्भों और प्रवेश कक्ष की नाप वही थी जो पहले
फाटक की थी। फाटक पचास हाथ लम्बा और पच्चीस
हाथ चौड़ा था। 22इसकी खिडकियाँ इसके प्रेवश कक्ष
और इसकी खजूर के वृक्षों की नक्काशी की नाप वही
थी जो पूर्व की ओर मुखवाले फाटक की थी। फाटक
तक सात पैड़ियाँ थीं। फाटक का प्रवेश कक्ष भीतर था।
23भीतरी आँगन में उत्तर के फाटक तक पहुँचने वाला
एक फाटक था। यह पूर्व के फाटक के समान था। उस
व्यक्ति ने एक फाटक से दूसरे तक नापा। यह एक
फाटक से दूसरे फाटक तक सौ हाथ था।

24तब वह व्यक्ति मुझे दक्षिण की ओर ले गया। मैंने
दक्षिण में एक द्वार देखा। उस व्यक्ति ने द्वार-स्तम्भों
और प्रवेश कक्ष को नापा। 25वे नाप में उतने ही थे
जितने अन्य फाटक। मुख्य द्वार पचास हाथ लम्बे और
पच्चीस हाथ चौड़े थे। 26सात पैड़ियाँ इस फाटक तक
पहुँचाती थीं। इसका प्रवेश कक्ष भीतर को था। हर एक
ओर एक-एक द्वार-स्तम्भ पर खजूर की नक्काशी
थी। 27भीतरी आँगन की दक्षिण की ओर एक फाटक
था। उस व्यक्ति ने दक्षिण की ओर एक फाटक से दूसरे
फाटक तक नापा। यह सौ हाथ चौड़ा था।

भीतरी आँगन

28तब वह व्यक्ति मुझे दक्षिण फाटक से होकर भीतरी
आँगन में ले गया। दक्षिण के फाटक की नाप उतनी ही
थी जितनी अन्य फाटकों की। 29दक्षिण फाटक के
कमरे, द्वार-स्तम्भ और प्रवेश कक्ष की नाप उतनी ही
थी जितनी अन्य फाटकों की थी। खिड़कियाँ, फाटक
और प्रवेश कक्ष के चारों ओर थीं। फाटक पचास हाथ
लम्बा और पच्चीस हाथ चौड़ा था। उसके चारों ओर
प्रवेश कक्ष थे। 30प्रवेश कक्ष पच्चीस हाथ लम्बा और
पाँच हाथ चौड़ा था। 31दक्षिण फाटक के प्रवेश कक्ष का
सामना बाहरी आँगन की ओर था। इसके द्वार-स्तम्भों
पर खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी। इसकी सीढ़ी की
आठ पैड़ियाँ थीं।

32वह व्यक्ति मुझे पूर्व की ओर के भीतरी आँगन में
लाया। उसने फाटक को नापा। उसकी नाप वही थी जो
अन्य फाटकों की। 33पूर्वी द्वार के कमरे, द्वार-स्तम्भ
और प्रवेश कक्ष के नाप वही थे जो अन्य फाटकों के।
फाटक और प्रवेश कक्ष के चारों ओर खिड़कियाँ थीं।
पूर्वी फाटक पचास हाथ लम्बा और पच्चीस हाथ चौड़ा
था। 34इसके प्रवेश कक्ष का सामना बाहरी आँगन की
ओर था। हर एक ओर के द्वार-स्तम्भों पर खजूर के
पेड़ों की नक्काशी थी। इसकी सीढ़ी में आठ पैड़ियाँ थीं।

35तब वह व्यक्ति मुझे उत्तरी द्वार पर लाया। उसने इसे
नापा। इसकी नाप वह थी जो अन्य फाटकों की अर्थात
36इसके कमरों, द्वार-स्तम्भों और प्रवेश कक्ष की।
फाटक के चारों ओर खिड़कियाँ थीं। यह पचास हाथ
लम्बा और पच्चीस हाथ चौड़ा था। 37द्वार-स्तम्भों का
सामना बाहरी आँगन की ओर था। हर एक ओर के
द्वार-स्तम्भों पर खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी और
इसकी सीढ़ी की आठ पैड़ियाँ थीं।

बलियाँ तैयार करने के कमरें

38एक कमरा था जिसका दरवाजा फाटक के प्रवेश
कक्ष के पास था। यह वहाँ था जहाँ याजक होमबलि के
लिये जानवरों को नहलाते हैं। 39फाटक के प्रवेश कक्ष
के दोनों ओर दो मेजें थीं। होमबलि पाप के लिये भेंट
और अपराध के लिये भेंट के जानवर उन्हीं मेजों पर
मारे जाते थे। 40प्रवेश कक्ष के बाहर, जहाँ उत्तरी फाटक
खुलता है, दो मेजें थीं और फाटक के प्रवेश कक्ष के
दूसरी ओर दो मेजें थीं 41फाटक के भीतर चार मेजें
थीं। चार मेजें फाटक के बाहर थीं। सब मिलाकर आठ
मेजें थीं। याजक इन मेजों पर बलि के लिए जानवरों को
मारते थे। 42होमबलि के लिये कटी शिला की चार मेजें
थीं। ये मेजें डेढ़ हाथ लम्बी, डेढ़ हाथ चौड़ी और एक
हाथ ऊँची थीं। याजक होमबलि और बलिदानों के लिये
जिन जानवरों को मारा करते थे, उनको मारने के
औजारों को इन मेजों पर रखते थे। 43एक हाथ की
चौड़ाई के कुन्दें पूरे मन्दिर में लगाए गए थे। भेंट के
लिये माँस मेजों पर रहता था।

याजकों के कमरे

44भीतरी आँगन के फाटक के बाहर दो कमरे थे।
एक उत्तरी फाटक के साथ था। इसका सामना दक्षिण

को था। दूसरा कमरा दक्षिण फाटक के साथ था। इसका सामना उत्तर को था। 45उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "यह कमरा, जिसका सामना दक्षिण को है, उन याजक के लिये है जो अपने काम पर हैं और मन्दिर में सेवा कर रहे हैं। 46किन्तु वह कमरा जिसका सामना उत्तर को है, उन याजकों के लिये है जो अपने काम पर हैं और वेदी पर सेवा कर रहे हैं। ये सभी याजक सादोक के वंशज हैं। सादोक के वंशज ही लेवीवंश के एकमात्र व्यक्ति हैं जो यहोवा की सेवा उनके पास बलि लाकर कर सकते हैं।" 47उस व्यक्ति ने आँगन को नापा। आँगन पूर्ण वर्गाकार था। यह सौ हाथ लम्बा और सौ हाथ चौड़ा था। वेदी मन्दिर के सामने थी।

मन्दिर का प्रवेश-कक्ष

48वह व्यक्ति मुझे मन्दिर के प्रवेश कक्ष में लाया और उनके हर एक द्वार-स्तम्भ को नापा। यह पाँच हाथ प्रत्येक ओर था। फाटक चौदह हाथ चौड़ा था। फाटक की बगल की दीवारें तीन हाथ हर ओर थीं। 49प्रवेश कक्ष बीस हाथ लम्बा और बारह हाथ चौड़ा था। प्रवेश-कक्ष तक दस सीढ़ियाँ पहुँचाती थीं। द्वार-स्तम्भ के सहारे दोनों ओर स्तम्भ थे।

मन्दिर का पवित्र स्थान

41 वह व्यक्ति मुझे मन्दिर के बीच के कमरे पवित्र स्थान में लाया। उसने इसके प्रत्येक द्वार-स्तम्भों को नापा। वे छः हाथ मोटे हर ओर थे। 2दरवाजा दस हाथ चौड़ा था। द्वार की बगलें पाँच हाथ हर ओर थीं। उस व्यक्ति ने बाहरी पवित्र स्थान को नापा। यह चालीस हाथ लम्बा और बीस हाथ चौड़ा था।

मन्दिर का परम पवित्र स्थान

3तब वह व्यक्ति अन्दर गया और हर एक द्वार-स्तम्भ को नापा। हर एक द्वार-स्तम्भ दो हाथ मोटा था। यह छः हाथ ऊँचा था। द्वार सात हाथ चौड़ा था। 4तब उस व्यक्ति ने कमरे की लम्बाई नापी। यह बीस हाथ लम्बा और बीस हाथ चौड़ा था। बीच के कमरे के प्रवेश के पहले था। उस व्यक्ति ने कहा, "यह परम पवित्र स्थान है।"

मन्दिर के चारों ओर के बाकी कमरें

5तब उस व्यक्ति ने मन्दिर की दीवार नापी। यह छः हाथ चौड़ी थी। बगल के कमरे चार हाथ चौड़े मन्दिर के चारों ओर थे। 6बगल के कमरे तीन विभिन्न मंजिलों पर थे। वे एक दूसरे के ऊपर थे। हर एक मंजिल पर तीस कमरे थे। बगल के कमरे चारों ओर की दीवार पर टिके हुए थे। अतः मन्दिर की दीवार स्वयं कमरों को टिकाये हुए नहीं थी। 7मन्दिर के चारों ओर बगल के कमरों की मंजिल नीचे की मंजिल से अधिक चौड़ी थी। मन्दिर के चारों ओर ऊँचा चबूतरा हर मंजिल पर मन्दिर की हर एक ओर फैला हुआ था। इसलिए सबसे ऊपर की मंजिल पर कमरे अधिक चौड़े थे। दूसरी मंजिल से होकर एक सीढ़ी सबसे नीचे के मंजिल से सबसे ऊँचे मंजिल तक गई थी।

8मैंने यह भी देखा कि मन्दिर के चारों ओर की नींव सर्वत्र पक्की थी। बगल के कमरों की नींव एक पूरे मापदण्ड (10.6 इंच) ऊँची थी। 9बगल के कमरों की बाहरी दीवार पाँच हाथ मोटी थी। मन्दिर के बगल के कमरों 10और याजक के कमरों के बीच खुला क्षेत्र बीस हाथ मन्दिर के चारों ओर था। 11बगल के कमरों के दरवाजें पक्की फर्श की उस नींव पर खुलते थे जो दीवार का हिस्सा नहीं थी। एक दरवाजें का मुख उत्तर की ओर था और दूसरे का दक्षिण की ओर। पक्की फर्श चारों ओर पाँच हाथ चौड़ी थी।

12पश्चिमी ओर मन्दिर के आँगन के सामने का भवन सत्तर हाथ चौड़ा था। भवन की दीवार चारों ओर पाँच हाथ मोटी थी। यह नब्बे हाथ लम्बी थी। 13तब उस व्यक्ति ने मन्दिर को नापा। मन्दिर सौ हाथ लम्बा था। भवन और इसकी दीवार के साथ आँगन भी सौ हाथ लम्बे थे। 14मन्दिर का पूर्वी मुख और आँगन सौ हाथ चौड़ा था।

15-16उस व्यक्ति ने उस भवन की लम्बाई को नापा जिसका सामना मन्दिर के पीछे के आँगन की ओर था तथा जिसकी दीवारें दोनों ओर थीं। यह सौ हाथ लम्बा था। बीच के कमरे के भीतरी कमरे (पवित्र स्थान) और आँगन के प्रवेश कक्ष पर चौखटें लगीं थीं। तीनों पर ही चारों ओर जालीदार खिड़कियाँ थीं। मन्दिर के चारों ओर देहली से लगे, फर्श से खिड़कियों तक लकड़ी की चौखटें जड़ी हुई थीं। खिड़कियाँ ढकी हुई थीं।

17द्वार के ऊपर की दीवार, भीतरी कमरे और बाहर तक, सारी लकड़ी की चौखटों से मढ़ी गई थीं। मन्दिर के भीतरी कमरे तथा बाहरी कमरे की सभी दीवारों पर 18करुब (स्वर्गदूतों) और खजूर के वृक्षों की नक्काशी की गई थी। करुब (स्वर्गदूतों) के बीच एक खजूर का वृक्ष था। हर एक करुब (स्वर्गदूतों) के दो मुख थे। 19एक मुख मनुष्य का था जो एक ओर खजूर के पेड़ को देख रहा था। दूसरा मुख सिंह का था जो दूसरी ओर खजूर के वृक्ष को देखता था। वे मन्दिर के चारों ओर उकेरे गये थे। 20बीच के कमरे पवित्र स्थान की सभी दीवारों पर करुब (स्वर्गदूत) तथा खजूर के वृक्ष उकेरे गए थे। 21बीच के कमरे (पवित्र स्थान) के द्वार-स्तम्भ वर्गाकार थे। सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने ऐसा कुछ था जो 22वेदी के समान लकड़ी का बना दिखता था। यह तीन हाथ ऊँचा और दो हाथ लम्बा था। इसके कोने, नींव और पक्ष लकड़ी के थे। उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "यह मेज है जो यहोवा के सामने है।"

23बीच का कमरा (पवित्र स्थान) और सर्वाधिक
पवित्र स्थान दो दरवाजों वाले थे। 24एक दरवाजा दो
छोटे दरवाजों से बना था। हर एक दरवाजा सचमुच दो
हिलते हुए दरवाजों सा था। 25बीच के कमरे (पवित्र
स्थान) के दरवाजों पर करुब (स्वर्गदूत) और खजूर के
वृक्ष उकेरे गए थे। वे वैसे ही थे जैसे दीवारों पर उकेरे
गए थे। बाहर की ओर प्रवेश कक्ष के बाहरी हिस्से पर
लकड़ी की नक्काशी थी 26और प्रवेश कक्ष के दोनों
ओर खिड़कियों के दीवारों पर और प्रवेश कक्ष के
ऊपरी छत में तथा मन्दिर के चारों ओर के कमरों
खजूर के वृक्ष अंकित थे।

याजकों के कमरे

42 तब वह व्यक्ति मुझे बाहरी आँगन में ले गया
जिसका सामना उत्तर को था। वह उन कमरों
में ले गया जो मन्दिर से आँगन के आर-पार और उत्तर
के भवनों के आर-पार थे। 2उत्तर की ओर का भवन
सौ हाथ लम्बा और पचास हाथ चौड़ा था। 3वहाँ छज्जों
के तीन मंजिल इन भवनों की दीवारों पर थे। वे एक
दूसरे के सामने थे। भीतरी आँगन और बाहरी आँगन
के पक्के रास्ते के बीच बीस हाथ खुला क्षेत्र था।
4कमरों के सामने एक विशाल कक्ष था। वह भीतर
पहुँचाता था। यह दस हाथ चौड़ा, सौ हाथ लम्बा था।
उनके दरवाजे उत्तर को थे। 5ऊपर के कमरे अधिक
पतले थे क्योंकि छज्जे मध्य और निचली मंजिल से
अधिक स्थान घेरे थे। 6कमरे तीन मंजिलों पर थे।
बाहरी आँगन की तरह के उनके स्तम्भ नहीं थे।
इसलिये ऊपर के कमरे मध्य और नीचे की मंजिल के
कमरों से अधिक पीछे थे। 7बाहर एक दीवार थी। यह
कमरों के समान्तर थी। 8यह बाहरी आँगन को ले जाती
थी। यह कमरों के आर-पार थी। यह पचास हाथ
लम्बी थी। 9इन कमरों के नीचे एक द्वार था जो बाहरी
आँगन से पूर्व को ले जाता था। 10बाहरी दीवार के
आरम्भ में, दक्षिण की ओर मन्दिर के आँगन के
सामने और मन्दिर के भवन की दीवार के बाहर,
कमरे थे। इन कमरों के सामने 11एक विशाल कक्ष
था। वे उत्तर के कमरों के समान थे। दक्षिण के द्वार
लम्बाई-चौड़ाई में उतने ही माप वाले थे जितने उत्तर
के। दक्षिण के द्वार नाप, रूपाकृति और प्रवेश कक्ष की
दृष्टि से उत्तर के द्वारों के समान थे। 12दक्षिण के कमरों
के नीचे एक द्वार था जो पूर्व की ओर जाता था। यह
विशाल-कक्ष में पहुँचाता था। दक्षिण के कमरों के
आर-पार एक विभाजक दीवार थी।

13उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "आँगन के आर-पार
वाले दक्षिण के कमरे और उत्तर के कमरे पवित्र
कमरे हैं। ये उन याजकों के कमरे हैं जो यहोवा को
बलि-भेंट चढ़ाते हैं। वे याजक इन कमरों में अति
पवित्र भेंट को खाएंगे। वे सर्वाधिक पवित्र भेंट को वहाँ
रखेंगे। क्यों? क्योंकि यह स्थान पवित्र है। सर्वाधिक
पवित्र भेंटे ये हैं: अन्न भेंट, पाप के लिये भेंट और
अपराध के लिये भेंट। 14याजक पवित्र-क्षेत्र में प्रवेश
करेंगे। किन्तु बाहरी आँगन में जाने के पहले वे अपने
सेवा वस्त्र पवित्र स्थान में रख देंगे। क्यों? क्योंकि ये
वस्त्र पवित्र हैं। यदि याजक चाहता है कि वह मन्दिर के
उस भाग में जाए जहाँ अन्य लोग हैं तो उसे उन कमरों
में जाना चाहिए और अन्य वस्त्र पहन लेना चाहिए।"

मन्दिर का बाहरी भाग

15वह व्यक्ति जब मन्दिर के भीतर की नाप लेना
समाप्त कर चुका, तब वह मुझे उस फाटक से बाहर
लाया जो पूर्व को था। उसने मन्दिर के बाहर चारों ओर
नापा। 16उस व्यक्ति ने मापदण्ड से, पूर्व के सिरे को
नापा। यह पाँच सौ हाथ लम्बा था। 17उसने उत्तर के
सिरे को नापा। यह पाँच सौ हाथ लम्बा था। 18उसने
दक्षिण के सिरे को नापा। यह पाँच सौ हाथ लम्बा था।
19वह पश्चिम की तरफ चारों ओर गया और इसे नापा।
यह पाँच सौ हाथ लम्बा था। 20उसने मन्दिर को चारों
ओर से नापा। दीवार मन्दिर के चारों ओर गई थी।
दीवार पाँच सौ हाथ लम्बी और पाँच सौ हाथ चौड़ी थी।
यह पवित्र क्षेत्र को अपवित्र क्षेत्र से अलग करती थी।

यहोवा अपने लोगों के बीच रहेगा

43 वह व्यक्ति मुझे फाटक तक ले गया, उस
फाटक तक जो पूर्व को खुलता था। 2वहाँ पूर्व
से इस्राएल के परमेश्वर की महिमा उतरी। परमेश्वर
का आवाज समुद्र के गर्जन के समान ऊँचा था। परमेश्वर
की महिमा से भूमि प्रकाश से चमक उठी थी। 3दर्शन
वैसा ही था जैसा दर्शन मैंने कबार नदी के किनारे देखा
था। मैने धरती पर अपना माथा टेकते हुए प्रणाम किया।
4यहोवा की महिमा, मन्दिर में उस फाटक से आई जो
पूर्व को खुलता है।

5तब आत्मा ने मुझे ऊपर उठाया और भीतरी आँगन
में ले गई। यहोवा की महिमा ने मन्दिर को भर दिया।
6मैंने मन्दिर के भीतर से किसी को बातें करते सुना।
व्यक्ति मेरी बगल में खड़ा था। 7मन्दिर में एक आवाज
ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, यही स्थान मेरे सिंहासन
और पदपीठ का है। मैं इस स्थान पर इस्राएल के लोगों
में सदा रहूँगा। इस्राएल का परिवार मेरे पवित्र नाम को
फिर बदनाम नहीं करेगा। राजा और उनके लोग मेरे
नाम को अपवित्र करके या इस स्थान पर अपने राजाओं
का शव दफनाकर लज्जित नहीं करेंगे। 8वे मेरे नाम
को, अपनी देहली को मेरी देहली के साथ बनाकर तथा
अपने द्वार-स्तम्भ को मेरे द्वार-स्तम्भ के साथ बनाकर
लज्जित नहीं करेंगे। अतीत में केवल एक दीवार उन्हें

मुझसे अलग करती थी। अत: उन्होंने हर समय जब पाप और उन भंयकर कामों को किया तब मेरे नाम को लज्जित किया। यही कारण था कि मैं क्रोधित हुआ और उन्हें नष्ट किया। 9अब उन्हें व्यभिचार को दूर करने दो और अपने राजाओं के शव को मुझसे बहुत दूर ले जाने दो। तब मैं उनके बीच सदा रहूँगा।

10"अब मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के परिवार से उपासना के बारे में कहो। तब वे अपने पापों पर लज्जित होंगे। वे मन्दिर की योजना के बारे में सीखेंगे। 11वे उन बुरे कामों के लिये लज्जित होंगे जो उन्होंने किये हैं। उन्हें मन्दिर की आकृति समझने दो। उन्हें यह सीखने दो कि वह कैसे बनेगा, उसका प्रवेश-द्वार, निकास-द्वार और इस पर की सारी रूपाकृतियाँ कहाँ होंगी। उन्हें इसके सभी नियमों और विधियों के बारे में सिखाओ और इन्हें लिखो जिससे वे सभी इन्हें देख सकें। तब वे मन्दिर के सभी नियमों और विधियों का पालन करेंगे। तब वे यह सब कुछ कर सकते हैं। 12मन्दिर का नियम यह है: पर्वत की चोटी पर सारा क्षेत्र सर्वाधिक पवित्र है। यह मन्दिर का नियम है।

वेदी

13"वेदी की माप, हाथों और इससे लम्बी माप का उपयोग करके, यह है। वेदी की नींव के चारों ओर एक गन्दा नाला था। यह एक हाथ गहरा और हर ओर एक हाथ चौड़ा था। इसके सिरे के चारों ओर एक बालिश्त नौ इंच ऊँची किनारी थी। वेदी कितनी ऊँची थी, वह यह थी। 14भूमि से निचली किनारी तक, नींव की नाप दो हाथ है। यह एक हाथ चौड़ी थी। छोटी किनारी से बड़ी किनारी तक इसकी नाप चार हाथ होगी। यह दो हाथ चौड़ी थी। 15वेदी पर आग का स्थान चार हाथ ऊँचा था। वेदी के चारों कोने सींगों के आकार के थे। 16वेदी पर आग का स्थान बारह हाथ लम्बा और बारह हाथ चौड़ा था। यहपूरी तरह वर्गाकार था। 17किनारी भी वर्गाकार थी, चौदह हाथ लम्बी और चौदह हाथ चौड़ी। इसके चारों ओर पट्टी आधा हाथ चौड़ी थी। (नींव के चारों ओर की गन्दी नाली दो हाथ चौड़ी थी।) वेदी तक जाने वाली पैड़ियाँ पूर्व दिशा में थीं।"

18तब उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, स्वामी यहोवा यह कहता है: 'वेदी के लिये ये नियम हैं। जिस दिन होमबलि दी जानी होती है और इस पर खून छिड़कना होता है, 19उस दिन तुम सादोक के परिवार के लोगों को एक नया बैल पाप बलि के रूप में दोगे। ये व्यक्ति लेवी परिवार समूह के हैं। वे याजक होते हैं। वे भेंट उन पुरुषों के पास लाएंगे और इस प्रकार मेरी सेवा करेंगे। मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।'" 20"तुम बैल का कुछ खून लोगे और वेदी के चारों सींगों पर, किनारे के चारों कोनों पर और पट्टी के चारों ओर डालोगे। इस प्रकार तुम वेदी को पवित्र करोगे। 21तुम बैल को पाप बलि के रूप में लोगे। बैल, पवित्र क्षेत्र के बाहर, मन्दिर के विशेष स्थान पर जलाया जाएगा।

22"दूसरे दिन तुम बकरा भेंट करोगे जिसमें कोई दोष नहीं होगा। यह पाप बलि होगी। याजक वेदी को उसी प्रकार शुद्ध करेगा जिस प्रकार उसने बैल से उसे शुद्ध किया। 23जब तुम वेदी को शुद्ध करना समाप्त कर चुको तब तुम्हें चाहिए कि तुम एक दोष रहित नया बैल और रेवड़ में से एक दोष रहित मेढ़ा बलि चढ़ाओ। 24तब याजक उन पर नमक छिड़केंगे। तब याजक बैल और मेढ़े को यहोवा को होमबलि के रूप में बलि चढ़ाएगे। 25तुम एक बकरा प्रतिदिन सात दिन तक, पाप बलि के लिये तैयार करोगे। तुम एक नया बैल और रेवड़ से एक मेढ़ा भी तैयार करोगे। बैल और मेढ़े में कोई दोष नहीं होना चाहिए। 26सात दिन तक याजक वेदी को पवित्र करते रहेंगे। तब याजक वेदी को समर्पित करेंगे। 27इसके साथ ही वेदी को तैयार करने और इसे परमेश्वर को समर्पित करने के, वे सात दिन पूरे हो जाएंगे। आठवें दिन और उसके आगे याजक तुम्हारी होमबलि और मेल बलि वेदी पर चढ़ा सकते हैं। तब मैं तुम्हें स्वीकार करुँगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

बाहरी द्वार

44 तब वह व्यक्ति मुझे मन्दिर के बाहरी फाटक, जिसका सामना पूर्व को है, वापस लाया। हम लोग द्वार के बाहर थे और बाहरी द्वार बन्द था। 2यहोवा ने मुझसे कहा, "यह फाटक बन्द रहेगा। यह खोला नहीं जाएगा। कोई भी इससे होकर प्रवेश नहीं करेगा। क्यों? क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इससे प्रवेश कर चुका है। अत: यह बन्द रहना चाहिए। 3लोगों का शासक इस स्थान पर तब बैठेगा जब वह मेल बलि को यहोवा के साथ खाएगा। वह फाटक के साथ के प्रवेश-कक्ष के द्वार से प्रवेश करेगा तथा उसी रास्ते से बाहर जाएगा।"

मन्दिर की पवित्रता

4तब वह व्यक्ति मुझे उत्तरी द्वार से मन्दिर के सामने लाया। मैंने दृष्टि डाली और यहोवा की महिमा को यहोवा के मन्दिर में भरता देखा। मैंने अपने माथे को धरती पर टेकते हुए प्रणाम किया। 5यहोवा ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, बहुत सावधानी से देखो! अपनी आँखों और कानों का उपयोग करो। इन चीजों को देखो। मैं तुम्हें मन्दिर के बारे में सभी नियम-विधि बताता हूँ। सावधानीपूर्वक मन्दिर के प्रवेश-द्वार और पवित्र स्थान से सभी निकासों को देखो। 6तब इस्राएल के उन लोगों को यह सन्देश दो जिन्होंने मेरी आज्ञा पालन करने से इन्कार कर दिया था। उनसे कहो, मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, 'इस्राएल के परिवार, मैंने

तुम्हारे द्वारा की गई भंयकर चीजों को आवश्यकता से अधिक सहन किया है! 7तुम विदेशियों को मेरे मन्दिर में लाये और उन लोगों का सचमुच खतना नहीं हुआ था। वे पूरी तरह से मेरे प्रति समर्पित नहीं थे। इस प्रकार तुमने मेरे मन्दिर को अपवित्र किया था। तुमने हमारी वाचा को तोड़ा, भंयकर काम किये और तब तुमने मुझे रोटी की भेंट, चर्बी और खून दिया। किन्तु इसने मेरे मन्दिर को गन्दा बनाया। 8तुमने मेरी पवित्र चीजों की देखभाल नहीं की। नहीं, तुमने विदेशियों को मेरे मन्दिर के लिये उत्तरदायी बनाया!'"

9मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "एक विदेशी को जिसका खतना न हुआ हो, मेरे मन्दिर में नहीं आना चाहिए, उन विदेशियों को भी नहीं, जो इस्राएल के लोगों के बीच स्थायी रूप से रहते हैं। उसका खतना अवश्य होना चाहिए और उसे मेरे प्रति पूरी तरह समर्पित होना चाहिए, इसके पूर्व कि वह मेरे मन्दिर में आए। 10अतीत में, लेवीवंशियों ने मुझे तब छोड़ दिया, जब इस्राएल मेरे विरुद्ध गया। इस्राएल ने मुझे अपनी देवमूर्तियों का अनुसरण करने के लिये छोड़ा। लेवीवंशी अपने पाप के लिये दण्डित होंगे। 11लेवीवंशी मेरे पवित्र स्थान में सेवा करने के लिये चुने गये थे। उन्होंने मन्दिर के फाटक की चौकीदारी की। उन्होंने मन्दिर में सेवा की। उन्होंने बलियों तथा होमबलियों के जानवरों को लोगों के लिये मारा। वे लोगों की सहायता करने और उनकी सेवा के लिये चुने गए थे। 12किन्तु उन लेवीवंशियों ने मेरे विरुद्ध पाप करने में लोगों की सहायता की! उन्होंने लोगों को अपनी देवमूर्तियों की पूजा करने में सहायता की। अत: मैं उनके विरुद्ध प्रतिज्ञा कर रहा हूँ, 'वे अपने पाप के लिये दण्डित होंगे।'" मेरे स्वामी यहोवा ने यह बात कही है।

13"अत: लेवीवंशी बलि को मेरे पास याजकों की तरह नहीं लाएंगे। वे मेरी किसी पवित्र चीज के पास या सर्वाधिक पवित्र वस्तु के पास नहीं जाएंगे। वे अपनी लज्जा को, जो बुरे काम उन्होंने किये, उसके कारण, ढोएंगे। 14किन्तु मैं उन्हें मन्दिर की देखभाल करने दूँगा। वे मन्दिर में काम करेंगे और वे सब काम करेंगे जो इसमें किये जाते हैं।

15"सभी याजक लेवी के परिवार समूह से हैं। किन्तु जब इस्राएल के लोग मेरे विरुद्ध मुझसे दूर गए तब केवल सादोक परिवार के याजकों ने मेरे पवित्र स्थान की देखभाल की। अत: केवल सादोक के वंशज ही मुझे भेंट लाएंगे। वे मेरे सामने खड़े होंगे और अपने बलि चढ़ाए गए जानवरों की चर्बी और खून मुझे भेंट करेंगे।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा! 16"वे मेरे पवित्र स्थान में प्रवेश करेंगे। वे मेरी मेज के पास मेरी सेवा करने आएंगे। वे उन चीजों की देखभाल करेंगे जिन्हें मैंने उन्हें दीं। 17जब वे भीतरी आँगन के फाटकों में प्रवेश करेगें तब वे बहुमूल्य सन के वस्त्र पहनेंगे। जब बे भीतरी आँगन के फाटक और मन्दिर में सेवा करेंगे, तब वे ऊनी वस्त्र पहनेंगे।18वे सन की पगड़ी अपने सिर पर धारण करेंगे, और वे सन की जांघिया पहनेंगे। वे ऐसा कुछ नहीं पहनेंगे जिससे पसीना आये। 19वे मेरी सेवा करते समय के वस्त्र को, बाहरी आँगन में लोगों के पास जाने के पहले, उतारेंगे। तब वे इन वस्त्रों को पवित्र कमरों में रखेंगे। तब वे दूसरे वस्त्र पहनेंगे। इस प्रकार वे लोगों को उन पवित्र वस्त्रों को छूने नहीं देंगे।

20"वे याजक अपने सिर के बाल न ही मुड़वायेंगे, न ही अपने बालों को बहुत बढ़ने देंगे। यह इस बात को प्रकट करेगा कि वे शोकग्रस्त हैं और याजकों को यहोवा की सेवा के विषय में प्रसन्न रहना चाहिये। याजक अपने सिर के बालों की केवल छंटाई कर सकते हैं। 21कोई भी याजक उस समय दाखमधु नहीं पी सकता जब वे भीतरी आँगन में जाता है। 22याजक को विधवा से या तलाक प्राप्त स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए। नहीं, वे इस्राएल के परिवार की कन्यायों से विवाह करेंगे, या वे उस स्त्री से विवाह कर सकते हैं जिसका पति याजक रहा हो।

23"याजक मेरे लोगों को, पवित्र चीजों और जो चीजें पवित्र नहीं हैं, के बीच अन्तर के विषय में भी शिक्षा देंगे। वे मेरे लोगों को, जो शुद्ध और जो शुद्ध नहीं है, की जानकारी करने में सहायता देंगे। 24याजक न्यायालय में न्यायाधीश होगा। वे लोगों के साथ न्याय करते समय मेरे नियम का अनुसरण करेंगे। वे मेरी विशेष दावतों के समय मेरे नियम–विधियों का पालन करेंगे। वे मेरे विशेष विश्राम के दिनों का सम्मान करेंगे और उन्हें पवित्र रखेंगे। 25वे व्यक्ति के शव के पास जाकर अपने को अपवित्र करने नहीं जाएंगे। किन्तु वे तब अपने को अपवित्र कर सकते हैं यदि मरने वाला व्यक्ति पिता, माता, पुत्र, पुत्री, भाई या अविवाहिता बहन हो। ये याजक को अपवित्र बनायेगा। 26शुद्ध किये जाने के बाद याजक को सात दिन तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। 27तब यह पवित्र स्थान को लौट सकता है। किन्तु जिस दिन वह भीतरी आँगन के पवित्र स्थान में सेवा करने जाये, उसे पापबलि अपने लिये चढ़ानी चाहिये।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

28"लेवीवंशियों की अपनी भूमि के विषय में: मैं उनकी सम्पत्ति हूँ। तुम लेवीवंशियों को कोई सम्पत्ति (भूमि) इस्राएल में नहीं दोगे। मैं इस्राएल में उनके हिस्से में हूँ। 29वे अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि खाने के लिये पाएंगे। जो कुछ इस्राएल के लोग यहोवा को देंगे, वह उनका होगा। 30हर प्रकार की तैयार फसल का प्रथम भाग याजकों के लिये होगा। तुम अपने गूंधे आटे का प्रथम भाग भी याजक को दोगे। यह तुम्हारे परिवार पर आशीर्वाद की वर्षा करेगा। 31याजक को उस पक्षी या जानवर

नहीं खाना चाहिये जिसकी स्वाभाविक मृत्यु हो या जो जंगली जानवर द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया हो।

पवित्र काम के उपयोग के लिये भूमि का बँटवारा

45 "तुम इस्राएल के परिवार के लिये भूमि का विभाजन गोट डालकर करोगे। उस समय तुम भूमि का एक भाग अलग करोगे। वह यहोवा के लिये पवित्र हिस्सा होगा। भूमि पच्चीस हजार हाथ लम्बी और बीस हजार हाथ चौड़ी होगी। यह पूरी भूमि पवित्र होगी। 2एक वर्गाकार पाँच सौ निनानबे हाथ क्षेत्र मन्दिर के लिये होगा। मन्दिर के चारों ओर एक खुला क्षेत्र पचास हाथ चौड़ा होगा। 3अति पवित्र स्थान में तुम पच्चीस हजार हाथ लम्बा और दस हजार हाथ चौड़ा नापोगे। मन्दिर इस क्षेत्र में होगा। मन्दिर का क्षेत्र सर्वाधिक पवित्र स्थान होगा।

4"यह भूमि का पवित्र भाग मन्दिर के सेवक याजकों के लिये होगा जहाँ वे परमेश्वर के समीप सेवा करने आते हैं। यह याजकों के घरों और मन्दिर के लिये होगा। 5दूसरा क्षेत्र पच्चीस हजार हाथ लम्बा और दस हजार हाथ चौड़ा उन लेवीवंशियों के लिये होगा जो मन्दिर में सेवा करते हैं। यह भूमि भी लेवीवंशियों की, उनके रहने के नगरों के लिये, होगी।

6"तुम नगर को पाँच हजार हाथ चौड़ा और पच्चीस हजार हाथ लम्बा क्षेत्र दोगे। यह पवित्र क्षेत्र के सहारे होगा। यह इस्राएल के पूरे परिवार के लिये होगा। 7शासक पवित्र स्थान और नगर की अपनी भूमि के दोनों ओर की भूमि अपने पास रखेगा। यह पवित्र क्षेत्र और नगर के क्षेत्र के बीच में होगा। यह उसी चौड़ाई का होगा जो चौड़ाई परिवार समूह की भूमि की है। यह लगातार पश्चिमी सीमा से पूर्वी सीमा तक जाएगा। 8यह भूमि इस्राएल में शासक की सम्पत्ति होगी। इस प्रकार शासक को मेरे लोगों के जीवन को भविष्य में कष्टकर बनाने की आवश्यकता नहीं होगी। किन्तु वे भूमि को इस्राएलियों के लिये उनके परिवार समूहों को देंगे।"

9मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा, "इस्राएल के शासकों, बहुत हो चुका! क्रूर होना और लोगों से चीजें चुराना, छोड़ो! न्यायी बनो और अच्छे काम करो। हमारे लोगों को अपने घरों से बाहर जाने के लिये बलपूर्वक विवश न करो!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

10"लोगों को ठगना बन्द करो। सही बाटों और मापों का उपयोग करो। 11एपा (सूखी चीजों का बाट) और बथ (द्रव का मापक) एक ही समान होने चाहिएं। एक बथ और एपा दोनों 1/10 होमर के बराबर होने चाहिए। वे मापक होमर पर आधारित होंगे। 12एक शेकेल बीस गेरा के बराबर होना चाहिए। एक मिना साठ शेकेल के बराबर होना चाहिए। यह बीस शेकेल जमा पच्चीस शेकेल जमा पन्द्रह शेकेल के बराबर होना चाहिए।

13"यह विशेष भेंट है जिसे तुम्हें देना चाहिए:

1/6 एपा गेहूँ के हर एक होमर छ: बुशल गेहूँ के लिये।

1/6 एपा जौ के हर एक होमर छ: बुशल जौ के लिये।

14 1/10 बथ जैतून का तेल, हर एक कोर जैतून के तेल के लिये। याद रखें:-

दस बथ का एक होमर

दस बथ का एक कोर

15एक भेड़, दो सौ भेड़ों के लिये-इस्राएल में सिंचाई के लिए बने हर कुँए से।

"ये विशेष भेंटे अन्नबलि, होमबलि और मेलबलि के लिये हैं। ये भेंटें लोगों को पवित्र बनाने के लिये हैं।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

16"देश का हर एक व्यक्ति इस्राएल के शासक के लिये यह भेंट देगा। 17किन्तु शासक को विशेष पवित्र दिनों के लिये आवश्यक चीजें देनी चाहिए। शासक को होमबलि, अन्नबलि और पेय भेंट की व्यवस्था दावत के दिन, नवचन्द्र, सब्त और इस्राएल के परिवार के सभी विशेष दावतों के लिये करनी चाहिए। शासकों को सभी पापबलि, अन्नबलि, होमबलि, मेलबलि जो इस्राएल के परिवार को पवित्र करने के लिये उपयोग की जाती हैं, देना चाहिए।"

18मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें बताई, "पहले महीने में, महीने के प्रथम दिन तुम एक दोष रहित नया बैल लोगे। तुम्हें उस बैल का उपयोग मन्दिर को पवित्र करने के लिये करना चाहिए। 19याजक कुछ खून पाप के लिये भेंट से लेगा और इसे मन्दिर के द्वार-स्तम्भों और वेदी के किनारी के चारों कोनों और भीतरी आँगन के फाटक के स्तम्भों पर डालेगा। 20तुम यही काम महीने के सातवें दिन उस व्यक्ति के लिये करोगे जिसने गलती से पाप कर दिया हो, या अनजाने में किया हो। इस प्रकार तुम मन्दिर को शुद्ध करोगे।"

फसह पर्व की दावत के समय भेंट

21"पहले महीने के चौदहवें दिन तुम्हें फसह पर्व मनाना चाहिये। अखमीरी रोटी का यह उत्सव इस समय आरम्भ होता है। उत्सव सात दिन तक चलता है। 22उस समय शासक एक बैल अपने लिए तथा इस्राएल के लोगों के लिए भेंट करेगा। बैल पापबलि के लिये होगा। 23दावत के सात दिन तक शासक दोष रहित सात बैल और सात मेढ़े भेंट करेगा। वे यहोवा को होमबलि होंगे। शासक उत्सव के सात दिन हर रोज एक बैल भेंट करेगा और वह पाप बलि के लिये हर एक दिन एक बकरा भेंट करेगा। 24शासक एक एपा जौ हर एक बैल के साथ अन्नबलि के रूप में, और एक एपा जौ हर एक मेढ़े के साथ भेंट करेगा। शासक को एक गैलन

तेल हर एफा अन्न के लिये देना चाहिए। 25शासक को
यही काम उत्सव (शरण) के सात दिन तक करना
चाहिये। यह उत्सव सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन आरम्भ
होता है। ये भेंटे पापबलि, होमबलि, अन्नबलियाँ और
तेल–भेंटे, होंगी।"

शासक और त्यौहार

46 मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "भीतरी
आँगन का पूर्वी फाटक काम के छ: दिनों में
बन्द रहेगा। किन्तु यही सब्त के दिन और नवचन्द्र के
दिन खुलेगा। 2शासक फाटक के प्रवेश कक्ष से अन्दर
आएगा और उस फाटक के स्तम्भ के सहारे खड़ा
होगा। तब याजक शासक की होमबलि और मेलबलि
चढ़ाएगा। शासक फाटक की देहली पर उपासना करेगा।
तब वह बाहर जाएगा। किन्तु फाटक संध्या होने तक
बन्द नहीं होगा। 3देश के लोग भी यहोवा के सम्मुख
जहाँ फाटक सब्त के दिन और नवचन्द्र के दिन खुलता
है, वहीं उपासना करेंगे।

4"शासक सब्त के दिन होमबलि चढ़ाएगा। उसे दोष
रहित छ: मेमने और दोष रहित एक मेढ़ा देना चाहिए।
5उसे एक एपा अन्नबलि मेढ़े के साथ देनी चाहिए।
शासक उतनी अन्नबलि मेमनों के साथ देगा, जितनी
वह दे सकता है। उसे एक हिन जैतून का तेल हर एक
एपा अन्न के साथ देना चाहिए।

6"नवचन्द्र के दिन उसे एक बैल भेंट करना चाहिए,
जिसमें कोई दोष न हो। वह छ: मेमने और एक मेढ़ा,
जिसमें कोई दोष न हो, भी भेंट करेगा। 7शासक को,
बैल के साथ एक एपा अन्नबलि और एक एपा अन्नबलि
मेढ़े के साथ देनी चाहिए। शासक को मेमनों के साथ
तथा हर एक एपा अन्न के लिये एक हिन तेल के साथ,
जितना हो सके, देना चाहिए।

8"शासक को पूर्वी फाटक के प्रवेश कक्ष से होकर
मन्दिर के क्षेत्र में आना जाना चाहिए।

9"जब देश के निवासी यहोवा से मिलने विशेष त्यौहार
पर आएंगे तो जो व्यक्ति उत्तर फाटक से उपासना करने
को प्रवेश करेगा, वह दक्षिण फाटक से जाएगा। जो
व्यक्ति दक्षिण फाटक से प्रवेश करेगा, वह उत्तर फाटक
से जायेगा। कोई भी उसी मार्ग से नहीं लौटेगा जिससे
उसने प्रवेश किया। हर एक व्यक्ति को सीधे आगे
बढ़ना चाहिए। 10जब लोग अन्दर जाएंगे तो शासक
अन्दर जाएगा। जब वे बाहर आएंगे तब शासक बाहर
जाएगा। 11"दावतों और विशेष बैठकों के अवसर पर
एक एपा अन्नबलि हर नये बैल के साथ चढ़ाई जानी
चाहिए। एक एपा अन्नबलि हर मेढ़े के साथ चढ़ाई
जानी चाहिए और हर एक मेमने के साथ उसे जितना
अधिक वह दे सके देना चाहिए। उसे एक हिन तेल हर
अन्न के एक एपा के लिये देना चाहिए।

12"जब शासक यहोवा को स्वेच्छा भेंट देता है, यह
होमबलि, मेलबलि या स्वेच्छा भेंट हो सकती है, चढ़ायेगा
तो उसके लिये पूर्व का फाटक खुलेगा। तब वह अपनी
होमबलि और अपनी मेलबलि को सब्त के दिन की
तरह चढ़ाएगा। जब वह जाएगा उसके बाद फाटक बन्द
होगा।

नित्य भेंट

13"तुम दोष रहित एक वर्ष का एक मेमना दोगे। यह
प्रतिदिन यहोवा को होम बलि के लिये होगा। प्रत्येक
प्रात: तुम इसे दोगे। 14तुम प्रत्येक प्रात: मेमने के साथ
अन्नबलि भी चढ़ाओगे। तुम 1/6 एपा आटा और 1/3हिन
तेल अच्छे आटे को चिकना करने के लिये, दोगे। यह
यहोवा को नित्य अन्नबलि होगी। 15इस प्रकार वे सदैव
मेमना, अन्नबलि और तेल, होम बलि के लिये हर प्रात:
देते रहेंगे।"

अपनी सन्तान को शासक द्वारा भूमि देने के नियम

16मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "यदि शासक
अपनी भूमि के किसी हिस्से को अपने पुत्रों को पुरस्कार
के रूप में देगा तो वह पुत्रों की होगी। यह उनकी
सम्पत्ति है। 17किन्तु यदि कोई शासक अपनी भूमि के
किसी भाग को अपने दास को पुरस्कार के रूप में देता
है तो वह पुरस्कार उसके स्वतन्त्र होने की तिथि तक
ही उसका रहेगा। तब पुरस्कार शासक को वापस हो
जाएगा। केवल राजा के पुत्र ही उसकी भूमि के पुरस्कार
को अपने पास रख सकते हैं 18और शासक लोगों की
भूमि का कोई भी हिस्सा नहीं लेगा और न ही उन्हें
अपनी भूमि छोड़ने को विवश करेगा। उसे अपनी भूमि
का कुछ भाग अपने पुत्रों को देना चाहिए। इस तरह से
हमारे लोग अपनी भूमि से वंचित होने के लिये विवश
नहीं किये जाएंगे।"

विशेष रसोईघर

19वह व्यक्ति मुझे द्वार से फाटक की बगल में ले
गया। वह मुझे याजकों के उत्तर में पवित्र कमरों की
ओर ले गया। मैंने वहाँ बहुत दूर पश्चिम में एक स्थान
देखा। 20उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "यही वह स्थान है
जहाँ याजक दोष बलि और पाप बलि को पकायेंगे। यहीं
पर याजक अन्नबलि को पकायेंगे। क्यों? जिससे उन्हें
उन भेंटों को बाहरी आँगन में ले जाने की आवश्यकता
न रहे। इस प्रकार वे उन पवित्र चीजों को बाहर नहीं
लाएंगे जहाँ साधारण लोग होंगे।"

21तब वह व्यक्ति मुझे बाहरी आँगन में लाया। वह
मुझे आँगन के चारों कोनों में ले गया। आँगन के हर
एक कोने में एक छोटा आँगन था। 22आँगन के कोनों
में छोटे आँगन थे। हर एक छोटा आँगन चालीस हाथ

लम्बा और तीस हाथ चौड़ा था। चारों कोनों की नाप समान थी। 23भीतर इन छोटे आँगनों के चारों ओर ईंट की एक दीवार थी। हर एक दीवार में भोजन पकाने के स्थान बने थे। 24उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "ये रसोईयाँ हैं जहाँ वे लोग जो मन्दिर की सेवा करते हैं, लोगों के लिये बलि पकायेंगे।"

मन्दिर से बहता जल

47 वह व्यक्ति मन्दिर के द्वार पर मुझे वापस ले गया। मैंने मन्दिर की पूर्वी देहली के नीचे से पानी आते देखा। (मन्दिर का सामना मन्दिर की पूर्वी ओर है।) पानी मन्दिर के दक्षिणी छोर के नीचे से वेदी के दक्षिण में बहता था। 2वह व्यक्ति मुझे उत्तर फाटक से बाहर लाया और बाहरी फाटक के पूर्व की तरफ चारों ओर ले गया। फाटक के दक्षिण की ओर पानी बह रहा था।

3वह व्यक्ति पूर्व की ओर हाथ में नापने का फीता लेकर बढ़ा। उसने एक हजार हाथ नापा। तब उसने मुझे उस स्थान से पानी से होकर चलने को कहा। वहाँ पानी केवल मेरे टखने तक गहरा था। उस व्यक्ति ने अन्य एक हजार हाथ नापा। तब उसने उस स्थान पर पानी से होकर चलने को कहा। वहाँ पानी मेरे घुटनों तक आया। 4तब उसने अन्य एक हजार हाथ नापा और उस स्थान पर पानी से होकर चलने को कहा। वहाँ पानी कमर तक गहरा था। 5उस व्यक्ति ने अन्य एक हजार हाथ नापा। किन्तु वहाँ पानी इतना गहरा था कि पार न किया जा सके। यह एक नदी बन गया था। पानी तैरने के लिये पर्याप्त गहरा था। यह नदी इतनी गहरी थी कि पार नहीं कर सकते थे। 6तब उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुमने जिन चीजों को देखा, उन पर गहराई से ध्यान दिया?"

तब वह व्यक्ति नदी के किनारे के साथ मुझे वापस ले गया। 7जैसे मैं नदी के किनारे से वापस चला, मैंने पानी के दोनों ओर बहुत अधिक पेड़ देखे। 8उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "यह पानी पूर्व को अरबा घाटी की तरफ नीचे बहता है। पानी मृत सागर में पहुँचता है। उस सागर में पानी स्वच्छ और ताजा हो जाता है। 9इस पानी में बहुत मछलियाँ हैं और जहाँ यह नदी जाती है वहाँ बहुत प्रकार के जानवर रहते हैं। 10तुम मछुआरों को लगातार एनगदी से ऐनेग्लैम तक खड़े देख सकते हो। तुम उनको अपना मछली का जाल फेंकते और कई प्रकार की मछलियाँ पकड़ते देख सकते हो। मृत सागर में उतनी ही प्रकार की मछलियाँ हैं जितनी प्रकार की भूमध्य सागर में। 11किन्तु दलदल और गड्ढों के प्रदेश के छोटे क्षेत्र अनुकूल नहीं बनाये जा सकते। वे नमक के लिये छोड़े जाएंगे। 12हर प्रकार के फलदार वृक्ष नदी के दोनों ओर उगते हैं। इनके पत्ते कभी सूखते और मरते नहीं। इन वृक्षों पर फल लगना कभी रूकता नहीं। वृक्ष हर महीने फल पैदा करते हैं। क्यों? क्योंकि पेड़ों के लिये पानी मन्दिर से आता है। पेड़ों का फल भोजन बनेगा, और उनकी पत्तियाँ औषधियाँ होंगी।"

परिवार समूहों के लिए भूमि का बँटवारा

13मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "ये सीमायें इस्राएल के बारह परिवार समूहों में भूमि के बाँटने के लिये हैं। यूसुफ को दो भाग मिलेंगे। 14तुम भूमि को बराबर बाँटोगे। मैंने इस भूमि को तुम्हारे पूर्वजों को देने का वचन दिया था। अत: मैं यह भूमि तुम्हें दे रहा हूँ।

15"यहाँ भूमि की ये सीमायें हैं। उत्तर की ओर यह सीमा भूमध्य सागर से हेतलोन होकर जाती है जहाँ सड़क हमात और सदाद तक 16बेरोता, सिब्रैम (जो दमिश्क और हमात की सीमा के बीच है) और हसर्हत्तीकोन जो हौरान की सीमा पर है, की ओर मुड़ती है। 17अत: सीमा समुद्र से हसरेनोन तक जायेगी जो दमिश्क और हमात की उत्तरी सीमा पर है। यह उत्तर की ओर होगी।

18"पूर्व की ओर, सीमा हसरेनोन से हौरान और दमिश्क के बीच जाएगी और यरदन नदी के सहारे गिलाद और इस्राएल की भूमि के बीच पूर्वी समुद्र तक लगातार, तामार तक जायेगी। यह पूर्वी सीमा होगी।

19"दक्षिण ओर, सीमा तामार से लगातार मरीबोत कादेश के नखलिस्तान तक जाएगी। तब यह मिस्र के नाले के सहारे भूमध्य सागर तक जाएगी। यह दक्षिणी सीमा होगी।

20"पश्चिमी ओर, भूमध्य सागर लगातार हमात के सामने के क्षेत्र तक सीमा बनेगा। यह तुम्हारी पश्चिमी सीमा होगी।

21"इस प्रकार तुम इस भूमि को इस्राएल के परिवार समूहों में बाँटोगे। 22तुम इसे अपनी सम्पत्ति और अपने बीच रहने वाले विदेशियों की सम्पत्ति के रूप में जिनके बच्चे तुम्हारे बीच रहते हैं, बाँटोगे। ये विदेशी निवासी होंगे, ये स्वाभाविक जन्म से इस्राएली होंगे। तुम कुछ भूमि इस्राएल के परिवार समूहों में से उनको बाँटोगे। 23वह परिवार समूह जिसके बीच वह निवासी रहता है, उसे कुछ भूमि देगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा है!

इस्राएल के परिवार समूह के लिये भूमि

48 1-7उत्तरी सीमा भूमध्य सागर से पूर्व हेतलोन से हमात दर्रा और तब, लगातार हसेरनोन तक जाती है। यह दमिश्क और हमात की सीमाओं के मध्य है। परिवार समूहों में से इस समूह की भूमि इन सीमाओं के पूर्व से पश्चिम को जाएगी। उत्तर से दक्षिण, इस क्षेत्र के परिवार समूह हैं, दान, आशेर, नप्ताली, मनश्शे, एप्रैम, रूबेन, यहूदा।

भूमि का विशेष भाग

8भूमि का अगला क्षेत्र विशेष उपयोग के लिये होगा।
यह भूमि यहूदा की भूमि के दक्षिण में है। यह क्षेत्र
पच्चीस हजार हाथ उत्तर से दक्षिण तक लम्बा है और
पूर्व से पश्चिम तक, यह उतना चौड़ा होगा जितना अन्य
परिवार समूहों का होगा। मन्दिर भूमि के इस विभाग
के बीच होगा। 9तुम इस भूमि को यहोवा को समर्पित
करोगे। यह पच्चीस हजार हाथ लम्बा और बीस हजार
हाथ चौड़ा होगा। 10भूमि का यह विशेष क्षेत्र याजकों
और लेवीवंशियों में बँटेगा।

याजक इस क्षेत्र का एक भाग पाएंगे। यह भूमि उत्तर
की ओर पच्चीस हजार हाथ लम्बी, पश्चिम की ओर
दस हजार हाथ चौड़ी, पूर्व की ओर दस हजार हाथ
चौड़ी और दक्षिण की ओर पच्चीस हजार हाथ लम्बी
होगी। भूमि के इस क्षेत्र के बीच में यहोवा का मन्दिर
होगा। 11यह भूमि सादोक के वंशजों के लिये है। ये
व्यक्ति मेरे पवित्र याजक होने के लिये चुने गए थे।
क्यों? क्योंकि इन्होंने तब भी मेरी सेवा करना जारी
रखा जब इस्राएल के अन्य लोगों ने मुझे छोड़ दिया।
सादोक के परिवार ने मुझे लेवी परिवार समूह के अन्य
लोगों की तरह नहीं छोड़ा। 12इस पवित्र भू–भाग का
विशेष हिस्सा विशेष रूप से इन याजकों का होगा। यह
लेवीवंशियों की भूमि से लगा हुआ होगा।

13"याजकों की भूमि से लगी भूमि को लेवीवंशी
अपने हिस्से के रूप में पाएंगे। यह पच्चीस हजार हाथ
लम्बी, दस हजार हाथ चौड़ी होगी। वे इस भूमि की पूरी
लम्बाई और चौड़ाई पच्चीस हजार हाथ लम्बी और बीस
हजार हाथ चौड़ी पाएंगे। 14लवीवंशी इस भूमि का कोई
भाग न तो बेचेंगे, न ही व्यापार करेंगे। वे इस भूमि का
कोई भी भाग बेचने का अधिकार नहीं रखते। वे देश
के इस भाग के टुकड़े नहीं कर सकते। क्यों? क्योंकि
यह भूमि यहोवा की है। यह अति विशेष है। यह भूमि
का सर्वोत्तम भाग है।

नगर सम्पत्ति के लिये हिस्से

15"भूमि का एक क्षेत्र पाँच हजार हाथ चौड़ा और
पच्चीस हजार हाथ लम्बा होगा जो याजकों और लेवीवंशियों
को दी गई भूमि से, अतिरिक्त होगा। यह भूमि नगर,
पशुओं की चरागाह और घर बनाने के लिये हो सकती
है। साधारण लोग इसका उपयोग कर सकते हैं। नगर
इसके बीच में होगा। 16नगर की नाप यह है: उत्तर की
ओर यह साढ़े चार हजार हाथ होगा। पूर्व की ओर यह
साढ़े चार हजार हाथ होगा। दक्षिण की ओर यह साढ़े
चार हजार हाथ होगा। पश्चिम की ओर यह साढ़े चार
हजार हाथ होगा। 17नगर की चरागाह होगी। ये चरागाहें
ढाई सौ हाथ उत्तर की ओर, ढाई सौ हाथ दक्षिण की
ओर होगी। वे ढाई सौ हाथ पूर्व की ओर तथा ढाई सौ
हाथ पश्चिम की ओर होगी। 18पवित्र क्षेत्र के सहारे जो
लम्बाई बचेगी, वह दस हजार हाथ पूर्व में और दस
हजार हाथ पश्चिम में होगी। यह भूमि पवित्र क्षेत्र के
बगल में होगी। यह भूमि नगर के मजदूरों के लिये अन्न
पैदा करेगी। 19नगर के मजदूर इसमें खेती करेंगे। मजदूर
इस्राएल के सभी परिवार समूहों में से होंगे।

20"यह भूमि का विशेष क्षेत्र वर्गाकार होगा। यह
पच्चीस हजार हाथ लम्बा और पच्चीस हजार हाथ चौड़ा
होगा। तुम इस क्षेत्र को विशेष कामों के लिये अलग
रखोगे। एक भाग याजकों के लिये है। एक भाग लेवीवंशियों
के लिये है और एक भाग नगर के लिये है।

21-22"इस विशेष भूमि का एक भाग देश के शासक
के लिये होगा। यह विशेष भूमि का क्षेत्र वर्गाकार है।
यह पच्चीस हजार हाथ लम्बा और पच्चीस हजार हाथ
चौड़ा है। इसका एक भाग याजकों के लिये, एक भाग
लेवीवंशियों के लिये और एक भाग मन्दिर के लिये है।
मन्दिर इस भूमि क्षेत्र के बीच में है। शेष भूमि देश के
शासक की है। शासक बिन्यामीन और यहूदा की भूमि
के बीच की भूमि पाएगा।

23-27"विशेष क्षेत्र के दक्षिण में उस परिवार समूह की
भूमि होगी जो यरदन नदी के पूर्व रहता था। हर परिवार
समूह उस भूमि का एक हिस्सा पाएगा जो पूर्वी सीमा से
भूमध्य सागर तक गई है। उत्तर से दक्षिण के ये परिवार
समूह हैं: बिन्यामीन, शिमोन, इस्साकार, जबूलून और गाद।

28"गाद की भूमि की दक्षिणी सीमा तामार से
मरीबोत–कादेश के नखलिस्तान तक जाएगी। तब मिस्र
के नाले से भूमध्य सागर तक पहुँचेगी 29और यही वह
भूमि है जिसे तुम इस्राएल के परिवार समूह में बाँटोगे।
वही हर एक परिवार समूह पाएगा।" मेरे स्वामी यहोवा
ने यह कहा!

नगर के फाटक

30"नगर के ये फाटक हैं। फाटकों का नाम इस्राएल
के परिवार समूह के नामों पर होंगे।

"उत्तर की ओर नगर साढ़े चार हजार हाथ लम्बा
होगा। 31उसमें तीन फाटक होंगे। रुबेन का फाटक,
यहूदा का फाटक और लेवी का फाटक।

32"पूर्व की ओर नगर साढ़े चार हजार हाथ लम्बा
होगा। उसमें तीन फाटक होंगे: यूसुफ का फाटक,
बिन्यामीन का फाटक और दान का फाटक।

33"दक्षिण की ओर नगर साढ़े चार हजार हाथ लम्बा
होगा। उसमें तीन फाटक होंगे: शिमोन का फाटक,
इस्साकार का फाटक और जबूलून का फाटक।

34"पश्चिम की ओर नगर साढ़े चार हजार हाथ
लम्बा होगा। इसमें तीन फाटक होंगे: गाद का फाटक,
आशेर का फाटक और नप्ताली का फाटक।

35"नगर के चारों ओर की दूरी अट्ठारह हजार हाथ
होगी। अब से आगे नगर का नाम होगा: यहोवा यहाँ है।

Bible League International and its Global Partners provide Scriptures for millions of people who still do not have the life-giving hope found in God's Word. Every purchase of an Easy-to-Read Translation™ enables the printing of a Bible for a person who needs God's Word somewhere in the world. To provide even more Scriptures for more people, please make a donation at www.bibleleague.org/donate or contact us at Bible League International, 1 Bible League Plaza, Crete, IL 60417, USA. Bible League International exists to develop and provide Easy-to-Read Bible translations and Scripture resources for churches and partners as they help people meet Jesus.

Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™)
© 1995 Bible League International

Maps, Illustrations © Bible League International

Additional materials © Bible League International

All rights reserved.

This copyrighted material may be quoted up to 1000 verses without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. This copyright notice must appear on the title or copyright page:

> Taken from the Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™) © 1995 Bible League International and used by permission.

When quotations from the ERV are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials (ERV) must appear at the end of each quotation. Requests for permission to use quotations or reprints in excess of 1000 verses or more than 50% of the work in which they are quoted, or other permission requests, must be directed to and approved in writing by Bible League International.

God's Word. Local Church. Global Strategy.™

Bible League International
1 Bible League Plaza
Crete, IL 60417, USA
Phone: 866–825–4636
Email: permissions@bibleleague.org
Web: www.bibleleague.org

B-HIN-89800: ISBN: 978-1-935189-80-0 **B-HIN-89992: ISBN: 978-1-935189-99-2**
B-HIN-07536: ISBN: 978-1-61870-753-6 **B-HIN-61738-POD: ISBN: 978-1-62826-173-8**

Free downloads: www.bibleleague.org/downloads